तक़्वियतुलईमान

लेखक

अल्लामा शाह मुहम्मद इसमाईल देहल्वी

रहमतुल्लाह अलैहि

अनुवादक

अब्दुल क़य्यूम मु० शफ़ी

5/1420 H

24

COOPERATIVE OFFICE FOR CALL AND GUIDANCE

तक्वियतुलईमान

लेखक

अल्लामा शाह मुहम्मद इसमाईल देहलवी

रहमतुल्लाह अलैहि

अनुवादक

अब्दुल कय्यूम मु० शफी

प्रकाशक

इदारतुल बुहूसिल इस्लामिआ, जामिआ सलफ़ीया

वाराणसी २२१०१०, (भारत)

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر
الدهلوي، الشاه محمد بن اسماعيل
تقوية الإيمان / ترجمة عبدالقيوم محمد شفيع. - الرياض.
١٢٤ ص ؛ ١٤,٥ X ٢١,٥ سم
ردمك: ٧-٥٧-٧٩٨-٩٩٦٠
النص باللغة الهندية
١- التوحيد. ٢- الإيمان (الإسلام)
أ - شفيع، عبدالقيوم محمد (مترجم)
ب- العنوان
ديوي ٤٠أ ٢٠/١٠٦٠

رقم الإيداع: ٢٠/١٠٦٠
ردمك: ٧-٥٧-٧٩٨-٩٩٦٠

COOPERATIVE OFFICE
FOR CALL AND GUIDANCE
IN AL- BATHA
UNDER THE SUPERVISION OF
MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS,
ENDOWMENTS, PROPAGATION AND GUIDANCE
PO. BOX:20824 RIYADH.11465
00966-1 4030251 / 4034517 / 4031587 / 4030142
FAX 4059387
Lecture hall. Tel + Fax: 00966- 1- 4083405
WWW. COCG. ORG

© All rights reserved for the Office
No part of this book may be used for publication without the written permission of the copyright holder, application for which should be addressed to the office

तक्वियतुल ईमान

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
प्राक्कथन	छ
ईमान के दो भाग हैं	४
पहला भाग :	
तौहीद तथा शिर्क के वर्णन में	७
शिर्क के कार्य	७
नबियों वलियों की अनुशंसा (सिफारिश)	९
शिर्क का अर्थ यह है कि	१३
शिर्क की किस्में	१५
इल्म (ज्ञान) में शिर्क करना	१५
अधिकार में शिर्क करना	१६
उपासना (इबादत) में शिर्क करना	१७
स्वभाव (आदत) में शिर्क करना	१९
पहला अध्याय :	
शिर्क से बचना	२३

विषय	पृष्ठ
शिर्क सबसे बड़ा अत्याचार है	२५
अम्बिया के भेजे जाने का मूल उद्देश्य तौहीद है	२६
अज़ल (अनादिकाल) में तौहीद का वचन लेना	२८
शिर्क प्रमाण नहीं बन सकता है	२९
एक गलत विचार का जवाब	३०
तौहीद ही बख़शिश का आधार है	३३

दूसरा अध्याय :

अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में शिर्क करने की बुराई के बयान में ३६

परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान अल्लाह के लिये ख़ास है	३७
एक आशंका का खण्डन	३८
पुकार केवल अल्लाह ही सुन सकता है	४२
लाभ एवं हानि का मालिक केवल अल्लाह है	४३
परोक्ष ज्ञान (इल्मे ग़ैब) से सम्बन्धित नबी स० का आदेश	४६
धार्मिक महापुरुषों पर एक आरोप और उसका खंडन	४७

विषय पृष्ठ

तीसरा अध्याय :

अल्लाह के अधिकारों में शिर्क करने की बुराई के बयान में ४९

अल्लाह के रसूल की ओर से एक विज्ञप्ति ५०

शफाअत की हकीकत ५४

समता का मार्ग ५८

भाग्य से बाहर कोई कार्य नहीं हो सकता ६२

चौथा अध्याय :

इबादत में शिर्क करने की बुराई के बयान में ६७

अल्लाह के अतिरिक्त किसी को पुकारना शिर्क है ६९

अल्लाह के शआइर (कर्मकाण्ड) का सम्मान ७०

इबादत में शिर्क करने से सम्बन्धित नबी स० का उपदेश ७७

पाँचवा अध्याय :

स्वभाव (आदात) में शिर्क करने की बुराई के बयान में ८५

संतान में भी शिर्क हो सकता है ८८

खेती बाड़ी में भी शिर्क हो सकता है ८९

विषय	पृष्ठ
चौपायों में भी शिर्क हो सकता है	९०
स्वभाव में शिर्क से सम्बन्धित कुछ हदीसें :	९३
फाल एवं शकुन की बुराई	९५
एक देहाती की उपदेश पूर्ण कहानी	९९
अच्छे नाम रखने अनिवार्य हैं	१०३
अल्लाह के अतिरिक्त किसी की सौगंध खानी शिर्क है	१०५
अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को उपहार देना	१०७
सजदा केवल अल्लाह का हक़ है और रसूल का सम्मान करना चाहिए	१०८
चित्रकारी से सम्बन्धित नबी करीम (स०) के आदेश	

—:o:—

प्राक्कथन

तक़्वियतुलईमान और उसके महान लेखक का मर्तबा मुझ जैसे मामूली व्यक्ति के परिचय एवं सराहना का मुहताज नहीं है। उपर्यूक्त पुस्तक और उसके वरिष्ठ लेखक, महानता के जिस उच्च स्थान पर विराजमान हैं, और अल्लाह ने उन्हें जो लोकप्रियता एवं असर प्रदान किया है, बड़े-बड़े विद्वान जीवनीकारों का मानना है कि वह उसके स्पष्टीकरण एव समीक्षा करने में असमर्थ हैं। पुस्तक और उसके लेखक पर डेढ़ शताब्दी से अधिक समय बीत चुका है, परन्तु उसके विरोधियों एवं शत्रुओं का क्रोध तथा उत्तर देने में उनकी अक्षमता प्रकट है।

शाह इसमाईल शहीद रहमतुल्लाह अलैहि को जिहाद के महान कार्य में व्यस्त होने के कारण केवल कुछ ही पुस्तकें लिखने का अवसर मिला। परन्तु उनकी पुस्तकों का प्रचलन एवं प्रभाव मोटी मोटी पुस्तकों के सैकड़ों वरन् हज़ारों पन्नों पर भारी हैं।

केवल तक़्वियतुलईमान के प्रचलन एवं प्रकाशन का अनुमान इस बयान से लगाइये कि अब तक इसकी पचास लाख से अधिक प्रतियां पाठकों के हाथों में पहुँच कर उनके जीवन में सुधार पैदा कर चुकी हैं।

पुस्तक में इसलामी अक़ाएद का व्याख्या एवं पुष्टि, पवित्र कुरआन एवं सुन्नत के अनुकरण की आवश्यकता का वर्णन ऐसे सौंदर्य एवं आकर्षक शैली में किया गया है कि सही बुद्धि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का उससे प्रभावित होना यक़ीनी है।

मजल्ला (पत्रिका) जामिआ सलफिया (सितम्बर १९८१ ई०) में जामिआ से शिक्षा प्राप्त और मदीना युनिवर्सिटी के वर्तमान विद्यार्थी शेख बदरुज्जमां नेपाली का एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है। उस लेख में आपने तक़्वियतुलईमान लिखने के कारणों, उसका परिचय, उसका प्रभाव, साहित्यिक महत्त्व, उसके विरोधियों एवं समर्थकों के लेखन तथा विभिन्न भाषाओं में पुस्तक के अनुवाद आदि विन्दुओं पर प्रकाश डाला है।

जैसा कि मालूम है अल्लामा इसमाईल शहीद ने तक़्वियतुलईमान को सर्वप्रथम अरबी भाषा में लिखा था यह पुस्तक दो अध्यायों में सम्मिलित थी एक का विषय तौहीद का बयान एवं शिर्क का खण्डन और दूसरे का सुन्नते नबवी का अनुकरण था। ।फिर लेखक मरहूम ने स्वयं ही प्रथम अध्याय का उर्दू में अनुवाद करके प्रकाशित किया, परन्तु दूसरे अध्याय का अनुवाद करने से पूर्व वह बालाकोट के मैदान में शहीद हो गये। फिर उनके एक शिष्य मौलाना मुहम्मद सुलतान खाँ ने दूसरे अध्याय का उर्दू में अनुवाद करके "तज़्कीरुलइख्वान" के नाम से प्रकाशित किया।

जामिआ सलफिया ने लेखन एवं अनुवाद का कार्य सर्वप्रथम अरबी भाषा में आरम्भ किया था। फिर जब आवश्यकता हुई तो कुछ पुस्तकों को अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया गया। इस समय पाठकों की एक बड़ी संख्या की माँग है कि इबादात, मामलात तथा अख़्लाक से सम्बन्धित इस्लाम की मौलिक शिक्षाओं को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया जाये। देश की कुछ संस्थायें इस कार्य को सम्पन्न कर रही हैं। जामिआ सलफिया भी अपनी बिसात के अनुसार इस प्रकार का साहित्य रचने का प्रयास कर रहा है। गत दिनों नमाज़ पर एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक "सलातुर्रसूल का हिन्दी रुपान्तर प्रकाशित किया गया है।

अब इस्लामी अक़ीदा पर लिखी हुई प्रसिद्ध एवं उपयोगी पुस्तक "तक़्वियतुलईमान" का हिन्दी रुपान्तर प्रस्तुत किया जा रहा है। इसे जामिआ सलफिया के एक फाज़िल अब्दुल क़य्यूम मुहम्मद शफी ने किया है। आपने जामिआ सलफिया तथा जामिआ इस्लामिया मदीना से शिक्षा प्राप्त की है इनके कई निबन्ध अरबी एवं उर्दू में प्रकाशित हो चुके हैं, आप हिन्दी भाषा के भी अच्छे जानकार हैं। उनका यह हिन्दी रुपान्तर प्रस्तुत करते हुये हम उनसे आशा करते हैं कि वह अपने लेखन कार्यों का क्रम इसी प्रकार जारी रखेंगे। अल्लाह तआला हम सब की सहायता करे और अच्छी बातों को जान कर उन पर आचरण करने की शक्ति प्रदान करे। आमीन

मुक़्तदा हसन अज़हरी
रेक्टर जामिआ सलफिया, वाराणसी
३० जुलाई १९९० ई०

—: ० :—

ईलाही ! तेरा हज़ार शुक्र, तूने हमको अनेक उपहार प्रदान किए हैं और तूने हमको अपना सत्य धर्म बताया, सीधा मार्ग चलाया, एकेश्वरवाद सिखाया, अपने प्रिय मुहम्मद ﷺ के समुदाय में से बनाया, उनका मार्ग सीखने की कामना दी, और तूने हमें उनका प्रेम दिया जो आप ﷺ के प्रतिनिधि है, दूसरों को आपका मार्ग बताते हैं और आपकी रीति पर चलाते हैं।

हे पालनहार तू अपने प्रिय मुहम्मद (ﷺ) पर और आपके परिवार जन पर, आपके साथियों पर तथा आपके सभी प्रतिनिधियों पर हज़ारों कल्याण प्रदान कर, एवं उसकी अज्ञापालन करने वालों पर कृपा कर, और हमको भी उनमें सम्मिलित कर ले, और उन्हीं के पथ पर जीते मरते बाक़ी रख, और उसका अनुसरण करने वालों में हमारी भी गणना कर ले !

आमीन (ए हमारे पालनहार हमारी इस विनय को स्वीकार कर ले)

ज्ञात होना चाहिए कि सभी मनुष्य ईश्वर के दास हैं, दास का कार्य है उपासना करना, जो दास उपासना न करे वह दास नहीं, और मूल उपासना, ईश्वर पर विश्वास (ईमान) का ठीक करना है, इसलिए कि जिसके विश्वास में कोई गड़बड़ हो, उसकी कोई उपासना स्वीकृत नहीं होगी, अथवा जिसका विश्वास ठीक है उसकी थोड़ी सी उपासना भी बहुत है।

अतः प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि ईश्वर पर अपना विश्वास (ईमान) ठीक करने में बड़ा प्रयत्न करे, तथा उसे प्राप्त करने को अनेक सभी कर्मों से महत्त्व समझे ।

इस समय लोग धर्म की बातों में अनेक राहों पर चल रहे हैं— कुछ लोग पुराने लोगों की रीतियों को अपनाते हैं कितने हैं जो महा पुरुषों की कहानियों को देखते हैं, और कुछ लोग मिया, मोलवीयों की ऐसी बातों को प्रमाण बनाते हैं जिनको उन्होंने अपनी बुद्धि स्फूर्ति से निकाला है, और कुछ लोग अपनी बुद्धि का अधिकार मानते हैं ।

इनमें सर्वोत्तम मार्ग यह है कि अल्लाह और रसूल की बातों को मूल माना जाय अथवा इसी को प्रमाण जानें इसके विरुद्ध अपनी अक्ल को हस्तक्षेप करने का अवसर न दें। महापुरुषों की जो कहानियां और मोलवियों की जो बातें अनुकूल हों उसे मान लें और जो उसके विरुद्ध हो उसको छोड़ दें, उसको प्रमाण न बनाए ।

एक गलत विचार का खन्डन—

साधारण वर्ग में जो यह प्रसिद्ध है कि अल्लाह और रसूल की बातों को समझना बहुत कठिन है, इसके लिये बहुत बड़ा ज्ञान चाहिये । हममें वह शक्ति कहाँ कि उनकी बातें समझ सकें उस मार्ग पर चलना महापुरुषों का काम है इसलिए हमारी क्या ताक़त कि उसके अनुसार चल सकें हमारे लिये यही बातें बहुत है (अर्थात जो कर रहे हैं)

परन्तु यह बात गलत है, क्योंकि अल्लाह (तआला) ने फरमाया कि कुरआन मजीद में बातें बहुत साफ एवं स्पष्ट हैं उनका समझना कोई कठिन नहीं सू० बक़रामे फरमाया—

(और निसंदेह हमने तुम्हारी तरफ खुली हुई बातें उतारी है, और उसका इनकार केवल वही लोग करते हैं जो बुरे हैं)

अर्थात् इन बातों का समझना कोई मुशकिल नहीं, परन्तु इनके अनुसार चलना मन पर भारी हैं इसलिए कि मन को किसी की अज्ञापालन बुरी लगती है, अतः जो लोग आज़ाद हैं वह इसका इनकार करते हैं।

अल्लाह और उसके रसूल की बातों को समझने के लिये महान विज्ञान नहीं चाहिये, इसलिए कि रसूल मूर्खों को मार्ग दिखाने, एवं जाहिलों को समझाने, अज्ञानों को ज्ञान सिखाने आए थे।

अतः अल्लाह तआला ने सूरा जुमः में फरमाया है—

(वह अल्लाह ऐसा है जिसने नादानों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन पर उसकी आयतें पढ़ता है और उनको पवित्र करता है, तथा उन्हें किताब और बुद्धि की बातें सिखाता है यद्यपि वह इससे पहले खुली गुमराही में थे)

अर्थात यह अल्लाह की बड़ी कृपा है कि उसने ऐसा रसूल भेजा कि जिसने निश्चिन्तों को सचेत किया, अपवित्रों को पवित्र किया, अज्ञानों को ज्ञानी बनाया, मूर्खों को बुद्धिमान बनाया और पथभ्रष्टों को सीधा मार्ग दिखाया।

इस आयत को सुनकर भी यदि कोई कहने लगे, कि रसूल की बातों को ज्ञानियों के अतिरिक्त कोई नहीं समझ सकता, एवं उनके मार्ग पर महापुरुषों के अतिरिक्त कोई नहीं चल सकता तो उसने इस आयत का इनकार किया।

अपितु यह कहना चाहिये कि अज्ञानी लोग उनकी बातें समझकर ज्ञानी हो जाते हैं एवं पथभ्रष्ट लोग उनके पथ पर चलकर महापुरुष बन जाते हैं।

इस बात का उदाहरण यह है कि जैसे एक बड़ा वैद्य हो, और

एक बड़ा रोगी, फिर कोई उस रोगी से कहे कि फलां वैद्य (हकीम) के पास जा, और उसकी दवा कर, इस पर वह रोगी यह जवाब दे कि उसके पास जाना, एवं उसकी दवा कराना बड़े-बड़े तनदुरुस्तों निरोगियों का काम है मुझसे क्योंकर हो सकता है मैं तो गम्भीर रोगी हूं—

तो ऐसा रोगी बड़ा मूर्ख होगा क्योंकि वह हकीम की हिकमत का इनकार करता है। इसलिये कि हकीम तो रोगियों ही के इलाज के लिये है, यदि वह निरोगियों को ही दवा दे और उन्हीं को उसकी दवा से लाभ हो और रोगियों को कोई लाभ न हो तो वह कैसा हकीम ? !

अर्थात् जो कोई बहुत ज़हीन है उसको अल्लाह और रसूल की बातें समझने की अधिक इच्छा होनी चाहिए अथवा जो बहुत पापी है उसको अल्लाह एवं रसूल के बताये हुए मार्ग पर चलने का अधिक प्रयास करना चाहिए, इस प्रकार हर खास व आम को चाहिए कि अल्लाह एवं रसूल की बातों की खोज करें और उसी को समझें उसी पर चलें अथवा उसी अनुसार अपना ईमान ठीक करें।

ईमान के दो भाग हैं :

ज्ञात होना चाहिए कि ईमान के दो भाग हैं अल्लाह को अल्लाह जानना और रसूल को रसूल समझना। खुदा को खुदा समझना इस प्रकार होता है कि किसी को उसका साझीदार (शरीक) न समझे, तथा रसूल को रसूल समझना इस प्रकार होता है कि उसके अतिरिक्त किसी का मार्ग न पकड़े, प्रथम बात को तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसके विपरीत को शिर्क (अनेकेश्वरवाद) कहते हैं, तथा दूसरी बात को सुन्नत की पैरवी और इसके विपरीत को बिदअत कहते हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि एकेश्वरवाद (तौहीद) एवं रसूल के पथ को पकड़े रखे तथा शिर्क (अल्लाह के साथ किसी को साझीदार समझने), एवं बिदअत (धर्म के नाम पर नए काम करने) से बहुत अधिक बचे, इसलिए कि यह दोनों चीजें अस्ल ईमान में बाधा डालती हैं, अन्य पाप इनसे पीछे ही हैं क्योंकि ए मूल कर्म में बाधा डालते हैं।

और होना यह चाहिए कि जो सज्जन तौहीद (अल्लाह को एक मानने) एवं रसूल के पथ पर चलने में महानिपुण हों तथा शिर्क विदअत से बहुत दूर हों तथा अन्य लोगों को भी उसके साथ रहने मे यही प्रभाव पड़ता हो तो ऐसे व्यक्ति को अपना नेता और गुरु समझें।

इसी कारण अनेक आयतें एवं हदीसें, जिनमें तौहीद और सुन्नत को अपनाने का और शिर्क व बिदअत की बुराई का वर्णन है, इस छोटी पुस्तक में इकट्ठा कर दिया है[1], तथा उन आयतों एवं हदीसों का अनुवाद साधारण हिंदी भाषा में किया गया है ताकि साधारण जन एवं विशेषजन, सभी प्रकार के लोग इससे समान लाभ उठा सकें, जिनको अल्लाह तआला क्षमता दे वे सीधे मार्ग पर आजाएँ, तथा बताने वाले (लेखक) के लिए मुक्ति का साधन हो (आमीन)।

---

1 - लेखक ने अपनी अस्ल किताब जो उर्दू में है—में अयतों और हदीसों को अरबी लिपी में लिखा है परन्तु हमने अनुवाद में केवल उनका अर्थ लिखा है। हिन्दी लिपि में आयतों और हदीसों को बिलकुल सही लिखना असम्भव है। "अनुवादक"

इस पुस्तिका का नाम "तक़वियतुल ईमान" रखा है और इसके दो भाग किए हैं, पहले भाग में तौहीद का वर्णन और शिर्क की बुराई है तथा दूसरे भाग में सुन्नत (रसूल के रीतियों) का अनुसरण करने एव बिदअत की बुराई का वर्णन है।

—: ० :—

पहला भाग

तौहीद तथा शिर्क के वर्णन में

सर्वप्रथम यह ज्ञात होना चाहिए कि शिर्क लोगों में बहुत फैल रहा है, तथा मूल तौहीद लुप्त हुआ जा रहा है किन्तु अधिक लोग तौहीद और शिर्क का फर्क़ नहीं जानते हैं और ईमान का दावा करते हैं हालांकि शिर्क में ग्रस्त होते हैं।

अतः पहले शिर्क व तौहीद का अर्थ समझना चाहिए ताकि कुरआन व हदीस से उनकी भलाई एवं बुराई का ज्ञान हो सके।

शिर्क के कार्य :

ज्ञात होना चाहिये कि पीरों पैगम्बो इमामों, शहीदों फरिश्तों तथा परियों को कठिन समय में उनको पुकारते हैं उनकी दुहाई देते हैं, उनका विनय मानते हैं, आवश्यकता की पूर्ति के लिये उनको भेंट चढ़ाते हैं, तथा संकट टालने के लिये अपने बेटों को उनकी ओर संबोधित करते हैं। कोई अपने बेटे का नाम अब्दुन्नबी रखता है, कोई अली बख़्श कोई हुसेनबख़्श कोई पीर बख़्श, कोई मदार बख़्श, कोई सालार बख़्श कोई गुलाम मुहयुद्दीन कोई गुलाम मुईनुदीन[1] और

1—इन सब नामों का अर्थ है कि जिनकी ओर उनका संबन्ध है उन्ही के दास हैं अथवा उन्हीं के दान प्रदान किये हुए हैं और यह चीज़ एक खुदा के मानने के विरुद्ध है क्योंकि सारा विश्व अल्लाह का दास है और सब कुछ उसी का प्रदान किया हुआ है। (अनुवादक)

उनको जीवित रहने के लिये कोई किसी के नाम की चोटी रखता है, कोई किसी के नाम की बद्धी पहनाता है, कोई किसी के नाम कपड़े पहनाता है, कोई किसी के नाम की बेड़ी डालता है, कोई किसी के नाम से जानवर भेंट चढ़ाता है कोई संकट में किसी की दोहाई देता हैं, तथा कोई अपनी बातचीत में किसी नाम की कसमें खाते हैं। सारांश यह कि जो कुछ हिन्दू अपनी मूर्तियों (बुतों) के साथ करते हैं, वही सब कुछ यह झूठे मुसलमान वलियों (महापुरुषों) नबियों, इमामों, शहीदों, फरिश्तों तथा परियों के साथ करते हैं और मुसलमान होने का दावा किये जाते हैं। सुबहानल्ला यह मुंह और यह दावा।

सच फरमाया अल्लाह तआलाने सूरह यूसुफ में—

(उनमें अधिकतर लोग जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं, वे शिर्क भी करते हैं)

अर्थात् अधिकतम लोग जो ईमान का दावा करते हैं वे शिर्क में ग्रस्त हैं 'फिर यदि उनसे कोई कहे कि तुम दावा ईमान का करते हो पर कार्य शिर्क का करते हो इस प्रकार यह दोनों राहें क्यों मिलाये देते हो ? तो इसका उत्तर यूं देते हैं—

"हम तो शिर्क नहीं करते हैं किन्तु अपना धर्म विश्वास (अक़ीदा) नबियों, वलियो क दरबार में ज़ाहिर करते हैं, मुशरिक जब होते कि उन नाबियों वलियों तथा पीरों, शहीदों को अल्लाह के बराबर समझते परन्तु हम ऐसा नहीं समझते, उनको हम अल्लाह ही का दास, और उसी का पैदा किया हुआ (मख़लूक़) समझते हैं, किन्तु उनमें अधिकार की यह ईश्वरीय शक्ति (जिसे हम मानते हैं) अल्लाह ने इनको प्रदान की है इस प्रकार ये लोग उसी की इच्छा से संसार में अपना अधिकार लागू करते हैं।

अर्थात् उनको पुकारना अल्लाह को पुकारना है, उनसे सहायता मांगनी, उसी से सहायता मांगनी है वे अल्लाह के प्यारे हैं जो चाहे सो करें वे अल्लाह के दरबार में हमारे लिए अनुशंसा (सिफारिश) करने वाले एवं वकील हैं उनके मिलने से खुदा मिलता है, उनको पुकारने से अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है, तथा जिस प्रकार हम उनको मानते हैं उसी समान हम अल्लाह से निकट होते हैं।''

अर्थात्—ये लोग इसी प्रकार की प्रलाप (खुराफ़ात) बकते हैं।

नबियों वलियों की अनुशंसा (सिफारिश)

इस प्रकार की बातों का कारण यह है कि लोगों ने खुदा एवं रसूल के आदेशों को छोड़कर अपनी बुद्धि को हस्तक्षेप का अवसर दिया, तथा झूठी कथाओं के पीछे पड़े, और गलत प्रकार की रस्मों को प्रमाण बनाया—किन्तु वही लोग यदि अल्लाह व रसूल के आदेशों की छानबीन कर लेते तो समझ लेते कि अल्लाह के रसूल के सामने भी काफिर लोग इसी प्रकार की बातें करते थे, परन्तु अल्लाह तआला ने उनकी एक न मानी, उन पर अपना क्रोध प्रकट किया तथा उनको झूठा साबित किया सू० यूनुस में अल्लाह तआला ने फरमाया है।

(और वे अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे लोगों की पूजा करते हैं जो उनको न हानि पहुंचा सकते न लाभ, वे कहते हैं कि यह लोग अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं, हे नबी आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात बता रहे हो जिसको वह आसमानों और ज़मीन में नहीं जानता है ? ! वह पवित्र, एवं निराला है उनसे, जिसको ये लोग शरीक बनाते हैं)

अर्थात् जिनको ये लोग पुकारते हैं उनको अल्लाह तआला ने कुछ (ईश्वरीय) शक्ति नहीं दी है न लाभ पहुँचाने की और न हानि करने की और जो ये लोग यह कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अनुशंसायी (सिफारिशी) हैं तो यह बात अल्लाह ने तो नहीं बताई है तो क्या तुम अल्लाह से अधिक ज्ञान रखते हो कि उसे ऐसी बात बता रहे हो कि जिसको वह नहीं जानता है, इस आयत से मालूम हुआ कि सम्पूर्ण आकाश एवं पृथ्वी में कोई किसी का ऐसा अनुशंसायी (सिफारिशी) नहीं है जिसको मान लीजिए अथवा पुकारिये तो कुछ लाभ या हानि हो सके, बल्कि अम्बिया एवं औलिया की अनुशंसा (सिफारिश) अल्लाह ही के अधिकार में है, उनके पुकारने अथवा न पुकारने से कुछ नहीं होता, और इससे यह भी ज्ञात हुआ कि यदि कोई किसी को अनुसंशा (सिफारिश) का अधिकारी समझ कर पूजे तो वह भी मुशरिक हो जाता है।

अल्लाह तआला ने सू० ज़ुमर में फरमाया है।

(और वह लोग जिन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को सहयोगी बना रखा है वे कहते हैं हम उनकी पूजा केवल इसलिए कर रहे हैं ताकि वे हमको अल्लाह से निकट कर दें, अल्लाह उनके बीच फैसला करेगा जिसमें वे झगड़ा करते हैं)

(अल्लाह तआला निसंदेह ऐसे लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता जो झूठे और बहुत अधिक कुफ़र करने वाले हैं)

अर्थात् जो सच्ची बात थी कि अल्लाह बन्दे की ओर सबसे अधिक निकट होता है, परन्तु उसको छोड़कर झूठी बात बनाई दूसरों को सहायक माना तथा अल्लाह की कृपा थी कि बिना किसी माध्यम के केवल अपनी दया से सबकी कामनायें पूरी करता है, एवं

सर्व संकट टाल देता है, किन्तु उसका हक़ न पहचाना एवं उसके आभारी न हुऐ, बल्कि यह बात अन्य ओर से चाहने लगे, फिर इस उलटी राह में अल्लाह की निकटता ढूंढ़ते हैं, परन्तु अल्लाह कभी उनको इस प्रकार मार्ग नहीं दिखाएगा तथा इस राह से कभी भी अल्लाह की निकटता नहीं प्राप्त कर सकेंगे, बल्कि जिस प्रकार इस पथ पर चलेंगे उसी प्रकार उससे दूर होते जाएँगे।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि जो कोई किसी को (मुक्ति के लिए) अपना सहायक (हेमायती) समझेगा यद्यपि यही जानकर कि इसकी पूजा से अल्लाह की निकटता मिलती है तो वह भी मुशरिक, झूठा एवं अल्लाह का कृतघ्न (नाशुक्रा) है।

अल्लाह तआला ने सू० मूमेनून में फरमाया है—

(कह दीजिए, कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, वह सहयोग देता है उसके विरुद्ध कोई सहयोग नहीं दे सकता ? यदि तुम जानते हो तो बताओ ? इसके उत्तर में वह यही कहेंगे कि अल्लाह के अधिकार में हैं, आप कह दीजिए फिर तुम लोग कहाँ सनकी बने जा रहें हो ?)

अर्थात, यदि काफिरों से पूछिये कि सारे जगत में किसका अधिकार है, तथा उसके मुक़ाबिल में कोई सहायक न खड़ा हो सके, तो वह भी इस प्रश्न के उत्तर में यही कहेंगे कि यह अल्लाह ही की महिमा है, फिर अन्य को मानना केवल भ्रम है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने इस जगत में किसी को भी ऐसी क्षमता (तसर्रूफ) की (ईश्वरीय) शक्ति नहीं प्रदान की है, तथा कोई किसी की हेमायत नहीं कर सकता।

और यह भी ज्ञात हुआ कि खुदा के रसूल के समय काफिर भी अपनी मूर्तियों (बुतों) को अल्लाह के समान नहीं जानते थे, बल्कि

उनको अल्लाह का पैदा किया हुआ और उसका दास समझते थे, तथा उनको उसके मुक़ाबिल की शक्ति साबित नहीं करते थे परन्तु यही उनका पुकारना विनय (मिन्नत) मानना भेंट चढ़ाना, तथा उनको अपना वकील एव अनुशंसायी (सिफारिशी) समझना, उनका शिर्क व कुफ्र था। अतः जो कोई किसी से यह व्योहार करे, यद्यपि उसको अल्लाह का बन्दा और मख़लूक़ ही समझे तो अबूजहल और वह, शिर्क में एक समान हैं।

शिर्क का अर्थ यह है कि :

यह समझना चाहिये कि शिर्क केवल इसी पर आधारित नहीं है कि किसी को अल्लाह के बराबर समझे और उसके मुक़ाबिल जाने बल्कि शिर्क का अर्थ यह है कि जो चीज़ें अल्लाह ने अपने लिये विशेष कर रखी हैं, तथा जिनको अपने बन्दों पर उपासना के लक्षण ठहराए हैं उन्हें किसी अन्य के लिये करना जैसे किसी के लिये सजदा करना, उसके नाम का जानवर करना, उसकी विनय (मन्नत) मानना, संकट में उसकी दोहाई देना, हर स्थान पर उसे प्रस्तुत एवं निरिक्षक (हजिर व नाजिर) समझना तथा उसके अन्दर अधिकार की (ईश्वरीय) शक्ति को साबित करना, इन प्रकार की बातों से शिर्क प्रमाणित हो जाता है। यद्यपि उसको अल्लाह से छोटा ही समझे, तथा उसे उसका पैदा किया हुआ एवं उसका दास ही क्यों न समझे।

इस बात में अम्बिया व औलिया में, जिन व शैतान में तथा भूत एवं परी में कोई अन्तर नहीं है।

अर्थात जिससे भी कोई, यह व्योहार करेगा वह मुशरिक हो जाएगा, अम्बिया औलिया से करे चाहे पीरों शहीदों से और चाहे भूत व परी से। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने जिस प्रकार

का क्रोध मूर्ति पूजने वालों पर प्रकट किया है वैसा ही यहूद व नसारा (जिविस और कृशचियन) पर, जबकि वे अम्बिया एवं औलिया (महापुरुषों) से यह व्योहार करते थे (न कि मूर्तियों से)।

सू० बराअत में फरमाया है—

(उन लोगों ने मोलवियों और दुरवेशों को, अल्लाह के अतिरिक्त पालनहार (रब) बना लिया तथा मरयम के पुत्र ईसा को भी। जबकि उन्हें आदेश यह दिया गया था कि केवल एक ही मालिक की पूजा करें उसके अतिरिक्त कोई मालिक नहीं है। वह उनके शरीक ठेहराने से निराला है।)

अर्थात वे अल्लाह को बड़ा मालिक समझते हैं किन्तु मोलवियों एवं दुरवेशों को उससे छोटे अन्य मालिक ठेहराते हैं जबकि उनको इसका आदेश नहीं दिया गया है अतः इससे उन पर शिर्क प्रमाणित होता है—अल्लाह तो निराला है उसका शरीक कोई नहीं हो सकता न छोटा न बड़ा, छोटे बड़े सब उसके असमर्थ दास हैं तथा इस विषय में सब एक भाँति हैं जैसा कि सू० मरयम में फरमाया है—

(अकाश एवं पृथ्वी पर जितने भी लोग हैं सभी अल्लाह के सामने दास बन कर आने वाले हैं। और इसमें कोई संदेह नहीं कि उसने सबको अपने क़ाबू में कर रखा है तथा एक-एक करके उनको गिन रखा है, और उनमें से प्रत्येक को क़यामत के दिन उसके सामने अकेला आना होगा।)

अर्थात कोई भी फरिशता अथवा मनुष्य दासता से अधिक पद नहीं रखता।

और अल्लाह के अधिकार के सामने वे विनीत (आजिज़) हैं कोई बल नहीं रखते, और अल्लाह तआला प्रत्येक में स्वयं अपना अधिकार जमाता है, किसी को किसी के अधिकार में नहीं देता, तथा

प्रत्येक को अपने कर्म विषय में उसके समक्ष अकेला हाज़िर होना है, कोई किसी का वकील अथवा सहायक नहीं बनने वाला है।

कुरआन मजीद में इस विषय की ओर भी सैकड़ो आयतें हैं किन्तु जिन्होंने इन्हीं दो चार आयतो के अर्थ समझ लिये वे भी शिर्क एव तौहीद के अर्थ से सचेत हो जाएँगे।

शिर्क की किस्में :

सर्वप्रथम इस बात की पुष्टि हो जानी चाहिए कि अल्लाह तआला ने कौन-कौन सी चीजें अपने लिये इस प्रकार विशेष कर रखी हैं कि उनमें किसी को साझी न ठहराया जाय। तो ऐसी बातें बहुत अधिक है परन्तु कुछ बातों का वर्णन तथा कुरआन हदीस से उनको साबित कर देना आवश्यक है ताकि लोग उसी अन्दाज पर बाक़ी बातें स्वयं ही समझ लें।

इल्म (ज्ञान) में शिर्क करना :

पहली बात तो यह है कि हर जगह प्रस्तुत रहना एवं देखभाल करना, तथा बराबर प्रत्येक चीज़ की खबर हर समय रखना, दूर हो अथवा निकट, छुपी हो या स्पष्ट हो, अंधियारे में हो या उजाले में हो, आकाश में हो या पृथ्वी पर, पहाड़ की चोटी पर हो या समुद्र तह में, यह अल्लाह ही की महिमा है किसी और की महिमा नहीं।

अतः यदि कोई उठते बैठते किसी दूसरे का नाम लिया करे दूर व क़रीब से उसे पुकारे, संकट में उसी की दोहाई दे, शत्रु पर उसका नाम लेकर आक्रमण करे उसके नाम का खत्म पढ़े अथवा शुग्ल करे, उसके स्वरूप की कल्पना करे, और यह समझे कि जब मैं उसका नाम लेता हूँ—ज़बान या दिल से या उसके रूप अथवा समाधि की कल्पना करता हूँ तो वहीं उसको इसकी सूचना हो जाती है, तथा उससे मेरी

कोई बात छुपी नहीं रह सकती तथा मेरे ऊपर जो स्थितियाँ गुज़रती हैं, जैसे बीमारी स्वास्थ्य, खुशहाली बदहाली, मरना, जीना दुःख सुख हर समय सबकी उसे खबर है, जो बात मेरे मुँह से निकलती है वह सब सुन लेता है। तथा जो कल्पना एवं भ्रम मेरे हृदय में आता है वह सबसे सचेत है, इन बातों पर विश्वास रखने से आदमी मुशरिक (बहुईश्वरीय विश्वासी) हो जाता है, तथा इस प्रकार की बातें शिर्क हैं, इसको ज्ञान (इल्म) में शिर्क करना कहते हैं, अर्थात अल्लाह तआला के ज्ञान के समान किसी अन्य के लिये साबित करना।

इस प्रकार के विश्वास (अक़ीदा) से आदमी अवश्य मुशरिक हो जाता है चाहे यह विश्वास नबियों और वलियों से रखे चाहे पीर एवं शहीद से चाहे इमाम अथवा इमामज़ादा से और चाहे भूत एवं परी से फिर चाहे इसको यूं समझे कि यह सब बातें उनके अन्दर स्वयं पाई जाती हैं अथवा अल्लाह तआला के प्रदान करने से, हर तरह से शिर्क साबित होता है।

अधिकार में शिर्क करना :

दूसरी बात यह है कि सारे जगत में इच्छानुसार अधिकार जमाना, अपना आदेश जारी करना अपनी इच्छा से मारना, जिलाना रोज़ी में बिस्तार एवं कमी करनी निरोगी एवं रोगी बनाना विजयी एवं पराजित बनाना प्रतिष्ठा एवं पतन देना, आशय (मुराद) पूर्ण करना आवश्यकता की पूर्ति करना, संकट टाल देना, कष्ट समय में सहायता करना, तथा कठिन समय पर सहायता पहुँचाना।

यह सब अल्लाह की महिमा (शान) है, किसी नबी, वली, पीर शहीद तथा भूत एव परी की शान नहीं, यदि कोई किसी के लिये इस प्रकार की शक्ति साबित करे और उससे अपनी मुरादें (आशाय)

मांगे और इसी आशानुसार भेंट, उपहार चढ़ाए उसकी मन्नतें माने, संकट में उसे पुकारे तो वह मुशरिक हो जाता है और इसको अल्लाह के अधिकार में शिर्क करना कहते हैं अर्थात अल्लाह के समान किसी के लिये अधिकार का समझना ही शिर्क है।

चाहे इसे यूं समझें कि यह शक्ति उनके अन्दर स्वयं पायी जाती है, अथवा यह समझें कि अल्लाह तआला ने उन्हें यह शक्ति प्रदान की है। हर प्रकार से शिर्क साबित होता है।

उपासना (इबादत) में शिर्क करना :

तीसरी बात यह है कि कुछ सम्मान के काम अल्लाह ने अपने लिये विशेष कर रखे हैं जिनको उपासना (इबादत) कहते हैं। उदाहरण के लिये सजदा करना (माथा जमीन से टेकना) रूकू करना (सिर को झुकाना) हाथ जोड़कर खड़े होना, उसके नाम पर दौलत खर्च करना उसके नाम का व्रत रखना और उसके घर की ओर दूर-दूर से निश्चय करके यात्रा करना, और ऐसा रूप धारण करके चलना कि प्रत्येक व्यक्ति को पता चल जाय कि यह लोग [पृ० ४८] उस घर के दर्शन को जा रहे हैं और वहां उस मालिक का नाम पुकारना, और फुजूल बातों और शिकार से बचना और उसी अवस्था में जाकर उसके घर की परिक्रमा (तवाफ़) करना और घर की ओर सजदा इसकी तरफ जानवर ले जाना और वहां मन्नतें माननी उस पर चादर चढ़ाना उसकी चौखट के आगे खड़े होकर दुआ मांगनी तथा विनय करना, दीन एवं दुनिया की मुरादें और एक विशेष पत्थर को बोसा देना और उसकी दीवार से लगाकर अपना मुंह और छाती मलना और उसका परदा पकड़ कर दुआ करना उसके आस पास रोशनी करना, उसका मुजाविर

(सेवक) बनकर उसकी सेवा में मशगूल रहना जैसे झाड़ू देना, रोशनी करना फर्श बिछाना पानी पिलाना, वज़ू एव ग़ुस्ल (स्नान) हेतु लोगों के लिए सामान ठीक करना और उसके कुएं का पानी पवित्र समझ कर पीना बदन पर डालना आपस में बाँटना, अन्य लोगों के लिये ले जाना विदा होते समय उलटे पाँव चलना, और उसके आस पास के जंगल का अदब करना अर्थात वहाँ शिकार न करना वृक्ष न काटना घास न उखाड़ना, पशुओं को न चराना।

यह सारे काम अल्लाह ने अपनी इबादत (उपासना) के लिये अपने बन्दों को बताए हैं अतः जो कोई किसी पीर व पैगम्बर को अथवा भूत व परी को अथवा किसी की सच्ची या झूठी समाधि (क़बर) को या किसी के थान को या किसी के चिल्ले को या किसी के मकान को या किसी के प्रसाद को या निशान को या ताबूत को सजदा करे या रूकू करे या उसके नाम का रोज़ा रखे या हाथ बाँध कर खड़ा होवे या जानवर चढ़ावे या ऐसे मकानों में [पृ० ४९] दूर दूर से निश्चय करके जाय या वहाँ रोशनी करे परदा डाले चादर चढ़ाए उनके नाम की छड़ी खड़ी करे विदा होते समय उलटे पाँव चले उनकी समाधि (क़बर) को बोसा दे, हाथ जोड़कर विन्ती करे। मुराद माँगे सेवक (मुजाविर) बनकर बैठ रहे वहाँ के आस पास के जंगल का अदब करे और इस प्रकार की बातें करे तो उस पर शिर्क साबित होता है। तथा इसको इबादत (उपासना) में शिर्क करना कहते है।

अर्थात अल्लाह के समान किसी का सम्मान करना।

चाहे यह समझे कि ये स्वयं ही इस सम्मान के योग्य हैं अथवा यह समझे कि इस प्रकार का सम्मान करने से अल्लाह तआला

प्रसन्न होता है तथा उस सम्मान की बरकत (सम्पन्नता) से अल्लाह तआला मुशकिलें दूर कर देता है। हर प्रकार से शिर्क साबित होता है।

स्वभाव (आदत) में शिर्क करना :

चौथी बात यह है कि अल्लाह ने अपने बन्दों को सिखाया है कि अपने दुनिया के कामों में अल्लाह को याद रखें तथा उसका सम्मान करते रहें ताकि ईमान भी ठीक रहे और कामों में बरकत भी हो, जैसे आड़े काम पर अल्लाह की नज़र (भेंट) माननी, संकट में उसे पुकारना, प्रत्येक कार्य उसके नाम से प्रारम्भ करना, और जब संतान (औलाद) हो तो उसके शुक्र (धन्यवाद) में जानवर ज़ब्ह (बलिदान) करना तथा संतान (औलाद) का नाम अब्दुल्लाह, अब्दुर्रहमान, खुदा बख्श, अल्लाह दिया, अमतुल्लाह, रखना।

[पृ० ५०] खेत अथवा बागीचे में से थोड़ा बहुत उसके नाम से विशेष करना, धन और पशुओं में कुछ उसकी भेट के लिये खास रखना, उसके नाम से जो जानवर उसके घर की ओर ले जाएं उनका आदर करना अर्थात न उन पर सवार होना न लादना, तथा अपने खाने पीने पहनने में उसके आदेशानुसार चलना अर्थात जिस चीज़ के प्रयोग करने का आदेश दिया है उसे प्रयोग करना और जिस चीज से मना किया है उससे दूर रहना। तथा बुराई भलाई जो दुनिया में प्रकट होती है जैसे, अकाल विशालता, स्वास्थ्य, रोग, विजय एवं पराजय प्रतिष्ठा एवं पतन तथा दुःख सुख ये सब उसी के अधिकार में समझना, और यदि किसी काम में अपने इरादे को बयान करना हो तो पहले उसके इरादे को बयान कर देना जैसे यूं कहना कि यदि अल्लाह चाहेगा तो हम फलां काम करेंगे और उसके नाम को ऐसे

आदर से लेना जिससे उसका मालिक होना और स्वयं दास (बन्दा) होना प्रकट हो जैसे यूं कहना हमारा रब, हमारा मालिक अथवा हमारा खालिक और जब किसी बात में सौगंध (क़सम) लेना हो तो उसी के नाम से सौगंध ली जाय, क्योंकि इस प्रकार की चीज़ें अल्लाह ने अपने सम्मान हेतु बताई हैं अतः जो कोई नबियों, वलियों, इमामों शहीदों तथा भूत एवं परी का इस प्रकार का सम्मान करे तो इससे शिर्क साबित होता है।

उदाहरण के लिये आड़े काम पर उनकी नज़र (भेंट) माने सकट में उनको पुकारे बिस्मिल्लाह की जगह उनका नाम ले, जब औलाद हो उनकी नज़र व नियाज़ करे अपनी औलाद का नाम अब्दुन्नबी इमाम बख़्श तथा पीर बख़्श[1], रखे खेत और बाग में उनका भाग लगाये, जो खेती बाड़ी से आमदनी हो उसमें से पहले उनकी नियाज़ करे [पृ० ५१] फिर अपने काम में लाए, धन, रेवड़ में उनके नाम के पशु खास करे और फिर उन जानवरों का आदर करे

1—इन सब नामों के नाजायज़ होने का कारण यह है कि यह सब नाम जिससे सम्बन्ध हैं उनके दास होने अथवा उन्हीं के प्रदान किये होने को प्रकट करते हैं जैसे अब्दुन्नबी का अर्थ है नबी का बन्दा, इमाम बख़्श का अर्थ है इमाम का प्रदान किया हुआ यह चीज़ तौहीद के खिलाफ है क्योंकि सारी दुनिया अल्लाह के बन्दे तथा उसी के प्रदान किये हुए हैं नबी और वली भी।

(अनुवादक)

पानी और दाने पर से यहाँ तक कि लकड़ी पत्थर से न मारे, खाने पीने पहनने में रीतियों को प्रमाण बनाए जैसे यह कहे कि फलाने लोगों को चाहिये कि फलाना खाना न खाएँ, फलाना कपड़ा न पहनें, हज़रत बीबी की सनहक (पियाला) मर्द न खाएँ, लौंडी न खाए तथा जिस औरत ने दूसरा विवाह किया हो वह न खाये, शाह अब्दुल हक़ का तोशा हुक्का पीने वाला न खाए। तथा ससार में जो बुराई भलाई के कार्य होते हैं उन्हें उनकी ओर संबोधित करना, जैसे यह कहना कि फलाँ उनकी फटकार में आकर दीवाना हो गया, फलाने के ऊपर अपना क्रोध प्रकट किया तो निर्धन हो गया और फलाने को प्रदान किया तो उसे विजय एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई, और अकाल फलाने सितारे के कारण पड़ा, अथवा यह कहना कि फलाना काम इसलिये नहीं पूरा हुआ कि उसे फलाने दिन या फलाने समय प्रारम्भ किया था, अथवा यह कहना कि अल्लाह व रसूल चाहेंगे तो आऊँगा या पीर चाहेगा तो यह बात हो जायेगी, अथवा उसके लिये यूँ बोले—या माबूद ! दाता, बेपरवाहे खुदाबंद ! खुदायगान, मालिकुल मुल्क, शहनशाह, अथवा जब सौगंध लेने का अवसर आए तो नबी, अली अथवा इमाम एवं पीर की या उनकी क़बरों (समाधि) की सौग़ध ले।

इस प्रकार की तमाम बातों से शिर्क साबित होता है और इसे स्वभाव में शिर्क करना कहते हैं—अर्थात् अपने स्वभाव (आदात) से कामों से जो सम्मान अल्लाह का होना चाहिये वह अन्य के लिये। पीछे लिखे हुए चारों प्रकार के शिर्क का स्पष्ट विवरण कुरआन एवं

हदीस में आया है ।

[पृ० ५२] अतः इस भाग को पांच अध्याय में बांट दिया है—

पहला अध्याय : शिर्क की बुराई एवं तौहीद की अच्छाई के वर्णन में ।

दूसरा अध्याय : अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में शिर्क करने के वर्णन में ।

तीसरा अध्याय : अल्लाह तआला के अधिकारों में शिर्क करने के वर्णन में ।

चौथा अध्याय : इबादत (उपासना) में शिर्क करने के वर्णन में ।

तथा पांचवा अध्याय : स्वभाव में शिर्क करने के वर्णन में है ।

—:o:—

पहला अध्याय

शिर्क से बचना

इस अध्याय में संक्षिप्त रूप से शिर्क की बुराई का उल्लेख है।

अल्लाह तआला ने सू० निसा में फरमाया—

("अवश्य अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किए जाने को क्षमा नहीं करेगा, और इसके अतिरिक्त जो चाहेगा अथवा जिसके लिये चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह का शरीक (साझी) ठहराया तो वह (सीधे मार्ग से) बहुत दूर भटक कर चला गया")

अर्थात् अल्लाह का मार्ग भूलना ऐसे भी होता है कि हलाल (अर्जित) एवं हराम (वर्जित) में भेद न करे चोरी बदकारी में ग्रस्त हो जाय, नमाज़ रोज़ा छोड़ दे। जोरू बच्चों का हक़ बरबाद करे और माता पिता का आदर न करे, परन्तु जो शिर्क में पड़ा वह सबसे अधिक भूला। इसलिये कि वह ऐसे पाप में ग्रस्त हो गया कि अल्लाह तआला उसको कभी नहीं क्षमा करेगा, अन्य सभी गुनहों को शायद अल्लाह तआला बख़्श भी दे।

इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि शिर्क को क्षमा नहीं किया जाएगा उसकी जो सज़ा निश्चित है अवश्य मिलेगी फिर जो पहले दरजे (उच्च श्रेणी) का शिर्क है जिससे कि आदमी काफिर हो जाता है तो उसकी यही सज़ा है कि वह सदैव नर्क (दोज़ख) में रहेगा, न उससे कभी बाहर निकलेगा और न उसमें कभी आराम ही पावेगा। और जो उससे नीची श्रेणी का शिर्क है उनकी जो सज़ा अल्लाह के यहाँ निश्चित है वह पावेगा। और बाक़ी जो अन्य पाप हैं उनकी सज़ा अल्लाह के यहाँ निश्चित हैं, वे अल्लाह की इच्छा

पर निर्भर है चाहे सज़ा दे और चाहे माफ कर दे तथा यह भी ज्ञात हुआ कि शिर्क से बड़ा कोई पाप नहीं है।

इसका उदाहरण यह है कि बादशाह की प्रजा जितना भी दोष करे, चोरी डकैती, चौकी पहरे के समय सो जाना, दरबार के समय को टाल जाना लड़ाई के मैदान से टल जाना, सरकार के पैसे पहुँचाने में कोताही करना तथा इस प्रकार के अन्य काम इन सब कोताहियों के दंड (सज़ा) बादशाह के यहाँ निश्चित हैं परन्तु चाहे तो पकड़े और चाहे तो माफ कर दे, किन्तु एक दोष इस प्रकार का है कि जिससे विद्राह प्रकट होता है, जैसे (बादशाह के होते हुए) किसी अमीर, वज़ीर, चौधरी, कानून गो (प्रधान लेखपाल) अथवा चोहड़े चमार को बादशाह बना दे या उसके [पृ० ५४] लिये सिंहासन एवं मुकुट (तख्त व ताज) तैयार करे या उसके लिये जिल्ले सुबहानी[1] बोले बादशाह की तरह मोजरा करे। अथवा उसके लिये उत्सव (जश्न) का एक दिन ठेहराए और बादशाह की तरह नज़र देवे। यह दोष सारे दोषों से बड़ा है। इसका निश्चित दंड (सज़ा) उसे अवश्य पहुँचना चाहिये और जो बादशाह इस दोष से अचेतना (ग़फलत) प्रकट करे और ऐसे लोगों को सज़ा न दे उसकी बादशाहत में कोताही पाई जाती है। इसी कारण बुद्धिमान लोग ऐसे बादशाह को बेग़ैरत कहते हैं।

अतः उस स्वाभिमानी मालिकुल मुल्क शाहनशाह (राजाओं के राजा) से डरना चाहिए कि जो प्रथम श्रेणी की शक्ति रखता है और उसी प्रकार की ग़ैरत (स्वाभिमान) फिर वह शिर्क करने वालों से क्योंकर गफलत करेगा और किस तरह उनको उनकी

1—अगले ज़माने में लोग बादशाह को जिल्ले सुबहानी (यानी अल्लाह का साया) बोला करते थे उसी इस्तलाह की तरफ इशारह है। (राज़)

सज़ा नहीं देगा ? अल्लाह तआला सब मुसलमानों पर कृपा करे और उनको शिर्क की आफत से बचा ले ।

शिर्क सबसे बड़ा अत्याचार है :

(अल्लाह तआला : ने सू० लुक़मान में फरमाया है: और लुक़मान ने अपने बेटे से कहा, जब वे उसको नसीहत कर रहे थे, कि ए मेरे बेटे तुम अल्लाह का शरीक (साझी) मत ठेहराना बिना संदेह शिर्क करना बहुत बड़ा अत्याचार है ।)

अर्थात् अल्लाह तआला ने लुकमान को बुद्धिमानी प्रदान की थी अतः उन्होंने उससे समझा [पृ० ५५] कि अत्याचार तथा अन्याय यही है कि किसी का हक़ किसी अन्य को पकड़ा देना, और जिसने अल्लाह का हक़ उसकी मख़लूक को दे दिया तो बड़े से बड़े का हक़ लेकर हीन से हीन को दे दिया जैसे बादशाह का ताज एक चमार के सर पर रख दीजिये इससे बड़ा अन्याय क्या होगा ? और यह अवश्य जान लेना चाहिये कि हर मख़लूक (प्राणी) बड़ा हो या छोटा वह अल्लाह के ज्ञान (महिमा) के आगे चमार से भी हीन है[1] !

इस आयत से ज्ञात हुआ कि जिस प्रकार शरीअत की राह से यह मालूम होता है कि शिर्क सबसे बड़ा गुनाह है इसी प्रकार अक़ल की राह से भी यही मालूम होता है कि शिर्क सब दोषों से बड़ा दोष है । और यही सच है इसलिए कि आदमी में बड़े से बड़ा दोष यही है कि अपने से बड़ों की बेअदबी करे, और अल्लाह से बड़ा कोई नहीं, शिर्क उसी की बेअदबी है ।

अम्बिया के भेजे जाने का मूल उद्देश्य तौहीद है :

सूरा अम्बिया में अल्लाह तआला ने फरमाया

(और हमने तुझसे पहले कोई भी रसूल भेजा तो उसको यही आदेश दिया निसंदेह बात यूं है कि मेरे अतिरिक्त कोई मानने के योग्य नहीं अतः मेरी उपासना करो।)

अर्थात् जितने पैगम्बर आए अल्लाह की ओर से यही आदेश लाए कि अल्लाह [पृ० ५६] को मानिए और उसके अतिरिक्त किसी को न मानिये।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि शिर्क से मनाही और तौहीद का आदेश सभी शरीअतों में है अतः यही मुक्ति का मार्ग है अन्य सभी राहें गलत हैं।

हदीस में आया है, कि रसूलुल्लाह स० ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाते हैं कि मैं साझियों से बड़ा बे परवाह हूँ जो कोई काम करे फिर उसमें मेरे साथ किसी अन्य को साझी कर दे तो मैं उसको और उसके साझे को छोड़ देता हूँ। तथा मैं उससे अप्रसन्न हूँ[1]।

अर्थात जिस प्रकार अन्य लोग अपनी सम्मिलित चीजें आपस में बाँट लेते हैं तो मैं ऐसा नहीं करता क्योंकि मैं बे परवाह हूँ। बल्कि जो कोई, किसी प्रकार का काम मेरे लिये करे और अन्य को उसमें

1—यह हदीस मिश्कात के बाबुलरिया में है इमाम मुस्लिम की रिवायत है रावी अबूहोरैरा हैं और यह हदीस कुदसी कहलाती है। इसलिए कि इसे अल्लाह के रसूल ने अल्लाह के वास्ते से बयान की है। (अनुवादक)

शरीक कर ले तो मैं अपना हिस्सा भी नहीं लेता बल्कि सभी को छोड़ देता हूँ और उससे अप्रसन्न हो जाता हूँ।

इस हदीस से यह भी ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति एक काम अल्लाह के लिए करे फिर वही काम किसी अन्य के लिये भी करे तो उसपर शिर्क साबित होता है।

और यह भी ज्ञात हुआ [पृ० ५७] कि शिर्क करने वाला अल्लाह की जो इबादत करे वह भी अल्लाह के यहाँ मक़बूल (स्वीकृत) नहीं हैं बल्कि अल्लाह उससे बेज़ार (अप्रसन्न) है।

अज़ल (अनादिकाल) में तौहीद का वचन लेना :

मिशकात बाबुल ईमान बिलक़द्र में लिखा है कि इमाम अहमद ने रेवायत किया है कि ओबई-इब्ने-काब ने अल्लाह तआला के इस कलाम[1] (واذ أخذ ربك من بنى آدم) की तफसीर (व्याख्या) में फरमाया कि अल्लाह तआला ने आदम की औलाद को इकट्ठी की फिर उनके जोड़े लगाए फिर उनके रूप बनाए फिर उनको बोलने की शक्ति दी तो वे बोलने लगे फिर उनसे प्रतिज्ञा एवं वचन लिया तथा उन्हीं से उनके ऊपर यह क़रार लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब (स्वामी) नहीं हूं ? तो वे बोल उठे हाँ (अवश्य आप हमारे रब (स्वामी) हैं।

फिर अल्लाह तआला ने फरमाया तुम्हारे ऊपर, सातों आसमानों तथा सातों जमीनों और तुम्हारे बाप आदम को, गवाह बनाता हूँ ताकि तुम क़यामत के दिन यह न कहो कि हमने यह नहीं जाना था—तो जान लो कि [पृ० ५८] बात सच्ची यह है कि मेरे

1—यह आयत कुरआनमजीद में सू० आराफ की (१७२)वीं आयत है।

साथ किसी को साझी मत ठेहराओ, अवश्य मैं तुम लोगों की ओर अपने रसूलों को भेजता रहूँगा जो मेरा वचन तथा मेरी प्रतिज्ञा तुमको याद दिलाते रहेंगे और मैं तुम्हारी ओर अपनी किताबें भी उतारूँगा। इसपर सब लोगों ने कहा कि हम गवाह हैं कि तू हमारा रब है और हमारा हाकिम है तेरे अतिरिक्त हमारा कोई रब नहीं और न ही तेरे अतिरिक्त हमारा कोई हाकिम है।[2]

अर्थात अल्लाह तआला ने सू० अरफात में फरमाया है (जिसका अनुवाद यह है) 'और जब तेरे रब ने आदम नबी की पीठ से उनकी औलाद को निकाला और उनसे स्वयं उन्हीं पर वचन लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ ? बोले क्यों नहीं (अवश्य तू हमारा रब है) और हमने इसे अपने ऊपर स्वीकार किया। और हमने ऐसा उनके साथ इसलिये किया ताकि कयामत के दिन तुम कहीं यह न कहने लगो कि हम इस बात से गाफिल थे. या यह न कहने लगो कि हम से पहले हमारे बाप दादों ने शिर्क किया था और उनके पीछे थे तो क्या तू उनके झूठे काम के बदले हमें बरबाद कर देगा ?'

यह अनुवाद कलामुल्लाह की आयत का है। इसी की तफसीर (व्याख्या) में अबई-इब्ने-काब ने फरमाया कि।

शिर्क प्रमाण नहीं बन सकता है :

अल्लाह तआला ने आदम की सारी औलाद को इकट्ठा किया और फिर उनक अलग-अलग अनुरूप (मिस्लें) बनाए जैसे पैगम्बरों के अलग अनुरूप (मिस्ल) और अवलिया के अलग, शहीदों के अलग, नेकों के अलग, आदेश (हुक्म) का पालन करने वालों के

2—यहाँ पर हदीस का अनुवाद समाप्त हुआ। इस हदीस को इमाम अहमद ने अपनी मुसनद में जिक्र किया है। देखिए मुसनद अहमद ( )

अलग तथा बुराई करने वालों के अलग अनुरूप बनाए। इसी प्रकार काफिरों के अनुरूप बनाए जैसे यहूद, नसारा (किरिशचियन) मजूस, हिन्दू आदि के फिर उन सब की सूरतें (रूप) बनाईं जिस प्रकार दुनिया में बनाना मंजूर था। उसी प्रकार के रूप प्रत्येक को प्रदान किया। किसी को सुन्दर किसी को कुरूप किसी को बहिरा किसी को गूंगा किसी को काना किसी को अंधा आदि फिर उनको बोलने की ताक़त दी फिर उन सबसे अल्लाह तआला ने यूं फरमाया—

क्या मैं तुम्मारा रब नहीं हूँ ? सबने बचन दिया कि तू हमारा रब है। फिर उनसे यह प्रतिज्ञा ली कि मेरे अतिरिक्त किसी को हाकिम एव मालिक न जानना तथा किसी को मेरे अतिरिक्त न मानना। इस तरह सब ने इसका वचन दिया और इकरार किया। और अल्लाह तआला ने इस बात पर आसमान और जमीन को गवाह बनाया और यह फरमाया कि इस वचन को याद दिलाने के लिये पैग़म्बर आएँगे किताबें लाएँगें। इस प्रकार सबने अलग-अलग अल्लाह की तौहीद (उसके एक होने) का इकरार किया और शिर्क का इनकार किया।

अतः शिर्क की बात में एक को दूसरे के कामों को प्रमाण नहीं बनाना चाहिये, न पीर की, न उस्ताद की, न बाप दादों की न किसी राजा की न किसी मोलवी की और न किसी बुजुर्ग (महापुरुष) की।

इस से ज्ञात हुआ कि मूल तौहीद का आदेश और शिर्क से दूर रहने की बात अल्लाह तआला हर एक से आलमे-अरवाह[1] में

1—मनुष्य के जीवन के चार दर्जे हैं पहला दर्जा आलमे अरवाह कहलाता है यह समय आदम के पैदा होने से ज़मीन पर उतारे

बता दी थी सारे पैगम्बर उसी की पुष्टि (ताकीद) के लिये आए हैं तथा सारी किताबें उसी के बयान में उतरी हैं। इस प्रकार एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बरों का आदेश और चार आसमानी किताबों की शिक्षा इसी एक टिप्पणी (नुक्ता) में है कि तौहीद को खूब ठीक कीजिये और शिर्क से बहुत दूर भागिये, न अल्लाह के अतिरिक्त किसी को अपना ऐसा हाकिम समझिये कि जो किसी चीज़ का अधिकार रखता हो, न किसी को अपना ऐसा मालिक मानिये जिससे अपनी मुरादें (कामनाएँ) मांगिए और अपनी हाजत (उपेक्षा) उसके पास ले जाइये।

[पृ० ६१] मिशकात के बाबुल कबाइर (यानी बड़ी गुनाहों के बयान) में लिखा है कि—

इमाम अहमद ने मुआज़ बिन जबल के माध्यम से यह बयान किया है कि अल्लाह के रसूल ने हज़रत मुआज से फरमाया कि तू किसी को अल्लाह का शरीक न ठहरा चाहे तू मार डाला जाय अथवा जला दिया जाय। अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त किसी को न मान तथा इस बात से न डर कि शायद कोई जिन या भूत कुछ दुःख पहुँचा दे। इसलिये कि जिस प्रकार एक मुसलमान को ज़ाहिरी बलाओं पर संतोष करना चाहिए और उनके डर से अपना दीन नहीं बिगाड़ना चाहिए इसी प्रकार जिन और भूतों के दुःख पहुँचाने पर संतोष करना चाहिये, उनसे डर कर उनको नहीं मान लेना

जाने तक। दूसरे को आलमे दुनिया कहते हैं जो पैदा होने से मरने तक के समय पर बोला जाता है। तीसरा दर्जा है "आलमे बर्ज़ख" यह मरने के बाद से शुरू होकर क़यामत आने तक पर बोला जाता है। चौथा दर्जा है आलमे आखेरत जो क़यामत क़ायम होने से लेकर हमेशा के लिए है—(अनुवादक)

चाहिये और यह समझना चाहिये कि वास्तव में हर काम अल्लाह ही के अधिकार में है, परन्तु वह कभी-कभी अपने बन्दों को जाँचता है बुरों के हाथ से भलों को दुःख पहुँचाता है ताकि कच्चों और पक्कों में अन्तर हो जाय तथा मोमिन एवं मुनाफिक़[1] अलग अलग मालूम हो जाएँ, तो जिस प्रकार ज़ाहिर में कभी नेक लोगों को बुरे लोगों के हाथ से अथवा मुसलमानों को काफिरों के हाथ से तकलीफ पहुँच जाती है और उनको वहाँ संतोष (सब्र) ही करना पड़ता है उससे दीन नहीं बिगड़ने देते हैं। इसी प्रकार कभी कभी नेक आदमी को जिन एवं शैतानों के हाथ से अल्लाह के इरादे से तकलीफ पहुँच जाती है तो इस पर भी संतोष ही करना चाहिये और उनको कमी न मानना चाहिये [पृ० ६२]।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि यदि कोई मनुष्य शिर्क से अप्रसन्न होकर दूसरों को मानना छोड़ दे और उनकी नज्र व नियाज़ (भेंट उपहार) को बुरा जाने ग़लत ढंग की रीतियों को मिटाने लगे और उसको इसराह में, माल अवलाद अथवा जान को हानि पहुँच जाए। या कोई शैतान किसी पीर शहीद का नाम लेकर तकलीफ देने लगे तो उसपर सतोष करे और अपनी बात पर अटल रहे और यह समझे कि अल्लाह मेरा दीन जांचता है और जिस प्रकार अल्लाह तआला जालिमों को ढील देकर फिर उन्हें पकड़ता है और मज़लूमों (ज़ुल्म किये गये लोगों) को उनके हाथ से छुड़ाता है, इसी प्रकार ज़ालिम जिन्नों को भी अपने समय पर पकड़ेगा तथा नेक आदमियों को उनके दुःख पहुँचाने से बचाएगा, मिश्कात के बाबुल कबाइर (बड़े गुनाहों के बयान) में लिखा है कि बुखारी एवं मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद के माध्यम से नक़ल किया है कि एक आदमी ने कहा कि अल्लाह के रसूल ﷺ! अल्लाह के यहाँ कौन सा पाप सबसे बड़ा है? आपने फरमाया—यह कि तू किसी को अल्लाह के समान समझ कर पुकारे जब कि अल्लाह ही ने तुझको पैदा किया है।

अर्थात जिस तरह अल्लाह को समझते हैं कि वह हर जगह उपस्थित एवं निरीक्षक (हाज़िर व नाज़िर) है और हर काम उसके अधिकार में है और यही समझकर हर संकट में उसे पुकारते हैं, पर किसी अन्य को यह समझ कर नहीं पुकारना चाहिये। इसलिये कि यह सबसे बड़ा पाप है पहले तो यह बात स्वयं ग़लत है [पृ० ६३] कि किसी के अन्दर आवश्यकता पूर्ति की शक्ति हो अथवा हर जगह उपस्थित एवं निरीक्षक (हाज़िर व नाज़िर) हो।

दूसरे यह कि जब हमारा पैदा करने वाला अल्लाह है, और उसी ने हमको पैदा किया है तो हम को भी चाहिये कि अपने हर काम में उसी को पुकारें, किसी अन्य से हम को क्या काम ? जैसे कोई किसी बादशाह का गुलाम हो चुका हो तो वह अपने हर काम का सम्बन्ध उसी से रखता है दूसरे बादशाह से भी नहीं रखता है। किसी चोहड़े और चमार का तो क्या ज़िक्र है ?

एक गलत विचार का जवाब :

जो कोई यह सोचे कि हम तो दुनिया में आकर [पृ० ६०] उस बात को भूल गए कि भूली बात का क्या प्रमाण ? तो यह विचार गलत है। इसलिए कि आदमी को बहुत सी बातें स्वय याद नहीं होती परन्तु मोतवर (विश्वासपात्र) लोगों के कहने से विश्वास कर लेता है। जैसे किसी को अपनी माँ के पेट से पैदा होना याद नहीं होता किन्तु लोगों ही से सुनकर विश्वास कर लेता है और अपनी माँ ही को माँ समझता है किसी अन्य को माँ नहीं बता सकता फिर कोई अपनी माँ का हक़ अदा न करे किसी अन्य को माँ बतावे तो उसको सब लोग बुरा कहेंगे और यदि वह जवाब दे कि मुझे तो अपना पैदा होना बिल्कुल याद नहीं कि जिसके कारण इसको अपनी माँ जानूं तो सब लोग उसको अहमक़ (मूर्ख) और बड़ा बेअदब

कहेंगे।

तो जब आम लोगों के कहने से आदमी को बहुत सी बातों पर विश्वास हो जाता है तो फिर पैगम्बरों की तो बड़ी शान है। उनके खबर देने से क्योकर विश्वास न आए !?

तौहीद ही बख़शिश का आधार है :

मिशकात के बाबुल इस्तिगफ़ार (माफी माँगने के बयान) में लिखा है कि इमाम तिरमिज़ी ने हज़रत अनस के माध्यम से नक़ल किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाते हैं कि हे आदम के बेटे, यदि तू मुझसे दुनिया भर के पाप लेकर मिले परन्तु ऐसी दशा में तू मुझसे मिले कि तू किसी को मेरा शरीक न समझता हो तो बेशक मैं तेरे पास दुनिया भर की अपनी बख़शिश (क्षमादान) ले आऊँगा।

अर्थात : इसी दुनिया में पापियों ने सारे पाप किये हैं, फिरऔन भी इसी दुनिया में था और हामान भी उसी में था बल्कि शैतान भी इसी में है, फिर यह समझिये कि जितने पाप उन पापियों से हुए हैं वह सारे पाप यदि एक आदमी [पृ० ६४] कर डाले परन्तु शिर्क से पवित्र हो तो जितने उसके पाप हैं अल्लाह तआला उसपर उतना ही बख़शिश करेगा।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि तौहीद की बरकत से सभी गुनाह (पाप) माफ़ कर दिये जाते हैं जिस प्रकार शिर्क के कारण सारे अच्छे काम बेकार हो जाते हैं। इसलिए कि जब आदमी शिर्क से बिल्कुल पाक साफ होगा, किसी को अल्लाह के अतिरिक्त मालिक न समझे एवं उसके अतिरिक्त कही भाग कर जाने की जगह

न जाने और उसके मन में पूरी तरह स्थान बना ले कि कोताही एवं गलती करने वालों को उससे भाग कर कहीं शरण नहीं मिल सकती है, तथा उसके विरुद्ध किसी का ज़ोर नहीं चलता, एवं उसके सम्मुख किसी की सहायता नहीं चलती, तथा कोई किसी की अनुशंसा (सिफारिश) अपने मन से नहीं कर सकता, इसप्रकार की बातें जब उसके दिल में स्थापित हो जायें तो जितने पाप उससे होंगे वह मनुष्य होने के नाते होंगे अथवा भूल-चूक कर और इन पापों का डर उसके दिल में स्थान बना लेगा और उनसे इस प्रकार दुखी और लज्जित होगा कि अपनी जान से भी तंग होगा, और निःसंदेह ऐसे मनुष्य पर अल्लाह की दया होती है। फिर जिस प्रकार उससे पाप होंगे उसी अनुसार उसकी यह हालत बढ़ेगी और इसी प्रकार अल्लाह की दया भी बढ़ेगी।

अतः यह जान लेना चाहिए कि जिसकी तौहीद सिद्धि (कामिल) है उसके पाप वह काम करते हैं कि अन्य लोगों की इबादत वह काम नहीं कर सकती, अल्लाह को सच्चे दिल से एक मानने वाला गुनहगार (पापी) शिर्क करने वाले परहेज़गार से हज़ार दर्जा बेहतर है।

जैसे दोषी प्रजा, विद्रोही एवं चापलूस प्रजा से हज़ार दर्जा बेहतर है इसलिए की दोषी तो अपने दोष पर लज्जित है परन्तु दूसरा अपनी धूर्तता पर अभिमानी है।

—: o :—

दूसरा अध्याय

अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में शिर्क करने की बुराई के बयान में

इस अध्याय में उन आयतों एवं हदीसों का वर्णन है जिनसे अल्लाह के ज्ञान में शिर्क करने की बुराई साबित होती है।

अल्लाह तआला ने सू० अनआम में फरमाया है—

("उसी के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुंजियां हैं केवल वही उनको जनता है")

अर्थात जिस प्रकार अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को जाहिरी वस्तुएँ जानने के लिए कुछ साधन प्रदान किए हैं, जैसे आँख देखने को, कान सुनने को, नाक सूंघने को ज़बान चखने को, हाथ टटोलने को तथा बुद्धि समझने और इन साधनों को उनके अधिकार में दे दिया है ताकि अपनी इच्छा अनुसार उनसे काम लेते रहें, जब देखने को मन चाहा तो आँख खोल दी, न चाहा तो बन्द कर ली। किसी चीज़ का स्वाद, जानना चाहा तो उसे मुंह में डाल लिया. न चाहा न डाला।

अर्थात इन वस्तुओं के जानने की कुंजियां उनको दी है। और जिसके हाथ में कुंजी होती हैं ताला उसी के अधिकार में होता है जब चाहे खोले और जब चाहे न खोले। इस प्रकार ज़ाहिर की चीजों का पता लगाना लोगों के हाथ में है जब चाहें करें जब [पृ० ६६] चाहें न करें।

परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान अल्लाह के लिये ख़ास है :

ग़ैब का जानना इस प्रकार अपने हाथ में हो कि जब चाहे जान ले, यह अल्लाह ही की शान है। किसी नबी, वली, जिन्न, फरिश्ते, पीर, शहीद, इमाम एवं इमामजादे, तथा भूत एवं परी को अल्लाह तआला ने यह शक्ति नहीं दी है कि जब चाहें ग़ैब की बात जान लें, बल्कि अल्लाह तआला अपने इरादे से कभी किसी को जितनी बात चाहता है बता देता है परन्तु यह अपनी इच्छा अनुसार न कि उनकी इच्छा पर।

जैसा कि हज़रत पैग़म्बर स० के साथ अनेक बार ऐसा अवसर पड़ा कि किसी बात के जानने की इच्छा हुई पर वह बात मालूम न हुई. फिर जब अल्लाह का इरादा हुआ तो एक क्षण में बता दी उदाहरणतः हजरत स० के समय में मुनाफिक़ो ने हजरत आईशा रजियल्लाहो अनहा पर दोषारोपण (तोहमत) किया, और हज़रत स० को इससे बड़ा दुःख हुआ कई दिनों तक बहुत छान बीन की परन्तु कोई वास्तविकता न मालूम हो सकी और बहुत शोक एवं चिन्ता में रहे, फिर जब अल्लाह की इच्छा हुई बता दिया कि वे मुनाफिक़ झूठे हैं और आइशा पबित्र है।

अतः विश्वास यह रखना चाहिये कि ग़ैब के ख़ज़ाने की कुंजियाँ अल्लाह ही के पास हैं उसने किसी के हाथ में नहीं दी हैं तथा उसका कोई खजानची नहीं हैं किन्तु अपने ही हाथ से ताला खोलकर उसमेंसे जितना जिसको चाहे प्रदान कर दे कोई उसका हाथ नहीं पकड़ सकता।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि यदि कोई यह दावा करे कि मेरे पास कुछ इस प्रकार का [पृ० ६७] ज्ञान है कि जब मैं चाहूँ ग़ैब की बात जान लूं तथा भविष्य की बातें जान लेना मेरे अपने बस में है, तो वह बड़ा झूठा है इसलिए कि वह खुदाई का दावा करता है।

तथा यदि कोई किसी नबी, वली, फरिश्ता, इमाम, इमामज़ादा, पीर, शहीद, ज्योतिषी व रम्माल को या जफ्फार या फाल देखने वाले को, अथवा ब्रह्मण अस्टी, या भूत एवं परी को ऐसा जाने अथवा उसके बारे में यह विश्वास रखे तो वह मुशरिक हो जाता है तथा इस आयत का इनकार करने वाला भी।

एक आशंका का खण्डन :

जो यह आशंका होती है कि किसी समय कोई ज्योतिषी, ब्राह्मण अथवा फाल बताने वाला कुछ कह देता है और उसी समान प्रकट हो जाता है तो इससे उसकी परोक्ष जानकारी (ग़ैब दानी) साबित होती है। किन्तु यह बात ग़लत है, इसलिये कि उनकी बहुत सारी बातें ग़लत भी होती है।

अर्थात यह मालूम हुआ कि परोक्ष (ग़ैब) का ज्ञान उनके अधिकार में नहीं, उनकी अटकल बाजी कभी ठीक होती है कभी ग़लत यही हाल है इस्तेख़ारा[1] और कश्फ़[2] तथा क़ुरआन मजीद की फाल[3] का, परन्तु पैग़म्बरों के ईश्वरी आदेश में कभी गलती नहीं होती। इसलिये कि वह चीज़ उनके अपने अधिकार में नहीं अल्लाह तआला जो चाहता है बता देता है उनकी अपनी इच्छा इसमें नहीं चलती।

अल्लाह तआला ने सू० नहल में फरमाया है—

(हे नबी आप कह दें कि जितने लोग भी असमान और ज़मीन में है ग़ैब को नहीं जानते केवल अल्लाह ही उसे जनता है और ये लोग यह ख़बर नहीं रखते कि (मरने के बाद) कब उठाए जाएँगे) [पृ० ६८]

अर्थात अल्लाह तआला ने पैग़म्बर स० को आदेश दिया कि लोगों से यह कह दें कि ग़ैब (परोक्ष) की बात अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता न फ़रिश्ता न आदमी न जिन्न और न अन्य कोई वस्तु। यानी ग़ैब की बात को जान लेना किसी के अधिकार में नहीं इसका प्रमाण यह है कि अच्छे लोग सभी जानते हैं कि एक दिन क़यामत आएगी परन्तु यह कोई नहीं जानता कि कब आएगी यदि हर चीज़ का जान लेना अपने अधिकार में होता, तो यह भी जान लेते।

अल्लाह तआला ने सू० लुक़मान में फरमाया—

(निःसंदेह अल्लाह ही के पास कयामत की ख़बर है। तथा वर्षा वही उतारता है और जो मादा के पेट में है वही जानता है और यह कोई नहीं जानता कि कल क्या करेगा ?

और यह कोई नहीं जानता किसज़मीन में मरेगा।

निसंदेह बड़ा जानने वाला, एवं खबरदार है)

अर्थात् ग़ैब (परोक्ष) की सारी बातों की जानकारी केवल अल्लाह ही को है, उनको जान लेना किसी के बस में नहीं। क़यामत की ख़बर और उसका आना बहुत प्रसिद्ध है एवं विश्वासनीय भी परन्तु उसके आने के निश्चित समय की खबर किसी को नहीं, फिर अन्य चीज़ों के [पृ० ६९] प्रकट होने की ख़बर का बयान ही क्या ? जैसे किसी की विजय किसी की पराजय किसी का बीमार होना किसी का स्वस्थ होना यह सारी बातें न तो क़यामत के समान प्रसिद्ध हैं और न तो वैसी विश्वासनीय इसी प्रकार वर्षा होने के समय का ज्ञान किसी को नहीं यद्यपि उसका मौसम बँधा हुआ है, प्रायः उन्हीं मौसमों में बरसता भी है, और सारे नबी, वली,

बादशाह, हकीम इसकी इच्छा भी रखते हैं।

इसलिये यदि उसके समय को जानने का कोई साधन होता तो कोई न कोई अवश्य उसे प्राप्त कर लेता, फिर जो चीजें ऐसी है कि न उनका मौसम बँधा हुआ है न सब लोग मिलकर उनकी रक्षा ही करते जैसे किसी का मरना, जीना औलाद होना धनवान होना निर्धन होना विजय एवं पराजय होना, तो इस प्रकार की वस्तुओं की जानकारी का साधन कैसे प्राप्त कर सकते हैं इसी प्रकार जो मादा के पेट में है उसको भी कोई नहीं जान सकता कि एक है या दो। नर है या मादा पूर्ण (कामिल) है या अपूर्ण (नाकिस) है सुन्दर है या कुरूप (बदसूरत)[1]

यद्यपि हकीम लोग इन सब चीज़ों के कारण लिखते हैं पर विशेषता के साथ किसी का हाल नहीं जानते, फिर अन्य चीज़ें जो मनुष्य में छुपी हुई हैं जैसे विचार, इच्छा, भावनाएँ तथा विश्वास (ईमान) एवं निफाक़, इनको क्योंकर जान सकते हैं ? और इसी प्रकार जब कोई हाल नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा तो किसी अन्य व्यक्ति का कैसे जान सकेगा, तथा जब अपने मरने की जगह को नहीं जानता तो दूसरे के मरने की जगह या समय को कैसे जान सकता हैं अर्थात: अल्लाह के अतिरिक्त भविष्य की कोई बात कोई भी अपनी क्षमता से नहीं जान सकता।

1—यह कहा जा सकता है कि आजकल साइन्स ने ऐसी मशीनें बना दी है कि आदमी के जिस्म का हर अंग देखा जा सकता है एवं उसका एक्सरे ले करके पता लगाया जा सकता है—और टेकनालोजी में इन्सान की नई-नई जानकारी से सब कुछ मालूम किया जा सकता है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि ये सब जो ग़ैब (परोक्ष) जानने का दावा करते हैं, कोई [पृ० ७०] कश्फ का दावा रखता है कोई इस्तेख़ारा का अमल सिखाता है, कोई पंचांग (तक़वीम) तथा पत्रा निकालता है कोई रमल की गोटी फेकता है कोई फालनामे लिये फिरता है ये सब झूठे और दगाबाज़ हैं। इनके जाल में कभी नहीं फँसना चाहिये किन्तु जो व्यक्ति स्वयं ग़ैब जानने का दावा न करता तथा यह भी न कहता कि ग़ैब का जानना मेरी क्षमता में है बल्कि उसका कहना यह हो कि कभी कुछ बातें अल्लाह की ओर से मुझको मालूम हो जाती हैं पर यह मेरे अधिकार में नहीं है कि जो बात चाहूँ और जिस समय चाहूँ जान लूं। तो यह बात हो सकती है किन्तु संदेह है कि वह सच्चा हो या मक्कार।

पुकार केवल अल्लाह ही सुन सकता है :

अल्लाह तआला ने सू० अहकाफ में फरमाया—

(और उससे अधिक पथभ्रष्ट (गुमराह) कौन होगा जो अल्लाह के अतिरिक्त ऐसे लोगों को पुकारता है कि वे क़यामत तक

इस विचार का खण्डन यह है कि अगरचे इन्सान आज कुछ चीज़ों को जानने लगा है परन्तु उसकी जानकारी सीमित है टेकनालोजी में सब कुछ प्रगति होने के बाद भी मादा के गर्भवती होने के फौरन बाद से लेकर आखिर तक जानना एवं विस्तार पूर्वक जानना। किन्तु इस प्रकार जानने में सब लोग असमर्थ हैं, यह हो सकता है कि जब बच्चा माँ के पेट में अपने पूरे रूप के साथ बनकर तैयार हो जाय तो मशीनों द्वारा देख लें परन्तु कुरआन का चैलेन्ज बाकी रह जाता है इसलिये कि शुरू से आखिर तक जानने में हम असमर्थ हैं।

उसकी बात को क़बूल नहीं कर सकते। और वे उनकी पुकार से ग़ाफिल हैं)।

अर्थात: शिर्क करने वाले बड़े मूर्ख हैं कि अल्लाह जैसे क़ादिर (शक्तिमान्) एवं महान ज्ञानी को छोड़कर अन्य को पुकारते हैं और ये अन्य लोग कुछ भी शक्ति नहीं रखते यदि क़यामत तक उनको पुकारें तो कुछ नहीं [पृ० ७१] कर सकते।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि कुछ लोग जो अगले महापुरुषों को दूर-दूर से पुकारते हैं और केवल इतना ही कहते है कि हे हज़रत आप अल्लाह के दरबार में दुआ करो कि वह अपनी क़ुदरत से हमारी आवश्यकता पूरी कर दे और फिर यह समझते हैं कि हमने कोई शिर्क नहीं किया इसलिए कि उनसे अपनी जरूरत नहीं माँगी है बल्कि दुआ करवायहै, तो यह बात ग़लत है इसलिए कि अगर ये माँगने की राह से शिर्क नहीं साबित होता है परन्तु पुकारने की राह से साबित होता है इसलिये कि पुकारने वाले ने उनको ऐसा समझा कि वे दूर अथवा क़रीब से बराबर सुन लेते हैं तभी तो उनको इस प्रकार पुकारा यद्यपि अल्लाह तआला ने इस आयत में फरमाया है कि अल्लाह के अतिरिक्त जो मख़लूक़ हैं वे पुकारने वालों के पुकार से ग़ाफिल हैं।

लाभ एवं हानि का मालिक केवल अल्लाह है :

अल्लाह तआला ने सू० आराफ़ में फरमाया—

(हे नबी ! आप कह दीजिये कि मैं अपनी जाति के लाभ या हानि का कोई अधिकार नहीं रखता किन्तु अल्लाह जो कुछ चाहे, और यदि मैं ग़ैब जानता तो बहुत सी भलाई इकट्ठा कर लेता और मुझे कोई दुःख न पहुँचता मैं तो केवल उन लोगों को डराने वाला और [पृ० ७२] खुश खबरी (शुभ सूचना) देने वाला हूँ जो

विश्वास रखते हैं।)

अर्थात् सब अम्बिया व अवलिया के सरदार पैगम्बर खुदा (मुहम्मद) सल्लल्लाहु अलैहेव सल्लम् थे और लोगों ने इन्हीं से बड़े बड़े मोजज़े (ईश्वरीय चमत्कार) देखे इन्हीं से सब भेद की बातें सीखीं और सारे महापुरुषों को इन्हीं की पैरवी से महानता मिली। इसीलिये अल्लाह तआला ने उन्हीं को हुक्म दिया कि अपना हाल लोगों के सामने साफ़ साफ़ बयान कर दें ताकि उससे सारे लोगों का हाल मालूम हो जाय तो आपने बयान कर दिया कि न मेरे अन्दर कोई (ईश्वरीय) शक्ति है और ग़ैब (परोक्ष) का ज्ञान। मेरी क्षमता और अधिकार का हाल यह है कि मैं अपनी ज़ात तक के लाभ एवं हानि का मालिक नहीं हूँ तो दूसरों का क्या कर सकूंगा और यदि ग़ैब जानना मेरे अपने वस में होता तो हर काम का परिणाम पहले मालूम कर लेता यदि भला होता तो उसको हाथ लगाता और अगर बुरा मालूम होता तो काहे को उसमें क़दम रखता।

मतलब यह है कि कोई ईश्वरीय शक्ति या ग़ैब की जानकारी मेरे पास नहीं है। और कुछ भी खुदाई का दावा नहीं रखता, मुझको केवल पैग़म्बरी का दावा है, और पैग़म्बर का इतना ही काम है कि बुरे काम पर डरा देवे और भले काम पर शुभ सूचना (खुशखबरी) सुना देवे तथा यह भी उन्हीं के लिये लाभदायक है जिनके हृदय में विश्वास है, और हृदय में विश्वास का डालना मेरा काम नहीं यह अल्लाह ही के बस में हैं।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि अम्बिया अवलिया को अल्लाह ने सब लोगों से महान बनाया है तो उनमें महानता यही होती है कि अल्लाह की राह बताते हैं और बुरे [पृ० ७३] भले कामों का ज्ञान होता है उसे लोगों को सिखाते हैं, अल्लाह उनके बताने में प्रभाव

डालता है। अनेक लोग इससे सीधे मार्ग पर आ जाते हैं। तथा इस बात की उनके पास कोई महानता नहीं है कि अल्लाह ने उनको जगत में अधिकार चलाने की कोई शक्ति दे रखी हो कि जिसको चाहें मार डालें, अवलाद (संतान) दे देवें, संकट दूर कर देवें मुरादें (आशाएँ) पूरी कर दें, विजय एवं पराजय दे देवें, धनी एवं निर्धन कर दें, किसी को बादशाह कर दें, किसी को अमीर, बज़ीर, अथवा किसी से बादशाही या अमीरी छीन लें, या किसी के हृदय में ईमान डाल दें या किसी का ईमान छीन लें या किसी रोगी को स्वस्थ बना दें अथवा किसी का स्वास्थ्य छीन लें, इन बातों में छोटे बड़े सारे ही लोग बराबर है इसके लिये सभी असमर्थ और अधिकार हीन हैं। इसी प्रकार इस बात में भी उनकी कोई महानता नहीं है कि अल्लाह तआला ने ग़ैब जानने की क्षमता उन्हें प्रदान कर दी हो कि जिसके मन का हाल जब जानना चाहें जान लें कि वह जीता है या मर गया या किस शहर में है अथवा किस स्थिति में है, या भविष्य की जिस बात का जब भी ज्ञान प्राप्त करना चाहें तो कर लें कि फलाने के यहाँ संतान होगी या नहीं होगी, इस व्यापार में उसको लाभ होगा कि नहीं होगा, इस लड़ाई में विजय प्राप्त करेगा या पराजय होगा। इन बातों में भी सभी लोग छोटे हों या बड़े, एक समान अचेत एवं अज्ञान हैं।

तो जिस प्रकार सब लोग कुछ बातें बुद्धि से अथवा अनुमान लगा कर कह देते हैं फिर ऐसा होता है कि कभी उनके कहने के अनुसार हो जाता है [पृ० ७४] और कभी उसके विरुद्ध हो जाता है. इसी प्रकार यह महान लोग भी जो बातें बुद्धि एवं अनुमान द्वारा बोलते हैं कभी ठीक होती है कभी ग़लत परन्तु जो अल्लाह की ओर से 'वहीं' (ईश्वरीय वाणी) अथवा इलहाम (ईश्वरीय संकेत) हो तो उसकी बात ही निराली है पर वह उनके अधिकार में नहीं हैं।

परोक्ष ज्ञान (इल्मे ग़ैब) से सम्बन्धित नबी स० का आदेश :

मिशकात के बाब एलानुन्निकाह में लिखा है कि—

इमाम बुखारी ने रबी बिन्ते मोअव्वज़ बिन अफरा द्वारा नक़्ल किया है कि जिस समय हमारी (रबी) की शादी हुई पैग़म्बरे-खुदा आए फिर घर के भीतर गए और मेरे बिछौने पर बैठ गए इसी बीच कुछ छोकड़ियों ने डफली बजा-बजा कर बद्र नामी युद्ध में मारे गए शहीदों की प्रशंसा में गीत गाने लगीं इसी बीच एक छोकड़ी ने अपने गीत में कहा—"और हमारे बीच एक ऐसा नबी है जो आने वाले कल की बात जानता है" पर जब आपने सुना तो फरमाया यह कहना छोड़ दो और वही कहो जो इससे पूर्व कह रही थीं [पृ० ७५]।

अर्थात: रबी मदीना की एक नारी का नाम था उनकी शादी में पैग़म्बरे खुदा स० तशरीफ लाए थे फिर उनके पास आकर बैठे इतने में उनकी अनेक छोकड़ियां कुछ गाने लगीं उनमें किसी ने आपकी प्रशंसा में यह कहा कि उनको अल्लाह तआला ने ऐसा सम्मान दिया है कि वह भविष्य की बातें जानते हैं, किन्तु अल्लाह के रसूल स० ने उसे मना किया और फरमाया यह बात मत कहो और जो कुछ पहले गाती थीं वही गाए जाओ।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि अम्बिया औलिया; अथवा इमाम एवं शहीद किसी के बारे में कभी यह विश्वास न रखे कि वह ग़ैब की बात जानते हैं बल्कि हज़रत पैग़म्बर के सम्बन्ध में भी इस प्रकार का विश्वास (अक़ीदा) न रखे और न उनकी प्रशंसा में ऐसी बात ही कहे।

और यह जो शायर (कवि) लोग अल्लाह के रसूल की प्रशंसा अथवा अम्बिया, अवलिया बुजुर्गों, पीरों एव उस्तादों की प्रशंसा बयान करते हैं तथा सीमा पार कर जाते हैं और उनकी प्रशसा में अल्लाह के समान गुण बयान करते हैं फिर यह कहते हैं कि कविता में मुबालगा (अत्युक्ति) होता है । यह सब बात गलत है इसलिए कि पैगम्बरे खुदा स० ने इस प्रकार की कविता अपनी प्रशंसा में मदीना के अनसार की छोकड़ियो को गाने भी नहीं दिया, कोई बुद्धिमान इसको कहे या सुनकर पसन्द करे यह तो दूर की बात है ।

मिशकात के बाबी रूयतिल्लाह में लिखा है कि इमाम बुखारी ने बयान किया है कि हज़रत आइशा (अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हों) ने कहा कि जब कोई तुमसे यह कहे कि हज़रत पैगम्बरे खुदा [पृ० ७६] मु० स० उन पांच बातों को जानते थे जिनके बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया है—

(तो निसंदेह उसने बड़ा झूठ बोला)

अर्थात् वह पांच बातें जो सू० लुक़मान के अन्त में आई हैं तथा उनकी व्याख्या इस अध्याय के शुरू में गुजर चुकी है । और जितनी ग़ैब की बातें हैं सब इन्हीं पांच में सम्मिलित हैं अतः यदि कोई यह कहें कि पैगम्बरे खुदा स० वह पांचो बातों को जानते थे अर्थात् ग़ैब की सारी बातें जानते थे तो वह बड़ा झूठा है ।

धार्मिक महापुरुषों पर एक आरोप और उसका खंडन

इस हदीस से यह ज्ञात हुआ कि जो कोई यह बात कहे कि पैगम्बरे खुदा स० या कोई इमाम या कोई महापुरुष ग़ैब की बात जानते थे और शरीअत के अदब से मुंह से वही कहते थे । तो ऐसा

कहने वाला बड़ा झूठा है बल्कि ग़ैब की बात अल्लाह के अतिरिक्त कोई जानता ही नहीं।

मिशकात के बाबुल बुका वल ख़ौफ़ में लिखा है कि इमाम बुखारी ने उम्मुल अला अनसरियह के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया [पृ० ७७] अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता, अल्लाह की क़सम मैं नहीं जानता—यद्यपि मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि मेरे साथ अथवा तुम्हारे साथ क्या मामला होगा"।

अर्थात् जो कुछ भी मामला अल्लाह तआला अपने बन्दों से करेगा चाहे दुनिया में चाहे क़ब्र में चाहे अखिरत में। उसकी हकीक़त किसी को मालूम नहीं। न नबी को न वली को, न अपना हाल न दूसरे का।

और यदि कुछ बातें अल्लाह ने अपने किसी प्रिय बंदे को 'वहि' या इलहाम (ईश्वरीय संकेत) द्वारा बताई हैं कि फलाने का परिणाम अच्छा अथवा बुरा है तो वह संक्षिप्त रूप की बातें उससे अधिक जान लेना अथवा उनका विवरण मालूम करना उनके अधिकार से बाहर हैं।

—: ० :—

तीसरा अध्याय

अल्लाह के अधिकारों में शिर्क करने की बुराई के बयान में

इस अध्याय में उन आयतों एवं हदीसों का बयान है जिनसे अल्लाह के अधिकार में शिर्क करने की बुराई साबित होती है।

अल्लाह तआला ने सू० मूमिनून में फरमाया—

(हे नबी ! आप कह दीजिये कि कौन ऐसा है कि जिसके हाथ में सब कुछ हो ? तथा वह शरण देता हो और उसके विरुद्ध कोई शरण नहीं मिल सकता हो, [पृ० ७८] यदि तुम जानते हो (तो बताओ कौन ऐसा है ?) इसके उत्तर में वे यही कहेंगे कि सब कुछ अल्लाह के लिये है। आप कह दीजिए कि फिर कहां सनके जा रहे हो ?)

अर्थात् जिससे भी पूछिये कि ऐसी महिमा किसकी है कि हर चीज़ उसके अधिकार में हो चाहे कर डाले, कोई उसका हाथ न पकड़ सके, उसके सहयोग में कोई हस्तक्षेप न कर सके, उसके आदेशानुसार न चलने वाले को कहीं शरण न मिल सके, तथा उसके विरुद्ध किसी का सहयोग काम न आए ? तो प्रत्येक यही जवाब देगा कि ऐसी महिमा अल्लाह ही की है।

अत: यह समझना चाहिये कि किसी अन्य से आशायें (मुरादें) मांगना केवल सनक है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि अल्लाह के रसूल के समय काफिर भी इस बात को मानते थे कि अल्लाह के बराबर कोई नहीं, तथा

कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकता. पर अपने बुतों (मूर्तियों) को उसके दरबार में अपना वकील समझ रहे थे और इसी कारण वे काफिर ठहरे और अब भी यदि कोई किसी प्राणी (मखलूक़) के लिये संसार में वैसा अधिकार साबित करे और उसे अपना वकील ही समझे तो उस पर भी शिर्क साबित हो जाता है यद्यपि उसे अल्लाह के बराबर न समझे तथा उसके अन्दर अल्लाह के समान शक्ति न साबित करे।

अल्लाह के रसूल की ओर से एक विज्ञप्ति :

अल्लाह तआला सू० जिन्न में फरमाया—[पृ० ७९]

(हे नबी ! आप कह दीजिए कि निःसंदेह मैं तुम्हारे किसी लाभ और हानि का मालिक नहीं हूँ तथा यह भी कह दें कि अल्लाह से हमें कोई बचा नहीं सकता, और उसके अतिरिक्त मैं कहीं शरण नहीं पा सकता।)

अर्थात् अल्लाह तआला ने अपने रसूल को आदेश दिया कि वह लोगों को सुना दें कि मैं तुम्हारे लाभ एवं हानि का कुछ भी मालिक नहीं हूँ, और जो तुम मुझपर ईमान लाए हो तथा मेरी उम्मत में सम्मिलित हुए हो तो इस अभिमान में हद से मत बढ़ना कि हमारा पाया मजबूत है, हमारा वकील प्रबल है तथा हमारा अनुशंसायी (शफ़ाअत करने वाला) बड़ा महबूब है। अतः हम जो चाहें करें वह हमको क्रोध से बचा लेगा। तो यह बात सिरे से ग़लत है क्योंकि मैं स्वयं डरता हूँ और अल्लाह के विरुद्ध कहीं कोई बचाव नहीं जानता तो फिर दूसरे को क्या बचा सकूँगा ?

इस आयत से ज्ञात हुआ कि ये साधारण वर्ग के लोग जो अपने पीरों शहीदों के सहयोग पर भरोसा करके अल्लाह को भूल जाते हैं, तथा उसके आदेशों का आदर नहीं करते हैं ये केवल गुमराह (पथ

भ्रष्ट) हैं, इसलिए कि सारे पीरों के पीर, अल्लाह के रसूल स० रात दिन अल्लाह से डरते थे उसको रहमत (दया) के अतिरिक्त किसी प्रकार अपना बचाव नहीं समझते थे फिर किसी अन्य का वर्णन ही क्या ?

अल्लाह तआला ने फरमाया सू० नहल में । [पृ० ८०]

(और वे अल्लाह के अतिरिक्त ऐसों की पूजा करते हैं कि जो उनकी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं हैं न ज़मीन से और न आसमान से, और इसकी शक्ति भी नहीं रखते ।)

अर्थात ये लोग अल्लाह के समान कुछ ऐसे लोगों का सम्मान करते हैं कि जिनके पास कोई अधिकार नहीं तथा रोज़ी पहुँचाने में उनका कोई दख़ल नहीं रखते न आकाश से पानी वर्षाएँ और पृथ्वी से कुछ उगाएँ, उनको किसी प्रकार की शक्ति नहीं ।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि साधारण वर्ग के कुछ लोग जो यह कहते हैं कि अंबिया अवलिया को अथवा इमाम एवं शहीदों को संसार में अधिकार लागू करने की शक्ति तो है पर अल्लाह ने जो भाग्य में लिखा है उस पर वे संतुष्ट हैं, उसके आदर से ये दम नहीं मारते, यदि चाहें तो एक क्षण में उलट पलट कर दें, पर शरीअत (धर्म शास्त्र) का सम्मान करके चुप बैठे हैं, तो इस प्रकार की सारी बातें गलत हैं बल्कि वास्तव में न किसी काम में उनका हस्तक्षेप है और न ही इसकी शक्ति रखते हैं ।

अल्लाह तआला ने सू० यूनुस में फरमाया है ।

(अल्लाह के अतिरिक्त ऐसों को मत पुकार जो तुझको न लाभ दे सकें और न हानि, फिर यदि तूने ऐसा किया तो निःसंदेह तू अत्याचारियों में गिना जायेगा ।) [पृ० ८१]

अर्थात् सर्व शक्तिमान अल्लाह के होते हुए ऐसे असमर्थ लोगों को पुकारना, जो कोई फायदा या नुक़सान नहीं पहुँचा सकते, केवल बे इनसाफी है, कि ऐसे महान का पद इस प्रकार के हीन लोगों को दिया जाय।

सू० सबा में अल्लाह तआला ने फरमाया—

(हे नबी ! आप कहिये कि भला तुम उन लोगों को पुकारो जिनको तुमने अल्लाह के अतिरिक्त विचार कर रखा है, हालांकि वह लोग आसमान और ज़मीन में एक पाई भर अधिकार नहीं रखते और नहीं उन दोनों में उनका कोई साझा है। और न तो उनमें से कोई अल्लाह का सहयोगी है।

और उसके पास अनुशंसा (सिफारिश) काम नहीं आएगी किन्तु जिसके लिए आज्ञा दे दे, और जब घबराहट उनके दिलों से दूर होती है तो वे पूछते हैं कि तुम्हारे मालिक ने क्या कहा ? तो वे कहते हैं सत्य कहा, और वही अल्लाह महान एवं बड़ा है।)

अर्थात् यदि कोई किसी से मुराद (आशय) मांगता है तथा संकट में उसे पुकारता है, फिर वह उसकी आवश्यकता पूरी कर देता है तो यह बात इसी प्रकार होती है पृ० ८२] कि या तो वह स्वयं मालिक हो अथवा मालिक का साझीदार, या मालिक पर उसका दबाव हो। जैसे बादशाह बड़े-बड़े अमीरों का कहना, दब कर मान लेता है क्योंकि वे उसके सहयोगी हैं तथा उसके दरबार के सदस्य होते हैं उनके अप्रसन्न होने से साम्राज्य बिगड़ सकता है, या इस प्रकार हो कि मालिक से सिफारिश करे और सिफ़ारिश चाहे अनचाहे स्वीकार कर ले फिर दिल से प्रसन्न हो अथवा अप्रसन्न, जैसे राजकुमारी, या रानी कि जिनके प्रेम वश राजा उनकी सिफारिश रद नहीं कर सकता, चार व नाचार उनकी सिफारिश स्वीकार कर लेता है।

परन्तु जिनको ये लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते अथवा उनसे मुरादें माँगते हैं, वे न तो आसमान एवं जमीन में एक जर्रह भर चीज़ के मालिक हैं और न ही कुछ उनका साझा है और न ही अल्लाह के राज्य के सदस्य एवं सहयोगी हैं, कि दब कर उनकी बात मान ले, और न बिना परवानगी (आज्ञा) वे सिफारिश कर सकते हैं कि चाहे न चाहे उससे दिलवाएँ बल्कि उसके दरबार में उनका तो यह हाल है कि जब वह कुछ आदेश देता है तो ये भय से अपने होश खो बैठते हैं, फिर भय एवं सम्मान में आकर पुनः उससे इस बात की जाँच नहीं कर सकते बल्कि आपस में एक दूसरे से पूछते हैं और जब आपस में उस बात की जांच कर लेते हैं तो केवल मान लेने और तसदीक़ करने की बात होती है, वहाँ बात को पलटने का क्या सवाल तथा किसी की वकालत या सहयोग देने की किसी को क्या ताक़त ? [पृ० ८३]

शफाअत की हक़ीक़त :

इस जगह एक बात बड़े काम की है, उसको कान लगा कर सुन लेना चाहिये वह यह है कि अधिकतर लोगों को अंबिया औलिया की शफाअत (अनुशंसा) के विषय में बहुत चूक हो रही है तथा उसका ग़लत अर्थ समझ कर अल्लाह को भूल गए हैं अतः शिफाअत की हक़ीक़त समझ लेना चाहिये ।

ज्ञात होना चाहिये कि शफाअत कहते हैं सिफ़ारिश या अनुशंसा को, और सिफारिश कई प्रकार की होती है ।

एक तो ज़ाहिरी सिफारिश जैसे बादशाह के यहाँ किसी की चोरी साबित हो जाय, और कोई अमीर अथवा वज़ीर उसको अपनी सिफारिश से बचा ले तो यह एक प्रकार की सिफारिश हुई, बादशाह

काजी तो उस चोर को पकड़ने को चाहता था और उसके नियमानुसार दंड योग्य था पर उस अमीर से दब कर उसकी सिफारिश मान लेता है, और उस चोर का अपराध क्षमा कर देता है इसलिए कि वह अमीर उसके साम्राज्य का महान सदस्य है तथा वह उसके साम्राज्य को बड़ा शोभा दे रहा है, इसी कारण बादशाह समझता है कि इस स्थान पर अपने क्रोध को थाम लेना और एक चोर को क्षमा कर देना, इससे अच्छा है कि इतने बड़े अमीर को अप्रसन्न कर दें जिससे बड़े-बड़े काम बिगड़ जाएँ तथा साम्राज्य की शोभा घट जावे। इसे पद अनुशंसा या मर्यादा अनुशंसा (शफ़ाअते वजाहत) कहते हैं।

अर्थात् उस अमीर की मर्यादा के कारण उसकी सिफारिश स्वीकार की।

तो इस प्रकार की सिफारिश अल्लाह के दरबार में कभी भी नहीं हो सकती, और यदि कोई किसी नबी या वली को तथा इमाम एवं शहीद को अथवा किसी फरिश्ता, या किसी पीर को अल्लाह के दरबार में इस प्रकार का सिफारिशी समझे तो [पृ० ८४] वह अस्ल मुशरिक तथा बड़ा मूर्ख है ? उसने अल्लाह का कुछ अर्थ नहीं समझा तथा उस जगत स्वामी के सम्मान को कुछ नहीं पहचाना उस शाहंशाह (राजाओं के राजा) की महिमा तो यह है कि एक क्षण में अपने "होजा"[1] के एक आदेश से चाहे तो करोड़ों नबी एवं वली तथा जिन्न एवं फरिश्ता जिबरील और ह० मुहम्मद स० के बराबर पैदा कर डाले[2] और एक क्षण में सारा जगत अर्श से फर्श तक उलट पलट कर डाले तथा एक अन्य जगत इस स्थान पर बना

1—हो जा 'कुन' शब्द का अर्थ है। अरबी में कुन का अर्थ "होजा" है।

दे, इसलिए कि उसके तो केवल इरादा ही करने से हर चीज़ हो जाती है कि किसी कार्य के लिए किसी साधन अथवा सामग्री इकट्ठा करने की कोई आवश्यकता नहीं है और यदि अगले पिछले युग के सारे लोग, इन्सान एवं जिन्न मिलकर जिबरील (फरिश्ता) एव नबी के समान हो जाँय तो जगतस्वामी (अल्लाह) के साम्राज्य में इनके कारण कोई शोभा नहीं बढ़ जाएगी. और यदि सारे लोग शैतान और दज्जाल जैसे हो जायँ तो उसकी कोई शोभा भी नहीं घटेगी, प्रत्येक अवस्था में वह बड़ों का बड़ा तथा बादशाहों का बादशाह है उसका न कोई कुछ बिगाड़ सके और न कुछ सँवार सके।

दूसरे प्रकार की सिफारिश यह है कि राजकुमारियों, रानियों, अथवा बादशाह के प्रियतमों में से कोई उस चोर की सिफारिश करने वाला बनकर उठ खड़ा हो और चोरी की सज़ा न देने देवे, तथा तथा बादशाह उसके प्रेम से लाचार होकर उस चोर का अपराध माफ़ कर दे, इसको प्रेम अनुशंसा (शफाअते मुहब्बत) कहते हैं।

अर्थात् बादशाह ने प्रेम के कारण सिफारिश स्वोकार कर ली और [पृ० ८५] यह समझा कि एक बार क्रोध पी जाना, एवं एक चोर को माफ़ कर देना, उस शोक (रंज) से अच्छा है जो उस प्रियतम के रूठ जाने से मुझको होगा।

इस प्रकार की सिफारिश भी अल्लाह के दरबार में सम्भव नहीं, यदि कोई किसी को इस प्रकार का सिफारिश करने वाला समझे तो वह भी वैसा ही मुशरिक एवं मूर्ख है जैसा पहले गुज़र चुका।

वह जगत स्वामी अपने बंदों पर कितनी ही कृपा करे, तथा किसी को हबीब[1], किसी को ख़लील[2], किसी को कलीम[3] और

1—हबीब का पद हमारे आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद स० को को मिला है। हबीब का अर्थ है प्रियतम।

किसी को रूहुल्लाह वजीह[4] की पदवी प्रदान करे तथा किसी को रसूले करीम, मकीन, एवं रूहुलकुद्स, रूहुल अमीन[5] कहै, किन्तु मालिक फिर भी मालिक है और गुलाम, गुलाम है। कोई बन्दगी (दास होने) के पद से बाहर पाँव नहीं रख सकता तथा गुलामी (दासता) की सीमा पार नहीं कर सकता।

तीसरे प्रकार की सिफारिश यह है कि चोर पर चोरी तो साबित हो गई पर वह हमेशा का चोर नहीं है तथा चोरी को अपना धंधा नहीं बनाया है किन्तु मन की भावना में आकर यह अपराध कर डाला इसलिए उस पर लज्जित भी है, और रात दिन डरता है तथा बादशाह के नियमों को सर आँखों पर रख कर अपने को स्वयं अपराधी तथा दण्ड योग्य समझता है, और बादशाह से भाग कर

2—खलील का पद हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम को मिला है, खलील का अर्थ है : "दोस्त"।

3—कलीम का पद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मिला है।

कलीम का अर्थ है जिससे अल्लाह तआला ने बात की हो, हज़रत मूसा से अल्लाह तआला ने, तूर नामक पहाड़ी पर बात की थी इसी कारण आपको कलीम कहते हैं।

4 – रूहुल्लाह का पद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को मिला है आप अल्लाह की महिमा से बिना बाप के पैदा हुए थे इसलिए रूहुल्ला कहे गए।

5—रसूल करीम, मकीन रूहुलकुद्स एवं रूहुल अमीन, जिबरील नामक फरिश्ता का पद है जो अल्लाह की तरफ से संदेशवाहक का काम करते थे यही फरिश्ता हमारे नबी पर कुरआन उतारते थे।

किसी अमीर अथवा वज़ीर की शरण नहीं ढूंढता है, तथा उसके विरुद्ध किसी का सहयोग नहीं चाहता है और रात दिन उसी का मुंह देख रहा है कि देखिए मेरे संबन्ध में क्या आदेश मिलता है, तो उसकी यह दशा देखकर बादशाह के दिल में उस पर [पृ० ८६] दया आ जाती है, परन्तु राज्य विधान का विचार करते हुए बिना किसी कारण के क्षमा नहीं करता है ताकि लोगों के दिलों में विधान का सम्मान घट न जाय।

इसलिए कोई अमीर अथवा वज़ीर उसकी इच्छा जान कर उस अपराधी की सिफारिश करता है, और बादशाह उस अमीर की मर्यादा बढ़ाने के लिए ज़ाहिर में उसकी सिफारिश के नाम पर उस चोर का अपराध माफ कर देता है। यहां उस अमीर ने उस चोर की सिफारिश इसलिए नहीं कि वह उसका संबन्धी अथवा पहचानी है या उसको अपना सहयोग देना चाहता है। बल्कि उसने केवल बादशाह की इच्छा देखकर ऐसा किया है क्योंकि वह तो बादशाह का अमीर है न कि चोरों का दलाल, जो चोर का सहयोगी बन कर उसकी सिफारिश करता, यदि ऐसा करता तो वह स्वयं चोर हो जाता इसको शफ़अत बिलइज्न कहते हैं अर्थात् अनुमति अनुसार सिफारिश करना। यानी यह सिफारिश खुद मालिक की परवानगी (अनुमति) से होती है।

इस प्रकार की सिफारिश अल्लाह के दरबार में हो सकती है, और कुरआन एवं हदीस में जिस नबी अथवा वली की शफ़ाअत का वर्णन आया है उसका यही अर्थ है।

समता का मार्ग :

अल्लाह के हर बंदे को चाहिये कि वह हर दम अल्लाह ही को पुकारे, उसी से डरता रहे उसी से विनय करता रहे, उसके सामने

अपने पापों का इक़रार करने वाला बना रहे, तथा उसी को अपना मालिक और सहयोगी समझे, और जहाँ तक विचार दौड़ाए अल्लाह के अतिरिक्त कहीं भी अपना बचाव न जाने तथा किसी अन्य के सहयोग पर भरोसा न करे। वह स्वयं महान क्षमाशील एव दयालु है, सम्पूर्ण संकट अपनी ही कृपा से दूर कर देगा तथा सारे पाप अपनी दया से क्षमा कर देगा, और जिसको चाहेगा [पृ० ८७] अपनी आज्ञा से उसका सिफारिशकर्ता बना देगा।

बहरहाल जिस प्रकार अपनी हर आवश्यकता उसी को सौंपते हैं, इसी प्रकार यह आवश्यकता भी उसी के अधिकार पर छोड़ दीजिये जिसको वह चाहे हमारी शिफारिश करने वाला बना दे, यह न हो कि किसी के सहयोग पर भरोसा कीजिए और उसको अपने सहयोग के लिए पुकारिए तथा उसको अपना सहयोगी समझ कर अस्ल मालिक को भूल जाएँ और उसके आदेशों अर्थात् शरीअत को बेक़दर (अपमानित) कर दें और अपने बनाए हुए सहयोगी के मार्ग एवं नीतियों को महत्तम समझे, क्योंकि यह बड़ी बुरी बात है और सारे नबी, वली इससे अप्रसन्न हैं, वे कभी ऐसे लोगों के सिफारिशी (शाफ़ी) नहीं बनते बल्कि इस पर अपना क्रोध प्रकट करते हैं और उलटे उसके दुश्मन हो जाते हैं क्योंकि उनकी महानता यही थी कि अल्लाह की प्रसन्नता को जोरू, बेटे, मुरीद, चेले, नौकर, गुलाम तथा मित्र, दोस्त की प्रसन्नता पर महत्तम समझते थे, और जब ये लोग अल्लाह की प्रसन्नता के विरुद्ध कोई इच्छा करते तो वे भी इनके दुश्मन हो जाते थे, तो फिर ये पुकारने वाले लोग ऐसे क्या हैं कि वे बड़े-बड़े लोग उनके सहयोगी बनकर अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध उनकी ओर से उसके दरबार में झगड़ने बैठेंगे, बल्कि बात तो यह है कि अल्लाह के लिए प्रेम और अल्लाह के लिए नफरत, इनकी शान है, जिसके हक़ में अल्लाह की इच्छा यही ठहरी कि उसको

दोज़ख (नरक) में ही भेजे तो वे भी ऐसों को दो चार धक्के देने को तैयार हैं।

मिशकात के बाबुत्तवक्कुल वस्सबर में लिखा है इमाम तिर्मिजी, ने इबनेअब्बास का यह वर्णन नक़ल किया है [पृ० ८८] उन्होंने कहा कि एक दिन अल्लाह के रसूल के पीछे (सवारी पर) बैठा था कि आपने फरमाया हे बच्चे तू अल्लाह को याद रख अल्लाह तुझको याद रखेंगे, अल्लाह को याद रख तू उसको अपने सामने पावेगा और जब कुछ मांगे तो अल्लाह ही से मांग, और जब सहायता चाहे तो अल्लाह की सहायता मांग, और जान ले कि निसंदेह यदि सारे लोग इकठ्ठा होकर तुमको कोई लाभ पहुंचाना चाहें तो कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकते परन्तु जितना अल्लाह ने तेरे हित में लिखा है, इसी प्रकार यदि सारे लोग इकठ्ठा होकर तुझको हानि पहुँचाना चाहें तो कोई हानि नहीं पहुँचा सकते परन्तु जितना अल्लाह ने तेरे लिये लिखा है क़लम उठा लिया गया है एवं काग़ज सूख गया।

अर्थात् अल्लाह तआला यद्यपि सब बादशाहों का बादशाह है पर और बादशाहों के समान इतना घमंडी नहीं, कि कोई प्रजा चाहे जितनी विनय करे घमंड के मारे [पृ० ८९] उसकी ओर ध्यान ही नहीं देते।

यही कारण है कि प्रजा बादशाह के अतिरिक्त अन्य अमीरों को मानती हैं तथा उनका माध्यम ढूढते हैं ताकि इन्हीं के माध्यम से उनकी विनय स्वीकार हो जाय। परन्तु अल्लाह तआला महान कृपालु एवं बड़ा दयालु है उसके यहाँ किसी की वकालत की आवश्यकता नहीं। जो उसे याद रखे वह स्वयं उसे याद रखता है, कोई अनुशंसा करे न करे।

इसी प्रकार यद्यपि वह सबसे पवित्र तथा सबसे श्रेष्ठ है परन्तु उसका दरबार अन्य राजाओं के समान नहीं है कि प्रजा लोग वहाँ पहुँच ही न सकें और उसके अमीर एवं वजीर ही प्रजा पर शासन करें और प्रजा को इनका आदेश अवश्य मानना पड़े और इन्हीं के दरबार में आना पड़े। किन्तु अल्लाह तआला ऐसा नहीं है, बल्कि वह अपने बंदों से बहुत निकट है एक मामूली आदमी यदि अपने हृदय से उसकी ओर ध्यान दे तो उसी स्थान पर उसे अपने सम्मुख पाएगा, वहाँ केवल अपनी लापरवाही है इसके अतिरिक्त और कोई पर्दा नहीं यदि कोई उससे किसी प्रकार दूर है तो यह अपनी ग़फलत के कारण दूर है, पर वह सबसे निकट है। फिर भी यदि कोई किसी पीर अथवा पैग़म्बर को पुकारता है ताकि वे उसको अल्लाह से निकट कर देवें, किन्तु वह यह नहीं समझता है कि पीर एवं पैग़म्बर तो उससे दूर हैं और अल्लाह उससे बहुत ही निकट है, तो इसकी मिसाल ऐसी है कि एक साधारण आदमी अपने राजा के पास अकेला बैठा हो और वह राजा उसका उद्देश्य सुनने के लिये ध्यान पूर्वक तैयार हो फिर भी वह मनुष्य किसी अमीर अथवा वज़ीर को कही दूर से पुकारे और उससे कहै कि तू मेरी तरफ से फलानी बात राजा के दरबार में पेश कर दे तो वह अंधा होगा या पागल।

और आप स० ने फरमाया कि हर मुराद अल्लाह ही से माँगें और हर संकट में [पृ० ९०] उसी की ही सहायता चाहें और यह विश्वास कर लें कि भाग्य का कलम कभी नहीं फिरता, तथा क़िस्मत में लिखा कभी नहीं मिटता फिर यदि सम्पूर्ण जगत के छोटे,

बड़े मिलकर चाहें कि किसी को कोई लाभ अथवा हानि पहुंचा दें तो उससे अधिक नहीं हो सकता जितना अल्लाह ने लिखा है।

भाग्य से बाहर कोई कार्य नहीं हो सकता :

इस हदीस से यह ज्ञात हुआ कि साधारण वर्ग के कुछ लोग जो यह कहते हैं कि—

अवलिया को अल्लाह तआला ने यह शक्ति प्रदान की है कि चाहें तो तक़दीर को बदल डाले, जिसकी तक़दीर में औलाद नहीं लिखी है उसको औलाद दे देवें, जिसकी आयु पूरी हो चुकी है उसकी बढ़ा दें, तो यह बातें कुछ भी सही नहीं हैं, बल्कि इसे यूं समझना चाहिए कि अल्लाह अपने हर बंदे की दुआ कभी स्वीकार भी कर लेता है पर औलिया एवं अंबिया की अधिकतम दुआएँ स्वीकार कर लेता है किन्तु दुआ की क्षमता देना भी उसी के अधिकार में है तथा स्वीकार करना भी, तथा दुआ भी करना एवं मुराद भी मिलनी दोनों बातें तक़दीर में लिखी हैं तक़दीर से बाहर कोई काम संसार में नहीं हो सकता और किसी को कोई शक्ति नहीं, हर मनुष्य बड़ा हो अथवा छोटा, नबी हो या वली, इसके अतिरिक्त कि अल्लाह से मांगें और उसके दरबार में दुआ करें और कोई शक्ति नहीं रखता फिर उस मालिक ही को यह अधिकार है, चाहें तो अपनी कृपा से उसे स्वीकार कर ले और चाहे तो अपनी हिकमत के आधार पर स्वीकार न करे। मिशकात के बाबुत्तवक्कुल वस्सब्र यानी अल्लाह पर भरोसा एवं संतोष करने के बयान में लिखा है कि [पृ० ९१] अम्र बिन आस के माध्यम से इब्ने माजा ने अपनी किताब में लिखा है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया—निसंदेह मनुष्य के हृदय के लिए प्रत्येक मैदान की ओर राहें हैं, फिर यदि कोई मनुष्य अपने हृदय को सभी राहों की ओर डाल दे, फिर तो अल्लाह तआला इसकी परवाह

नहीं करता कि उसे किस जंगल में बरबाद कर दे, और जो मनुष्य अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए सभी राहों का निरीक्षक होता है।"

अर्थात् जब मनुष्य को किसी चीज़ की खोज होती है या किसी कष्ट में पड़ जाता है तो उसके दिल में हर तरफ भावनाएँ दौड़ती हैं, फलाने पैग़म्बर को पुकारिए फलाने इमाम की सहायता चाहिए, फलाने पीर अथवा शहीद की मन्नत मानिये, फलानी परी को मानिये फलाने ज्योतिषी अथवा रम्माल से पूछिए, फलाने मुल्ला से फाल खोलाइए। इस प्रकार जो मनुष्य प्रत्येक भावना के पीछे पड़ा रहता है तो अल्लाह तआला उससे अपनी मान्यता की निगाह फेर लेता है तथा उसको अपने सच्चे बंदों में नहीं रखता, अल्लाह के प्रशिक्षण, और निर्देश की राह से दूर हो जाता है, तथा इसी प्रकार अपनी उन्हीं भावनाओं के पीछे दौड़ता, ही दौड़ता बरबाद हो जाता है, कोई नास्तिक हो जाता है, कोई धर्मभ्रष्ट, [पृ० ९२] कोई मुशरिक और कोई सभी का इनकार करने वाला, परन्तु जो अल्लाह पर भरोसा करता है, और भावना के पीछे नहीं पड़ता तो अल्लाह तआला उसको अपने मक़बूल (प्रिय) लोगों में गिन लेता है और उसपर निर्देश (हिदायत) की राह खोल देता है तथा उसके हृदय को ऐसी शांति एवं सुख प्रदान करता है कि जो अनेक भावनाएं रखने वालों को कभी नहीं मिल सकता और जिसके भाग्य में जो कुछ लिखा है वह उसे मिल कर रहेगा, परन्तु अनेक भावनाओं के पीछे पड़ने वाला मुफ्त में शोक उठाता है, और अल्लाह पर भरोसा करने वाला शांति और सुख से उसे पा लेता है।

मिशकात की किताबुद्दावात (यानी दुआएँ मांगने के बयान) में लिखा है कि इमाम तिर्मिजी ने हज़रत अनस के माध्यम से बयान

किया है कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि अपनी जरूरत की सभी चीजें अपने रबसे मांगे यहां तक कि नमक भी उसी से मांगे और यदि जूती की डोरी टूट जाय तो वह भी उसी से मांगे।

अर्थात अल्लाह तआला को दुनिया के बादशाहों के समान न जाने कि बड़े बड़े काम तो स्वयं करते हैं और छोटे छोटे कार्य नौकरों चाकरों जैसे अन्य लोगों को सौंप देते हैं इस कारण लोगों को छोटे छोटे कामों में इन्हीं से अनुरोध करना पड़ता है [पृ० ९३] परन्तु अल्लाह के यहां ऐसा निजाम नहीं है बल्कि वह ऐसा सर्वशक्तिमान है कि स्वयं ही एक क्षण में छोटे बड़े करोड़ों काम ठीक कर सकता है और उसके राज्य में किसी की शक्ति नहीं, अतः छोटी भी चीज उसी से मांगना चाहिए क्योंकि कोई अन्य व्यक्ति छोटी बड़ी कोई भी चीज़ नहीं दे सकता है।

मिशकात के बाबुलखिलाफत वलइमारत (यानी खिलाफत एवं शासन) के बयान में लिखा है कि इमाम बुखारी एवं इमाम मुसलिम ने अबू हुरैरा के माध्यम से बयान किया है कि जब यह आयतः

(यानी अपनी विरादरी को जो तुझसे नाता रखते हैं उन्हें डरादे) तो नबी करीम स० ने अपने नाते वालों को पुकारा, सामान्यता से भी पुकारा और विशेषता से भी पुकारा, आपने फरमाया : हे काब बिन लुवै की औलाद ! अपनी जानों (प्राणों) को आग (जहन्नम) से बचाओ क्योंकि निःसंदेह अल्लाह के यहां से तुम्हारे लिये कोई अधिकार नहीं रखता; या आपने यूं फरमाया कि मैं अल्लाह के यहां तुम्हारे कुछ काम नहीं आऊंगा।

और हे मुर्रह बिन काब की औलाद ! तुम अपने आपको आग

(यानी जहन्नम) से बचाओ [पृ० ६४] क्योंकि निःसंदेह मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा।

और हे अब्दे शम्स की औलाद ! अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ क्योंकि अल्लाह के यहाँ मैं तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा।

और हे अब्दे मनाफ की औलाद ! तुम अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ क्योंकि अल्लाह के यहाँ मैं तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा।

और हे हाशिम की औलाद ! तुम अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ क्योंकि मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा।

और हे अब्दुल मुत्तलिब की औलाद ! तुम अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ क्योंकि मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा।

और हे फातमा ! तू अपने को जहन्नम की आग से बचा।

और मुझसे मेरा माल जितना चाहे माँग ले, मैं अल्लाह के यहाँ तुम्हारे कुछ काम न आऊँगा। [पृ० ९५]

अर्थात जो लोग किसी महापुरुष के नाते में लगते हैं उनको उसके सहयोग पर भरोसा होता है, और इसी घमंड में आकर अल्लाह का डर कम रखते हैं, इसी कारण अल्लाह तआला ने अपने नबी को

फरमाया कि अपने नाते वालों को डरा देवें, तो उन्होंने सबको यहां तक कि अपनी बेटी तक को खोल कर सुना दिया कि नाता का हक़ अदा करना केवल उसी चीज़ में हो सकता है जो अपने अधिकार में हो, इसीलिए आपने फरमाया यह मेरा माल हाजिर है इसमें मेरी तरफ से कोई कंजूसी नहीं है, पर अल्लाह के यहां का मामला मेरे अधिकार से बाहर है वहां मैं किसी की सहायता नहीं कर सकता और किसी का वकील नहीं बन सकता, अतः वहां का मामला प्रत्येक स्वयं ठीक करे तथा जहन्नम से बचने का उपाय हर कोई कर ले।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि केवल किसी बुज़ुर्ग (महापुरुष) का नाता अल्लाह के यहां कुछ काम नहीं आता अतः जब तक अल्लाह ही से मामला साफ न करे कोई काम नहीं आ सकता।

—: ० :—

चौथा अध्याय

इबादत में शिर्क करने की बुराई के बयान में

इबादत अथवा बन्दगी उन कामों को कहते हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अपने सम्मान के लिए बताए हैं, अतः इस अध्याय में इसका वर्णन है, कि कुरआन [पृ० ९६] एवं हदीस में अल्लाह के सम्मान के लिए कौन से काम बताए गए हैं ? ताकि किसी और के लिये वह काम न किया जाय जिससे कि शिर्क लाजिम आवे ।

इबादत केवल अल्लाह ही के लिए है—

अल्लाह तआला ने सू० हूद में फरमाया है !

और निःसंदेह हमने नूह (नबी) को उनकी कौम की तरफ भेजा ताकि वह कह दें कि मैं तुमको इस बात से साफ साफ डराता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करो, निःसंदेह मैं तुम पर दुःख के दिन की मार से डरता हूँ ।

अर्थात मुसलमानों तथा काफिरों में मुकाबला हजरत नूह ही के समय से आरम्भ हुआ है, अतः उसी समय से इस बात पर मुक़ाबला है कि अल्लाह के नेक बन्दे यही कहते आए हैं कि अल्लाह के सम्मान की तरह किसी और का सम्मान नहीं होना चाहिए, तथा जो काम उसके सम्मान के हैं उन्हें अन्य लोगों के लिए न कीजिए ।

अल्लाह तआला ने सू० फुस्सिलत में फरमाया है—

मत सजदा करो सूर्य को, और न चाँद को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उनको पैदा किया है [पृ० ९७] अगर तुम उसी के बन्दे बनना चाहते हो।

अर्थात जो व्यक्ति चाहे कि अल्लाह ही का बन्दा बने तो उसी को सजदा करे, किसी चाँद, एवं सूर्य को सजदा न करे।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि हमारे दीन (धर्म) में यही आदेश है कि सजदा केवल खालिक़ (पैदा करने वाले) को करना चाहिए, उसी का हक़ है।

अत: किसी मख़लूक़ (प्राणी) को नहीं करना चाहिए मख़लूक़ (प्राणी) होने में चाँद. सूर्य, तथा नबी एवं वली बराबर हैं, परन्तु यदि कोई यह कहे कि अगले धर्मों में लोग किसी मख़लूक़ (प्राणी) को भी सजदा करते थे।

उदाहरण के लिए फरिश्तों ने हज़रत आदम को सजदा किया था, तथा हज़रत याक़ूब ने हज़रत यूसुफ़ को तो हम भी यदि किसी महापुरुष (बुजुर्ग) को सजदा कर लें तो कोई हरज नहीं।

किन्तु यह बात गलत है, क्योंकि आदम के समय में लोग अपनी बहनों से निकाह कर लेते थे फिर इस तरह का प्रमाण देने वालों को अपनी बहनों से शादी भी करना चाहिए।

वास्तव में बात यह है कि बन्दे को अल्लाह का आदेश मानना चाहिए, जब उसने जिस चीज़ का आदेश दिया उसको जान व दिल से स्वीकार कर लेना चाहिए, और यह प्रमाण न लाए कि अगले लोगों पर तो यह आदेश नहीं था फिर हम पर क्यों हुआ, इसलिए कि इस तरह का प्रमाण लाने से आदमी काफिर हो जाता है।

उसका उदाहरण यह है कि एक बादशाह ने अपने देश में एक

समय के लिए कोई आदेश जारी किया फिर उसके बाद एक दूसरा आदेश जारी किया।

इस पर यदि कोई यह कहने लगे कि हम पहले ही आदेश पर चलेंगे पिछला आदेश नहीं मानते [पृ० ९८] तो वह विद्रोही होगा।

अल्लाह के अतिरिक्त किसी को पुकारना शिर्क है :

अल्लाह तआला ने सू० जिन्न में फरमाया—

और निःसंदेह सजदे केवल अल्लाह के लिए हैं, अतः अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।

और जब अल्लाह का बन्दा खड़ा होता है ताकि उसको पुकारे तो ऐसा लगता है कि लोग उस पर अभी ठठ हो जाएँगे।

(हे नबी !) आप कह दें कि मैं केवल अपने रबको पुकारता हूँ और किसी को उसका शरीक नहीं समझता।

अर्थात जब अल्लाह का कोई बन्दा अपने पवित्र हृदय से उसको पुकारता है तो मूर्ख लोग यह समझने लगते हैं कि यह तो महान हो गया, यह जिसको जो चाहे दे देवे, और जिससे जो चाहे छीन ले, इसी आशा में उसके पास भीड़ लगा लेते हैं।

पर इस बन्दा को चाहिए कि सच्ची बात बयान कर दे कि संकट में पुकारना अल्लाह का हक़ है लाभ और हानि की आशा उसी से करनी चाहिए इसलिए कि यह व्योहार किसी और से करना शिर्क है, और शरीक एवं शिर्क दोनों से मैं अप्रसन्न हूँ, फिर यदि कोई यह चाहे कि यह व्योहार मुझसे करे और मैं उससे प्रसन्न रहूँ यह कभी भी सम्भव नहीं है।

[पृ० ९९] इस आयत से ज्ञात हुआ कि सम्मान के लिए खड़ा होना, उसको पुकारना, तथा उसका नाम जपना उन्हीं कामों में से है जिनको अल्लाह तआला ने केवल अपने सम्मान के लिए विशेष कर रखे हैं, किसी और से ऐसा व्योहार करना शिर्क है।

अल्लाह के शआइर (कर्मकाण्ड) का सम्मान

अल्लाह तआला ने सू० हज में फरमाया—

कि लोगों में हज्ज करने की घोषणा कर दे कि लोग तेरे पास पैदल चलकर आवें तथा दुबले-दुबले ऊंटों पर सवार होकर, वे दूर दूर के रास्तों से चले आते हैं।

ताकि अपने लाभ की जगहों पर आ पहुंचें, और अल्लाह के नाम को कुछ निश्चित दिनों में उन चीजों पर लें जो उन्हें अल्लाह ने प्रदान किया है यानी चौपाए पशुओं पर, फिर उसमें से स्वयं खाओ और बदहाल फकीर को खिलाओ।

फिर उन्हें चाहिए कि अपने मैल कुचेल को उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें तथा प्राचीन घर का तवाफ करें (चक्कर लगाएं)।

अर्थात अल्लाह तआला ने कुछ स्थान अपने सम्मान के लिए निश्चित कर रखें हैं, [पृ० १००]।

जैसे काबा[1] , अरफात[2] , मुज़दलिफ़ा[3] , मिना[4] , सफामरवा[5] , मक़ामे इब्राहीम[6] , तथा पूरी मस्जिदुल हराम[7] बल्कि पूरा मक्का

1—काबा वह पवित्र स्थान है जो मक्का शहर में स्थित है यही मुसलमानों का क़िबला है हर जगह के मुसलमान इसी की

मुकर्रमा, बल्कि पूरा हरम् तथा लोगों के दिलों में वहाँ जाने की ऐसी कामनाएं डाल दी हैं कि लोग दूर दूर से हर प्रकार से जाते हैं चाहे

तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं प्राचीन काल में अल्लाह के आदेशानुसार हज़रत इब्राहीम और उनके पुत्र इस्माईल ने इस घर की स्थापना की थी।

2—मक्का शहर से बाहर पूरब की तरफ लगभग १० किमी० की दूरी पर एक बहुत बड़े मैदान को अरफात कहते हैं हाजी लोग यहाँ ज़िलहिज्जा की ९ तारीख को आते हैं। यहाँ हाजिर होना अनिवार्य है अगर कोई उस तारीख को यहाँ नहीं आ सका तो उसका हज नहीं होगा।

3—मक्का से लगभग ६ किमी० की दूरी पर पूरब तरफ एक मैदान का नाम है अरफात जाते हुए रास्ते में पड़ता है अरफात से हाजी लोग लौट कर यहाँ रात को ठहरते हैं।

4—मक्का से मिला हुआ पूरब की ओर पहाड़ों के बीच में घिरा हुआ मैदान है यहीं हाजी लोग कुरबानी करते हैं और कुरबानी के बाद दो या तीन दिन रहते हैं इसी मैदान में शैतान को कंकारी मारते हैं।

5—सफा मरवा काबा के पास ही दो छोटे छोटे टीलों का नाम है इन दोनों टीलों के बीच में हज और उमरा करने वाले लोग सात चक्कर लगाते हैं।

6—पत्थर के एक छोटे टुकड़े को जिस पर हजरत इब्राहीम के पांव का निशान है मकामे इब्राहीम हैं।

7—काबा के चारों तरफ से नमाज़ के लिए जो मस्जिद बनाई गई है उसको मस्जिदे हराम कहते हैं। (अनुवादक)

पैदल चलकर आएँ और चाहे सवारी द्वारा, सफ़र का कष्ठ उठाते हुए मैले कुचैले होकर वहाँ पहुँचते हैं, और उसके नाम पर वहाँ पशुओं को बलिदान (ज़ब्ह) करते हैं, और अपनी मन्नतें पूरी करते हैं, और उसके घर का तवाफ़ करते हैं और अपने मालिक का जो सम्मान दिल में भरा रहता है वहाँ जाकर अच्छी तरह प्रकट करते हैं कोई चौखट को चूमता है कोई दरवाजे के सामने दुआ कर रहा है कोई काबा का परदा पकड़ कर विनय कर रहा है, कोई उसके पास एतकाफ के इरादे से बैठकर रात दिन अल्लाह की याद में मशगूल (व्यस्त) है, कोई अदब से खड़ा होकर उसको देख ही रहा है।

बहरहाल इस प्रकार के काम अल्लाह के सम्मान में करते हैं और अल्लाह उनसे प्रसन्न होता है, और उनको दीन एवं दुनिया का लाभ मिलता है।

अतः इस प्रकार के काम किसी और के सम्मान में नहीं करना चाहिए, किसी समाधि (क़ब्र) पर या चिल्ला पर या किसी के थान पर दूर-दूर तीर्थ यात्रा करना, तथा सफर कर कष्ट और दुःख उठा कर मैले कुचैले होकर वहाँ पहुँचना, वहाँ जाकर जानवर चढ़ाना मन्नतें पूरी करना, तथा किसी समाधि या मकान का तवाफ (चक्कर) करना और उसके आसपास के जगल का आदर करना अर्थात वहाँ शिकार न करना पेड़ न काटना घास न उखाड़ना इस प्रकार के और अन्य काम करना जिनसे दीन व दुनिया के लाभ की आशा करना [पृ० १०१] यह सब शिर्क की बातें हैं इनसे बचना चाहिए, क्योंकि यह व्योहार, पैदा करने वाले ही के साथ होना चाहिए किसी मखलूक़ (प्राणी) की यह शान नहीं कि जिससे यह व्योहार किया जाय।

अल्लाह तआला ने सुरह अनआम में फरमाया—

या पाप की चीज जो प्रसिद्ध की गई हो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की करके।

अर्थात जिस प्रकार सुअर, रक्त, तथा मुरदार अपवित्र एवं हराम हैं इसी प्रकार वह जानवर भी अपवित्र और हराम है कि जो स्वयं पाप का रूप धारण कर रहा है। इसलिए कि वह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को ठहराया गया है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि किसी के नाम से कोई जानवर नहीं विशेष करना चाहिए और यदि ऐसा किया जाय तो वह जानवर हराम एवं नपाक (अपवित्र) है।

इस आयत में इसका कोई वर्णन नहीं है कि यदि उस जानवर को जब्ह करते समय किसी मखलूक का नाम लीजिए तभी हराम हो, बल्कि आयत में केवल इसका वर्णन है कि मखलूक के नाम पर जहाँ कोई जानवर विशेष किया जैसे यह गाय सय्यद अहमद कबीर की है या यह बकरा शेख सिद्दू का है तो वह हराम हो जाता है, फिर कोई भी जानवर हो चाहे वह मुर्गी हो या ऊँट किसी भी मख़लूक़ के नाम का कर दीजिए, वली, नबी, बाप दादा भूत अथवा परी के नाम का सब हराम और नापाक है, तथा ऐसा करने वाले पर शिर्क साबित हो जाता है।

[पृ० १०२] अल्लाह तआला ने सू० यूसुफ में फरमाया—

(हजरत यूसुफ ने जेलखाना में अन्य कैदियों से कहा) हे जेलखाने के साथियो ! क्या अलग अलग अनेक मालिक अच्छे हैं या एक शक्तिशाली अल्लाह।

और अल्लाह के अतिरिक्त जिनकी तुम पूजा करते हो वे केवल

ऐसे नाम हैं जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने रखा है, अल्लाह तआला ने उसका कोई प्रमाण नहीं उतारा है, केवल अल्लाह ही का आदेश चलेगा उसने तो यही आदेश दिया है कि केवल उसी की पूजा की जाय, और यही ठोस धर्म है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

अर्थात पहली बात तो यह है कि बन्दे के लिये अनेक मालिकों का होना बहुत हानि पहुँचाता है। बल्कि एक शक्तिशाली मालिक होना चाहिए जो उसकी सभी आशायें पूरी कर दे, और उसके सारे कामकाज बना दे।

दूसरी बात यह है कि मालिकों की कोई वास्तविकता भी नहीं, वह वास्तव में कोई चीज़ नहीं हैं बल्कि आप लोग स्वयं ही यह भावना रखते है कि वर्षा करना किसी और के अधिकार में है, बीज उगाना किसी और के अधिकार में है, तथा संतान कोई और देता है, स्वास्थ कोई और, फिर आप स्वयं ही उनके नाम रख लेते है कि फलाने [पृ० १०३] काम के अधिकारी का नाम यह है और फलाने का यह, फिर आप ही स्वयं उनको मानते हैं और उन कामों के अवसर पर पुकारते हैं।

फिर इस प्रकार एक समय बीत जाने के बाद यह बात प्रचलित हो जाती है यद्यपि वे सब अपनी गलत भावनाओं में हैं उनकी कोई असलियत नहीं वहाँ न तो अल्लाह के अतिरिक्त कोई है और न तो किसी का यह नाम है और यदि किसी का यह नाम है भी तो किसी कामकाज में उसका कोई हस्तक्षेप नहीं है।

अतः यह सब भावना ही भावना है इस नाम का कोई व्यक्ति वहाँ मालिक और अधिकारी नहीं है। जो इन कामों का अधिकारी है उसका नाम अल्लाह है, मुहम्मद स० अथवा अली नाम नहीं है, और जिसका नाम मुहम्मद (स०) अथवा अली है वह किसी चीज

का अधिकारी नहीं।

तो ऐसा व्यक्ति कि जिसका नाम मुहम्मद या अली हो और उसके अधिकार में संसार के सब काम काज हों, वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं यह तो अपनी भावना है, और अल्लाह तआला ने तो इस प्रकार की भावनाएँ रखने का आदेश नहीं दिया है, किसी और का आदेश उसके सामने माना नहीं जा सकता, बल्कि अल्लाह ने तो ऐसी भावनाएँ करने से रोका है, और ऐसा कौन है कि जिसके कहने से इन बातों को मान लिया जाय? असल दीन यही है कि अल्लाह ही के आदेशानुसार चलिए किसी और का आदेश उसके मुकाबिल कभी न मानिए, किन्तु अधिकतर लोग यह राह नहीं चलते बल्कि अपने पीरों की रीतियों को अल्लाह के आदेश से बढ़ कर समझते हैं। यह भी एक प्रकार का शिर्क है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि किसी की राह व रीति को मानना और उसी के आदेश को अपनी प्रमाण समझना यह भी उन्हीं बातों में से है जिनको अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिए विशेष कर रखा है [पृ० १०४] फिर यदि कोई यह व्योहार किसी मख़लूक से करे तो उस पर भी शिर्क साबित होता है। अल्लाह का आदेश बन्दो तक पहुँचने का मार्ग केवल रसूल की सूचना पर आधारित है, अतः यदि कोई किसी इमाम, या मुजतहिद, या गौस एवं क़ुतुब या मौलवी एवं मशाइख, या बाप दादा, या बादशाह एवं वजीर या पादरी एवं पंडित की बात को और उनकी रीति, रस्म को रसूल के फरमान से बढ़ कर समझे, और आयत एवं हदीस के मुक़ाबले में अपने पीर, एवं उस्ताद (गुरू) की बात को प्रमाण बनाए, या स्वयं नबी को यूं समझे कि शरीअत (धर्मशास्त्र) उन्हीं का आदेश है उनका जो मन चाहता था अपनी ओर से कह देते थे और वही बात उनकी उम्मत (मानने वालों) पर अनिवार्य हो

जाती थी, तो ऐसी बातों से शिर्क साबित होता है बल्कि अस्ल हाकिम अल्लाह तआला है और नबी (स०) सूचित करने वाला है फिर जो किसी की बात उसकी सूचना अनुसार हो उसे मानिए, और जो उसके अनुसार न हो न मानिए।

इबादत में शिर्क करने से सम्बन्धित नबी स० का उपदेश :

मिशकात के बाबुल क़याम में लिखा है कि—

इमाम तिर्मिजी ने हजरत मुआबिया के माध्यम से बयान किया कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया कि जो व्यक्ति इससे प्रसन्न हो कि लोग उसके सामने चित्र के समान खड़े रहें तो उसको अपना ठिकाना आग (जहन्नम) में बना लेना चाहिए।

[पृ० १०५] अर्थात जो व्यक्ति चाहे कि उसके सामने लोग हाथ जोड़ कर अदब से खड़े रहें न हिलें न डुलें न बोलें, न इधर उधर देखें बल्कि चित्र की तरह बन जावें, तो वह व्यक्ति जहन्नमी है, क्योंकि वह खुदाई का दावा रखता है। जो सम्मान अल्लाह के लिए विशेष है कि उसके बन्दे उसके सामने नमाज़ में अदब से खड़े होते हैं, वह यही काम अपने लिए चाहता है।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि केवल किसी के सम्मान के लिये उसके सामने अदब से खड़े रहना उन्हीं कामों में से है कि जिनको अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिए विशेष कर रखा है, अतः किसी और के लिए ऐसा नहीं करना चाहिए।

मिशकात के किताबुल फितन (यानी फितनों के बयान) में

लिखा है कि : इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत सौबान के माध्यम से नक़ल किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया "क़यामत (प्रलय) नहीं आएगी यहां तक कि हमारी उम्मत के अनेक क़बीले (जातिया) मुशरिकों से जा मिलेंगे और यहां तक कि मेरी उम्मत के अनेक जातियां थानों को पूजने लगेंगी ।"

अर्थात शिर्क दो प्रकार का होता है, एक तो यह कि किसी के नाम का रूप बना कर पूजे इसको अरबी में सनम कहते हैं (यानी मूर्ति) ।

और दूसरे यह कि किसी थान को माने [पृ० १०६] यानी किसी के मकान को या पेड़ को या किसी पत्थर या लकड़ी को या काग़ज को किसी का नाम देकर पूजे—इसको अरबी में वसन कहते हैं (यानी थान) ।

समाधि, किसी का चिल्ला नक़ली क़ब्र, किसी के नाम की लाठी, ताजिया, अलम, सद्दा, इमाम क़ासिम एवं पीर दस्तगीर की मेंहदी, इमाम का चबूतरह और उस्तादों एवं पीरों के बैठने के स्थान इसी में सम्मिलित हैं क्योंकि लोग उसका सम्मान करते हैं, तथा वहां जाकर उपहार (नज़रें) चढ़ाते हैं और मन्नतें (आशाय) मानते हैं इस प्रकार शहीद के नाम का ताक़, चिन्ह, और तोप जिसको बकरा चढ़ाते हैं और उसकी क़सम खाते । तथा इस प्रकार वह स्थान जो रोगों के नाम से प्रसिद्ध हैं जैसे सतीला का थान, अथवा मसानी का या भवानी का, या काली का, या कालिका का या त्रिही का, मतलब यह कि ये सब वसन (थान) हैं ।

और अल्लाह के नबी (स०) ने सूचित किया है कि जो मुसलमान क़यामत के करीब मुशरिक हो जाएँगे उनका शिर्क इसी

प्रकार का होगा क्योंकि वे ऐसी चीजों को मानेंगे। अन्य मुशरिकों के विपरीत जैसे हिन्दू या अरब के मुशरिकीन जो अधिकतर मूर्ति पूज्य हैं यानी मूर्तियों को मानते हैं।

इस तरह दोनों मुशरिक और अल्लाह से फिरे हुए और रसूल के दुश्मन हैं।

मिशकात के किताबुस्सैद वज्ज़बायय (यानी शिकार और जब्ह के बयान) में लिखा है कि इमाम मुस्लिम ने अबुत्तुफैल के माध्यम से नक़ल किया है कि हजरत अली ने एक किताब निकाली जिसमें यह लिखा था कि अल्लाह तआला की लानत (धिक्कार) हो ऐसे व्यक्ति पर जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के नाम से ज़ब्ह करे" [पृ० १०७]

अर्थात यदि कोई अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के नाम कोई जानवर करे तो वह मलऊन (यानी धिक्कारित) है हज़रत अली ने एक किताब में अल्लाह के रसूल को अनेक हदीसें लिख रखी थीं उन्हीं में से यह भी है।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि किसी के नाम से जानवर काटना यह भी उन्हीं कामों में से हैं, जिनको अल्लाह तआला ने अपने सम्मान के लिए विशेष कर रखे हैं, अतः उसी के नाम पर करना चाहिए किसी और के नाम पर करना शिर्क है।

मिशकात में कयामत के केवल बुरे ही लोगों पर आने के बयान में लिखा है कि : इमाम मुस्लिम ने हज़रत आइशा के माध्यम से नकल किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) फरमाते थे कि रात और दिन का ओर नहीं होगा यहाँ तक कि लात एवं उज्जा[1] की पूजा होने लगेगी।

ह० आइशा फरमाती हैं कि मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! [पृ० १०८] जिस समय अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी :

यानी अल्लाह वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा ताकि सारे धर्मों पर इसको ऊँचा कर दे चाहे मुशरिक लोग इसे पसन्द न करें (

(ह० आइशा फरमाती हैं) उस समय मैंने यह समझा कि यह पूरा हो चुका है और अन्तिम समय तक ऐसा ही रहेगा ।

यह सुनकर आपने फरमाया : निःसंदेह जबतक अल्लाह चाहेगा ऐसा ही रहेगा, फिर अल्लाह तआला एक अच्छी सी हवा भेजेगा जो हर उस व्यक्ति की जान निकाल लेगी जिसके दिल में एक राई भर भी ईमान होगा, फिर वही लोग बच रहेंगे जिनमें कोई भलाई न होगी और वे अपने बाप दादा के धर्म पर लोट जाएँगे ।"

अर्थात अल्लाह तआला ने सू० बराअत में फरमाया है कि : अल्लाह तआला ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चा धर्म देकर भेजा है ताकि उसको सभी धर्मों पर गालिब करे यद्यपि मुशरिक लोग बहुतेरा बुरा ही मानें ।"

तो ह० आइशा ने इस आयत से समझा कि इस सच्चे दीन का बल क़यामत तक रहेगा, लेकिन हज़रत स० ने फरमाया कि अल्लाह तआला जब तक चाहे उसी समय तक इसका बल बाक़ी रहेगा, फिर अल्लाह तआला स्वयं ही एक ऐसी पवन भेजेगा कि सभी अच्छे बन्दे जिनके दिल में थोड़ा सा भी ईमान होगा मर जावेंगे [पृ० १०९] और वही लोग रह जावेंगे जिनमें कुछ भलाई नहीं होगी, यानी न अल्लाह का सम्मान करेंगे न रसूल (स०) के मार्ग पर चलने का शौक़ होगा बल्कि बाप दादो की रीतियों को प्रमाण बनाएंगे । इस

तरह शिर्क में बढ़ जाएँगे क्योंकि अधिकतर पुराने बाप दादा मुशरिक जाहिल गुजरे हैं— जो कोई उसकी राह रसम को प्रमाण बनाए वह स्वयं मुशरिक हो जावे।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि अन्तिम समय में प्राचीन शिर्क भी प्रचलित होगा, तो अल्लाह के नबी के कहने के अनुसार हुआ, अर्थात् जिस प्रकार मुसलमान लोग अपने नबी वली, इमाम और शहीदों के साथ व्योहार करते हैं इसी प्रकार प्राचीन शिर्क भी फैल रहा है, तथा काफिरो के बुतों को भी मानते हैं और उनकी रीतियों पर चलते हैं उदाहरण के लिए ब्राह्मण से पूछना, शुगून लेना, साइत मानना स्तीला मसाने पूजना, हनुमान, लोना चमाईन, कलुवा पीर की दुहाई देना, होली, दीवाली का त्योहार करना नौरोज, एवं महरजान को खुशी करना क़मर दर अक़बर तहतश्शुआ को मानना यह सब रस्में हिंदुओं एवं मजूसियों की हैं जो मुसलमानों में प्रचलित हो गए हैं।

और इससे यह भी ज्ञात हुआ कि मुसलमानों में शिर्क की राह इसी प्रकार खुलेगी कि लोग कुरआन हदीस को छोड़कर बाप दादों की रस्मों के पीछे पड़ेंगे।

मिशकात में क़यामत के केवल बुरे लोगो पर आने के बयान में लिखा है कि इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्ला बिन उमर के माध्यम से नक्ल किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया [पृ० ११०]: दज्जाल निकलेगा, फिर अल्लाह तआला ईसा बिन मरयम को भेजेगा, जो उसको ढूंढेंगे, और फिर उसका नास कर देंगे, फिर अल्लाह तआला शाम देश की ओर से एक ठंडी हवा भेजेगा, जो हर उस व्यक्ति को मार डालेगी जिसके दिल में जर्रह भर भी इमान होगा, उसके पश्चात ऐसे बुरे लोग रह जाएँगे जो मूर्खता में पक्षी, और

फाड़ खाने वाले जानवरों के समान होंगे, न अच्छी बात को अच्छी समझेंगे, और न बुरी बात को बुरी जानेंगे, फिर शैतान भेष बदल कर उनके पास आवेगा और कहेगा क्या तुम लोगों को शर्म (लज्जा) नहीं आती ? फिर वे पूछेंगे कि तू हमें क्या आदेश देता है ?

तो वह उन्हें थानों के पूजने का आदेश देगा, और इसी में उनको उनकी रोजी मिलती रहेगी, तथा उनका जीवन अच्छी तरह से व्यतीत होगा।

अर्थात् अन्तिम समय में ईमानदार लोग मर जाएँगे और केवल मूर्ख [पृ० १११] लोग रह जावेंगे, रात दिन दूसरों का माल खा जाने की चिंता में रहेंगे, न भला समझेंगे न बुरा, फिर शैतान कहेगा कि केवल अधर्म हो जाना बड़ी शर्म की बात है—इससे लोगों में दीन की कामना पैदा होगी पर अल्लाह और उसके रसूल की बातों पर न चलेंगे, बल्कि अपनी बुद्धि से धर्म की राहें निकालेंगे, इस प्रकार शिर्क में पड़ जाएँगे और इस दशा में भी उनको विस्तार रोजी और जीवन का सुख प्राप्त हो जायेगा, और इसी कारण वे और अधिक शिर्क में पड़ेंगे यह सोचकर कि जितना हम उनको मानते जा रहें हैं उतना ही वह हमारी आशायें (मुरादें) पूरी करता जा रहा है।

अतः अल्लाह तआला के आजमाइश से डरना चाहिए इसलिए कि कभी बन्दा शिर्क में पड़ा होता है, और अल्लाह के अतिरिक्त से मुरादें माँगता है, और अल्लाह उसके बहलाने को उसकी मुरादें पूरी करता है, और वह यह समझता है कि मैं सच्ची राह पर हूँ।

अतः मुराद (आशायें) मिलने न मिलने का कुछ एतबार न कीजिए और इस कारण तौहीद का सच्चा दीन न छोड़ दीजिए ।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि आदमी पाप में कितना ही डूब जाए, और बिलकुल बेशर्म बन जाए, तथा पराया माल खा जाने में कोई कोताही न करे, भलाई बुराई में कोई भेदभाव न रखे, तो भी शिर्क करने एवं अल्लाह के अतिरिक्त किसी को मानने से अच्छा है, क्योंकि शैतान उन बातों को छुड़ा कर यह बात सिखाता है ।

मिशकात में "क़यामत केवल बुरे लोगों पर आने के बयान में लिखा है कि [पृ० ११२) इमाम बुखारी एव मुस्लिम ने हजरत अबू हुरैरह के माध्यम से नकल किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया कि कयामत नहीं आएगी यहाँ तक कि दौस (कबीला) की महिलाओं के चूतड़ जीखलसा (नामी मूर्ति) के पास न हिलने लगे ।"

अर्थात् दौस अरब के एक कबीला का नाम है उनमें एक मूर्ति थी उसका नाम "जी खलसा" था वह अल्लाह के नबी के समय में नष्ट हो गया था पर आपने फरमाया कि कयामत के निकट उसको लोग फिर मानने लगेंने, और महिलाएँ उनके चारों ओर चक्कर लगाएँगी इससे आपको उनके चूतड़ हिलते दिखाई देंगे ।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि अल्लाह के घर के अतिरिक्त किसी और का चक्कर लगाना शिर्क की बात और काफिरों की रस्म है इसे कभी नहीं करना चाहिए ।

[पृ० ११३] पाँचवा अध्याय

स्वभाव (आदात) में शिर्क करने की बुराई के बयान में

अर्थात् इस अध्याय में उन आयतों और हदीसों का वर्णन है कि जिससे यह प्रमाणित हो कि आदमी अपने दुनिया के कामों में जैसा व्योहार अल्लाह से रखता है, यानी जिस तरह अनेक प्रकार से उसका सम्मान करता है, वैसा ही व्योहार किसी और से न करे।

अल्लाह तआला ने सू० निसा ने फरमाया—

वह लोग अल्लाह के अतिरिक्त केवल नारिओं और अड़ियल शैतान को पुकारते है। अल्लाह तआला ने उसको धिक्कार दिया और शैतान ने कहा कि निसंदेह मैं तेरे बन्दों में से एक वर्ग को निकाल लूंगा और उनको अवश्य पथभ्रष्ट कर दूंगा और उनको अनेक भावनाओं में डाल दूंगा और मैं उन्हें ऐसा आदेश दूंगा कि वे पशुओं के कान काटेगे, और ऐसा आदेश दूंगा कि अल्लाह के बनाए हुए रूप को बदल डालेंगे, और जिसने अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना सहयोगी बनाया तो [पृ० ११४] वह बड़े घाटे में पड़ेगा क्योंकि वह उन्हें बचन देता है और भावनाओं में डालता है, और शैतान उनसे जो बचन देता है वह केवल धोखा है, उन सब का ठेकाना जहन्नम है, उससे छुटकारा नहीं पावेगे।

अर्थात् जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को पुकारते हैं वे अपने विचार में नारियों की बलपर करते हैं। फिर कोई हजरत

बीबी का नाम ठहरा लेता है कोई बीबी असिया, कोई बीबी उतावली, कोई लाल परी कोई काली परी, कोई स्तीला, एवं मसानी अथवा काली।

बहर हाल वे ऐसे ही भावनाएँ रखते हैं और वास्तव में वहाँ न कोई नारी है और न कोई नर केवल अपनी भावना और शैतान का विश्वास और जो कभी सर पर चढ़ कर बोलता है तथा कभी कोई लीला दिखा देता है तो शैतान है अतः उनके सभी भेंट उपहार उसी को पहुँचते हैं, वे अपने विचार में तो नारियों को देते हैं और वास्तव में शैतान ले लेता है। और उनको उससे कुछ लाभ नहीं मिलता न दीन का न दुनिया का, क्योंकि शैतान तो अल्लाह के दरबार से भगाया हुआ है तो उससे दीन का क्या लाभ होगा? फिर मनुष्य का दुश्मन उनका कब भला चाहेगा? [पृ० ११५] बल्कि वह तो अल्लाह के सम्मुख कह चुका है कि तेरे बहुत से बन्दों को अपना बन्दा बनाऊँगा और उनको पथभ्रष्ट करूँगा इस प्रकार वे अपने विचारों को मानेंगे और मेरे नाम से जानवर रखेंगे उनपर मेरे लिए भेंट चढ़ाने का चिन्ह लगाएँगे जैसे जानवरों का कान चीड़ना अथवा काटना उसके गले में नाड़ा डालना माथे पर मेंहदी लगानी मुँह पर सेहरा बाँधना मुँह के अन्दर पैसा रखना।

मतलब यह कि किसी जानवर पर इस बात का कोई भी चिन्ह लगा दीजिए कि यह फलाने की भेंट है वह सब इसी में सम्मिलित है।

और शैतान ने यह भी कहा है कि मैं उनको ऐसी बात भी सिखाऊँगा कि अल्लाह के बनाए हुए रूप को बदल डालेंगे, कोई किसी के नाम की चोटी रखेगा कोई किसी के नाम पर नाक, कान छेदेगा कोई दाढ़ी मुंडा कर सुंदरता दिखावेगा कोई भंव और पलकें

साफ करके फकीरी जतावेगा। यह सब शैतान के विश्वास और अल्लाह एवं रसूल के विरुद्ध हैं, तो जिसने अल्लाह जैसे करीम (कृपालु) को छोड़ कर शैतान जैसे दुश्मन की राह पकड़ी तो उसने स्पष्ट धोखा खाया, क्योंकि पहली बात तो यह है कि शैतान हमारा दुश्मन है, और दूसरी बात यह कि वह भ्रम डालने के अलावा कोई शक्ति भी नहीं रखता, तो वह यही करता है कि कुछ झूठे बचन देता है जैसे कि फलाने को मानोगे तो यह होगा और फलाने को मानोगे तो यूं होगा और दूर दूर की कामनाएँ जताता है कि इतने रुपए हों तो ऐसा बाग़ बने, और महल तैयार हो, परन्तु वह तो हाथ नहीं लगते और आदमी घबरा कर अल्लाह की राह भूल जाता है, और अन्य लोगों की ओर दौड़ने लगता है, [पृ० ११६] और होता वही है जो अल्लाह ने भाग्य में लिख दिया है—किसी के मानने न मानने से कुछ नहीं होता बल्कि यह सब शैतान का भ्रम है और उसकी धोखाबाजी, और इन बातों का प्रणाम यही है कि आदमी अल्लाह से फिर जाता है, और शिर्क में फँस जाता है, और बिलकुल दोज़ख़ी बन जाता है और शैतान के जाल में इस प्रकार फँस जाता है कि बहुतेरा छूटना चाहे पर कभी नहीं छूट सकता।

संतान में भी शिर्क हो सकता है :

अल्लाह तआला ने सू० आराफ में फरमाया—

अल्लाह तआला वह है जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि उससे चैन मिले फिर जब उसने उसको ढाँप लिया तो उसको हलका सा गर्भ हो गया, फिर उस प्रकार चलती रही फिर जब बोझ से भारी हो गई तो दोनों ने अपने मालिक को पुकारा। हे मालिक ! यदि तूने हमें अच्छा बच्चा प्रदान किया तो अवश्य हम तेरा उपकार मानने वाले होंगे और जब उसने उन्हें अच्छा बच्चा प्रदान कर दिया तो वे दोनों उसी में अल्लाह के

साझीदार बनाने लगे जो अल्लाह ने उन्हें दिया था। [पृ० ११७] अल्लाह तआला उनके साझी ठहराने से बहुत दूर है।"

अर्थात् पहले भी अल्लाह ही ने मनुष्य को पैदा किया था तथा उसी ने जोरू भी प्रदान किया, और पति पत्नी में प्रेम दिया, और मनुष्य का हाल यह है कि जब जब संतान की आशा होती है तो उसी को पुकारते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि संतान अच्छी रही तो अल्लाह का उपकार मानेंगे पर जब वह संतान दे देता है तो अन्य लोगों को मानने लगते हैं और उनको भेंट उपहार करते हैं, कोई किसी की समाधि पर ले जाता है कोई किसी के थान पर कोई किसी की चोटी रखता है, कोई किसी की बद्धी पहनाता है, कोई किसी की बेड़ी डालता है, कोई किसी का फकीर बनाता है, कोई नबी बख्श नाम रखता है, कोई अली बख्श, कोई इमाम बख्श, कोई पीर बख्श, कोई सतीला बख्श, कोई गंगा बख्श।

और अल्लाह तो उनके इस भेंट उपहार की कुछ परवाह नहीं करता क्योंकि वह तो बहुत बड़ा बेपरवाह है परन्तु वे स्वयं ही पतित हो जाते हैं।

खेती बाड़ी में भी शिर्क हो सकता है :

अल्लाह तआला ने सू० अनआम में फरमाया—

अल्लाह तआला ने खेती एव पशु की जाति से जो चीजें पैदा की हैं उनमें से लोगों ने एक भाग अल्लाह को लगा रखा है। तो वे अपने बिचार से कहते हैं कि यह भाग अल्लाह के लिए है, और यह हमारे शरीकों का है, फिर जो भाग उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं मिलता पर जो अल्लाह के लिए होता है वह उनके शरीकों को मिलता है, कितना बुरा फैसला करते हैं।

अर्थात् सारी खेती और चौपाए अल्लाह ही ने पैदा किए किसी और ने नहीं किया किन्तु उसमें से जिस प्रकार उसकी नियाज (भेंट) निकालते हैं उसी प्रकार औरों को भी भेंट उपहार करते हैं बल्कि औरों के उपहार का जितना ध्यान और आदर करते हैं उसके लिए वैसा नहीं करते हैं।

चौपायों में भी शिर्क हो सकता है :

अल्लाह तआला सू० अनआम में फरमाते हैं—

और वे केवल अपने विचार से कहते हैं कि यह खेती और चौपाए, इन पर प्रतिबंध लगा है. इनको केवल वही लोग खा सकते जिनको हम चाहेंगे, कुछ चौपाए ऐसे भी है जिनकी सवारी वर्जित है और कुछ चौपाए ऐसे हैं कि जिनपर अल्लाह का नाम नहीं लेते हैं, यह सब अल्लाह पर झूठ बांधा है, वह उन्हें उनके झूठ का बदला जल्द ही देगा।"

अर्थात् लोग केवल अपने विचार से यह कह देते हैं कि फलानी चीज अछोती है [पृ० ११९] उसको फलाना खावे और फलाना न खाये और कुछ चौपायों पर लादने और सवारी करने से मना करते हैं कि फलाने की नियाज़ का है उसका आदर करना चाहिए और कुछ जानवरों को अल्लाह के नाम पर नहीं रखते हैं बल्कि किसी और के नाम पर रखते हैं, और फिर यह समझते हैं कि अल्लाह इन बातों से प्रसन्न होता है और मुरादें (आशायें) देता है पर यह सब झूठ है, और वे इसकी सज़ा पावेंगे।

अल्लाह तआला ने सू० माइदा में फरमाया—

अल्लाह तआला ने कोई बहीरा नहीं बनाया और नहीं साइबा, और न वसीला, और न हाम, किन्तु काफिर लोग अल्लाह पर झूठ

बोलते हैं, और उनमें अधिकतर लोग नहीं समझते हैं।

अर्थात् जो जानवर किसी के नाम पर रखते थे तो उसका कान फाड़ देते थे, उसी को बहीरा कहते थे, और जो सांड बनाकर छोड़ देते थे उसको साइबा कहते थे, और जो किसी की मन्नत मानते कि फलाने जानवर का बच्चा यदि नर हुआ तो उसको भेंट चढ़ा देंगे, फिर यदि नर व मादा एक साथ होते तो नर को भेंट न चढ़ाते इसलिए कि मादा के साथ मिलकर वह भी भेंट के योग्य नहीं रहा इसी मादा को वसीला कहते थे। और जिस जानवर की पीठ से दस बच्चे हो जाते उस पर लादना और चढ़ाना बन्द कर देते और उसी को हाम कहते थे।

इस विषय में अल्लाह तआला ने फरमाया कि यह सब बातें हमने नहीं बताई हैं इन सबको उन्होंने अपनी मूर्खता से [पृ० १२०] रीतियों में बदल डाला है।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि कोई जानवर किसी के नाम पर रखना उस पर उसका चिन्ह लगा देना और यह निश्चित कर देना कि फलाने की भेंट गाय होती है तथा फलाने की बकरी और फलाने की मुर्गी, यह सब मूर्खता की रस्में हैं तथा अल्लाह के आदेश के विरुद्ध भी है।

अल्लाह तआला ने सू० नहल में फरमाया—

तुम्हारी ज़बानें जो झूठी बातें बकती हैं उनके विषय में अल्लाह पर झूठ बोलने के लिए तुम यह न कहो कि यह हलाल है और यह हराम है, निःसंदेह जो लोग अल्लाह पर झठ बोलते हैं वे सफल नहीं होंगे।

अर्थात् अपनी ओर से यह झूठ मत बना लो कि फलाना काम कीजिए और फलाना काम न कीजिए इसलिए कि किसी काम का जायज़ अथवा ना जायज़ कर देना अल्लाह ही की शान है। इसमें अल्लाह पर झूठ बांधना है, और यह भावना रखना कि फलाने काम को यूं कीजिए तो मुरादें मिलती हैं और नहीं तो बाधा पड़ जाता है तो यह भावना ही ग़लत है क्योंकि अल्लाह पर झूठ बांधने से कभी आशायें नहीं मिलती।

इस आयत से ज्ञात हुआ कि मुहर्रम के महीना में पान नहीं [पृ० १२१] खाना चाहिए, लाल कपड़ा न पहनिए, हज़रत बीबी की सहनक मर्द न खाए और जब उनकी नियाज़ कीजिए तो उसमें फलानी फलानी तरकारिया अवश्य हों तथा मेंहदी एवं मिस्सी हो और उसको लौंडी न खावे और जिसने दूसरा विवाह किया हो वह भी न खावे और जो नीचे वर्ग का हो, या दुष्ट हो वह भी न खावे, और शाह अब्दुल हक़ का तोशा हलवा ही होता है और उसको ध्यान से बनाइए, तथा हुक्का पीने वाले को न दीजिए, और शाह मदार को भेंट पर मालीदा ही चढ़ाना चाहिए, और बूअली क़लन्दर की सेह मनी, और असहाबे कहाम की गोश्त रोटी, और विवाह में फलानी फलानी रस्में अवश्य होनी चाहिए तथा मृत्यु में फलानी फलानी और पति मृत्यु के बाद न आप दूसरा विवाह कीजिए और न किसी के विवाह में बैठिये न अचार डालिए, तथा फलाने लोग नीला कपड़ा न पहनें और फलाने लाल झूसी न पहनें. पर यह सब लोग झूठे तथा शिर्क में ग्रस्त हैं, और अल्लाह की होकुमत की शान में हस्तक्षेप करते हैं, क्योंकि वे अपना एक अलग धर्मशास्त्र बनाते हैं !

स्वभाव में शिर्क से सम्बन्धित कुछ हदीसें :

(नुजूम, रमल, फाल, एवं शकुन आदि)

मिशकात के बाबुल कहानत (यानी ज्योतिप) के बयान में लिखा है कि इमाम बुखारी और मुस्लिम ने ज़ैद बिन खालिद के माध्यम से नकल किया है कि नबी करीम (स०) ने हुदैबिया स्थान पर हमको सुब्ह की नमाज पढ़ाई, उसी रात को वर्षा हुई थी [पृ० १२२] और जब नमाज समाप्त हुई तो लोगों की ओर मुंह कर लिया, और फरमाया—क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे मालिक ने क्या कहा ? लोगों ने कहा अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आपने फरमाया तुम्हारे रब ने कहा है कि मेरे बन्दों में कुछ लोगों की सुबह इस दशा में हुई कि वे मुझ पर ईमान लाने वाले थे और कुछ लोगों की सुबह इस दशा ने हुई कि वे मेरा इनकार करने वाले (काफिर) थे जिसने तो यह कहा कि अल्लाह की कृपा और दया से हम पर वर्षा हुई है वह मुझपर ईमान लाने वाला है, और तारों के प्रभाव का इनकार करने वाला है पर जिसने यह कहा कि फलाने नक्षत्र से वर्षा हुई है तो वह मेरा इनकार करने वाला (काफिर) और तारों पर ईमान लाने वाला बना।"

अर्थात् यदि कोई संसार के काम काज को तारों के प्रभाव का परिणाम समझता है तो अल्लाह तआला उसको अपने न मानने वालों तथा तारों की पूजा करने वालों में गिनता है, और जो इन सब कामों का कारखाना अल्लाह की तरफ से समझता है उसको अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों में गिन लेता है।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि अच्छी बुरी घड़ी का मानना, तथा अच्छी बुरी तारीख [पृ० १२३] एवं दिन का मानना, और ज्योतिषी के कहने पर विश्वास करना शिर्क की बाते हैं इसलिए कि

यह सब ज्योतिष विज्ञान से सम्बन्ध रखती हैं, और ज्योतिष को मानना तारा पूजने वालों का काम है।

मिशकात के बाबुल कहानत यानी (ज्योतिष के बयान) में लिखा है कि—"अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया यदि किसी ने ज्योतिष विज्ञान की ऐसी कोई बात सीखी जिसको अल्लाह ने नहीं बयान किया है तो उसने जादू का एक भाग सीखा, ज्योतिषी काहिन है और काहिन जादूगर है और जादूगर काफिर है।"

अर्थात् अल्लाह तआला ने अपने कलामे पाक में तारों का भी वर्णन किया है, इसलिए कि उनमें अल्लाह की कुदरत एवं हिकमत प्रकट होती है तथा उनसे आकाश की सुन्दरता है, और शैतानों को उन्हीं से मार मार कर भगाते हैं।

पर यह बात नहीं बयान की कि संसार के कारखाने में उनका कोई हस्तक्षेप है और दुनिया की भलाई एव बुराई में उनका कोई प्रभाव है।

अतः जो कोई वह पहली बात छोड़कर उस दूसरी बात की पुष्टि (तहकीक) में पड़े और उससे जानकारी प्राप्त करके बताए, और जिस प्रकार ब्राह्मण भूत प्रेत से पूछ पूछ कर गैब की बातें बतलाता है जिसको अरबी में काहिन कहते हैं यह भी उसी प्रकार [पृ० १२४] ज्योतिष से मालूम करके गैब की बातें बताता है।

इस प्रकार वास्तव में नूजूमी (ज्योतिषी) एव काहिन की एक ही राह है, और काहिन तो जादूगरों के समान जिनों से दोस्ती करता है, और उनसे दोस्ती इस प्रकार पैदा करता है कि उनको मानिये, पुकारिए, तथा भूल दीजिए, और यह कुफ्र की बात है इसलिए ज्योतिषी काहिन तथा जादूगर कुफ्र की राहों पर चलते हैं।

फाल एवं शकुन की बुराई :

मिशकात के बाबुल कहानत में लिखा है कि इमाम मुस्लिम ने माई हफ़सा के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया "यदि कोई किसी हाथ की रेखा देखकर ग़ैब की बातें बताने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछे तो उसकी चालीस दिन की नमाज क़बूल नहीं होगी।"

अर्थात् जो कोई ग़ैब की बातें बताने का दावा रखता है यदि उसके पास कोई जाकर कुछ पूछे तो उसकी इबादत चालीस दिन तक पूरी नहीं होती, क्योंकि उसने शिर्क की बात की, और शिर्क सभी इबादतों का नूर खो देता है।

और ज्योतिष, रम्माल, जफ्फार, फाल देखने वाले, नाम निकालने वाले, तथा कश्फ एवं इस्तेखारा का दावा करने वाले इसमें सम्मिलित हैं। [पृ० १२५]

मिशकात के बाबुल फाल वत्तियरा (यानी फाल एवं शकुन लेने के बयान) में लिखा है कि इमाम अबू दाऊद ने ह० क़बीसा के माध्यम से बयान किया है कि नबी करीम (स०) ने फरमाया शकुन लेने के लिए जानवर उड़ाना, और फाल निकालने के लिए कुछ डालना तथा किसी तरह का शकुन लेना कुफ़्र की रस्मों में से है।"

मिशकात ही के उसी बाब में है कि इमाम अबूदाऊद ने अब्दुल्ला बिन मसऊद के माध्यम से लिखा है अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया—शकुन लेना शिर्क है, शकुन लेना शिर्क है, शकुन लेना शिर्क है।"

अर्थात अरब के लोगों में शकुग लेने का बहुत रवाज था, तथा इस पर बड़ा विश्वास था इसी कारण नवी करीम (स०) ने कई बार फरमाया कि यह शिर्क की बात है ताकि लोग इस आदत को छोड़ दें।

मिशकात के बाबुल फाल वत्तोयरा में लिखा है कि—इमाम अबूदाऊद ने साद विन मालिक के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया—पृ० १२६]

"कोई हामा नहीं है और न किसी को किसी का रोग लगता है, और न कोई चीज अशुभ होती है, अगर कोई चीज़ अशुभ हो सकता है तो घर है, तथा घोड़ा एव स्त्री है।"

अर्थात् अरब के जाहिलों में प्रसिद्ध था कि यदि कोई मारा जाय और कोई उसका बदला न लेवे तो उसके सिर की खोपड़ी से एक उल्लू निकल कर दोहाई देता फिरता है उसी को हाम्मा कहते हैं, इसके बारे में अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि यह बात गलत है।

इससे मालूम हुआ कि जो कोई यह कहे कि आदमी मर कर किसी जानवर का रूप धारण कर लेता है, तो वह झूठा है, और यह भी उन्हीं में प्रसिद्ध था कि कुछ रोग जैसे खुजली, कोढ़, एक से दूसरे को लग जाते हैं, तो फरमाया कि यह भी ग़लत है।

इससे यह भी मालूम हुआ कि लोगों में जो यह प्रसिद्ध है कि जिस बच्चे के चेचक निकल आए तो उससे दूर रहते हैं अन्य बच्चों को उसके पास नहीं जाने देते कि कहीं उसके भी न निकल आवे, तो यह कुफ्र की रस्म है इसको नहीं मानना चाहिए।

और यह भी उन्हीं में प्रसिद्ध है कि फलाना काम फलाने को

अशुभ हुआ और उसको फिर न आया, तो फरमाया कि यह भी ग़लत है।

और यदि इस बात का कुछ प्रभाव है तो तीन ही चीज़ों में है यानी घर, घोड़ा और स्त्री में।

इससे मालूम हुआ कि यह चीज़ें कभी नाबुवारक (अशुभ) भी होती हैं पर उसके [पृ० १२७] जानने का कोई माध्यम नहीं बताया कि जिससे यह जान लें कि यह शुभ है और यह अशुभ. इसलिए लोग यह कहते हैं कि जो घर शीर दहान, और जो घोड़ा तारा ललाट हो, और जो नारी कलजिब्बी हो वे अशुभ होते हैं, तो इस प्रकार की बातों का कोई प्रमाण नहीं है, बल्कि मुसलमानों को यह चाहिए कि इन बातों का कुछ बिचार न करें और जब नया घर लें या घोड़ा हाथ लगे या विवाह करें या लौंडी मोल लें तो अल्लाह से उसकी भलाई माँगें और उसकी बुराई से पनाह चाहें, और बाकी अन्य चीज़ों में इस प्रकार की भावनाएँ न दौड़ाएँ कि फलाना काम मुझे फिट आया और फलाना नहीं फिट आया।

मिशकात के बाबुल फाल वत्तेरा (यानी फाल एवं शकुन के बयान में लिखा है कि इमाम बुखारी ने अबू हुरैरह के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया —न किसी को किसी का रोग लगे, और न किसी मुर्दा की खोड़ो से उल्लू निकले तथा सफर भी कुछ नहीं है।"

अर्थात् अरब के जाहिलों में यह भी प्रसिद्ध था कि जिसको ऐसा रोग लग जावे कि खाता चला जाए और पेट न भरे, जिसको हकीम जूउल कल्ब कहते हैं, तो उनके बिचार में उस रोगी के पेट में कोई भूत वला घुस जाती है वही खाती चली जाती है, और उसको सफर

कहते थे, नबी करीम (स०) ने फरमाया कि यह बात गलत है कोई भूत बला नहीं है।

इससे ज्ञात हुआ कि जो लोग कुछ रोगों के साथ कुछ बलाओं के सम्बन्ध में रहने का विचार रखते हैं [पृ० १२८] और उसी को मानते हैं जैसे सतीला, मसानी, और बिराही तो यह सब ग़लत है, और यह भी उनमें प्रसिद्ध था कि सफर नाम का महीना अशुभ है इस महीने में कोई काम नहीं करना चाहिए, तो यह भी गलत है।

इससे मालूम हुआ कि यह बात कहनी कि सफर महीना के तेरह दिन अशुभ हैं इनमें कुछ बलाएं उतरती हैं, और उसी आधार पर उन दिनों का नाम तेरह तेज़ी रखना कि उनकी तेज़ी से कुछ काम बिगड़ जाते हैं, और इसी प्रकार किसी महीने अथवा तारीख या दिन को अशुभ समझना यह सब शिर्क की रीतियाँ हैं।

मिशकात के बाबुल फाल वत्तेयारा में लिखा है कि इमाम इब्ने माजा ने ह० जाबिर के माध्यम से बयान किया है कि —अल्लाह के रसूल स० ने एक कोढ़ी आदमी का हाथ पकड़ कर अपने साथ खाने की पलेट में रख दिया फिर फरमाया—अल्लाह पर विश्वास रख कर और उसी पर भरोसा करके खाओ।"

अर्थात् हमको अल्लाह पर विश्वास है तथा उसी पर भरोसा है जिसको चाहे रोगी बना दे और जिसको चाहे निरोगी। हम किसी रोगी के साथ खाने से कतराते नहीं हैं, और इससे रोग का लग जाना नहीं मानते हैं।

[पृ० १२९]

एक देहाती की उपदेश पूर्ण कहानी :

मिशकात के बाबु बदइल खल्क में लिखा है कि इमाम अबूदाऊद ने ह० जुबेर बिन मुतइम के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) के पास एक देहाती आया और कहने लगा जानें कष्ट में पड़ी हुई हैं, और बाल बच्चे भूखों मर रहे हैं और चौपाए मरे जा रहे हैं, अल्लाह से हमारे लिए पानी मांगिए, हम अल्लाह के यहाँ तुम्हारी सिफारिश (अनुशंसा) चाहते हैं, और तुम्हारे यहाँ अल्लाह की, यह सुनकर आपने फरमाया—सुबहानल्लाह, सुबहानल्लाह, यानी अल्लाह निराला है, और यह बात आप बार-बार कहते रहे, यहाँ तक कि इसका प्रभाव आपके साथियों के चेहरों से प्रकट होने लगा, फिर आपने फरमाया—तुम मूर्ख हो अल्लाह के सामने किसी अल्लाह को सिफारिशी नहीं बनाया जाता, अल्लाह की महिमा इससे बहुत बड़ी है। तू मूर्ख है क्या तुझे पता है कि अल्लाह क्या है? [पृ० १३०] उसका सिंहासन (अर्श) उसके आसमानों पर इस प्रकार है आपने अपनी उंगलियों से बताया जैसे उसके ऊपर कुब्बा हो, और वह अल्लाह के कारण चड़-चड़ बोलता है जिस प्रकार ऊँट का पालान सवार के बोझ से चड़-चड़ बोलता है।"

अर्थात् अरब देश में काल पड़ा था उस समय एक देहाती ने अल्लाह के रसूल के पास उस संकट को बयान किया और अल्लाह से दुआ के लिए निवेदन किया, और उसने यह कहा कि अल्लाह के यहाँ आपकी सिफारिश चाहते हैं और आपके यहाँ अल्लाह की, तो यह बात सुनकर अल्लाह के रसूल बहुत घबरा गए, और उनके मुँह से अल्लाह की बड़ाई निकलने लगी, और उस जगह उपस्थित सभी लोगों के चेहरे अल्लाह की बड़ाई का ख्याल करके बदल गए, फिर आपने उस व्यक्ति को समझाया, कि यदि कोई किसी के पास

किसी को सिफारिशी बनाए तो उसका यह अर्थ है कि मूल कामकाज उसके अधिकार में हो, और सिफारिश करने वाले के आदर में वह कर दे, फिर जब यह कहा कि पैग़म्बर के पास अल्लाह को सिफारिश करने वाला ठहराया, तो गोया अस्ल अधिकारी अल्लाह के रसूल को समझा, और अल्लाह को सिफारिशी तो यह बात बिलकुल गलत है अल्लाह की महिमा बहुत बड़ी है, सभी अम्बिया एवं अवलिया उसके सामने एक ज़र्रह नाचीज़ से भी कम हैं, क्योंकि सारी जमीन एवं असमान को उसका अर्श (सिहासन) कुब्बा के समान घेरे हुए हैं। [पृ० १३१] पर वह उस शाहंशाह की महानता को थाम नहीं सकता, बल्कि उसकी महानता से प्रभावित होकर वह चड़-चड़ बोलता है, फिर किसी मख़लूक़ (प्राणी) में इतनी शक्ति कहाँ कि उसकी महानता का वर्णन कर सके, अथवा उसकी महानता के मैदान में अपना विचार, या कल्पना दौड़ा सके, फिर किसी काम में बाधा देने या उसकी बादशाहत में हस्तक्षेप करने की शक्ति किसमें होगी ?

वह स्वयं सारे संसार का मालिक है बिना किसी लाव लशकर और बिना किसी मंत्री या सलाहकार के एक क्षण में करोड़ों कार्य करता है, वह किसी के सामने सिफारिश करे ? और किसका यह मुँह उसके सामने किसी काम का मालिक अथवा अधिकारी बन बैठे ?

सबुहानल्लाह ! जगत के सबसे महान व्यक्ति, अल्लाह के रसूल मुहम्मद स० की तो उसके दरबार में यह हालत है कि एक गँवार के मुँह से इतनी बात सुनकर घबरा गए और अर्श से फर्श तक अल्लाह की महानता का वर्णन करने लगे, पर उन लोगों को क्या कहा जाय जो उस मालिक से एक भाई बन्दे जैसा संबन्ध या मित्रता और प्रेम का सम्बन्ध समझ कर क्या से क्या बढ़ बढ़ कर बातें करते हैं, कोई

कहता है मैं अपने रब से दो वर्ष का बड़ा हूँ कोई कहता है मैंने अपने रब को एक कौड़ी का मोल लिया है और कोई कहता है कि यदि मेरा रब मेरे पीर के अलावा किसी और रूप में प्रकट हुआ तो उसको कभी न देखूंगा ।

[पृ० १३२]

और कोई हकीकत मुहम्मदी को हकीकत उलूहियत से बढ़कर बताता है ।

अल्लाह हमें इस प्रकार की बातों से पनाह में रखे किसी शायर ने क्या अच्छी कविता कही है--

"अज़ खुदा ख़ाहेम तौफीक़ अदब"
"बेअदब महरूम गश्त अज़फ़ज़्ले रब"

अर्थात् हम अल्लाह से अदब की तौफीक चाहते हैं ।

क्योंकि बेअदब व्यक्ति अल्लाह के फ़ज़्ल (कृपा) से महरूम रहता है ।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि लोगों में जो एक "ख़त्म" मशहूर है जिसमें कि यह पढ़ते हैं--

या अब्दुल क़ादिर जीलानी शैअन लिल्लाह

यानी हे शेख अब्दुल क़ादिर अल्लाह वास्ते तुम हमें कुछ दो ।

यह शब्द नहीं कहना चाहिए

बहर हाल ऐसा शब्द मुँह से न बोले जिससे शिर्क की बू आती हो या बे अदबी प्रकट हो, इसलिए कि उसकी महिमा बहुत बड़ी है

और वह बड़ा बेपरवाह बादशाह है, एक नुकता में पकड़ लेना, और एक नुक़ता में छोड़ देना उसी का कार्य है यह बात सिरे से गलत है कि जाहिर में तो वे अदबी का शब्द बोले और उससे कुछ और ही माना समझे।

इसलिए कि मुअम्मा और पहेली बोलने के और भी स्थान हैं जरूरी नहीं कि अल्लाह के दरबार ही में बोले।

कोई व्यक्ति अपने बादशाह अथवा बाप से ठठ्ठा नहीं करता, और जगत नहीं बोलता।

इस काम के लिए मित्र और पहचानी होते हैं न कि बाप और बादशाह। [पृ० १३३]

अच्छे नाम रखने अनिवार्य हैं :

मिशकात में बाबुल असामी (नाम रखने के बयान) में लिखा है कि इमाम मुस्लिम ने इब्ने उमर के माध्यम से बयान किया है कि—"अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया कि तुम्हारे सब नामों में अच्छा नाम अब्दुल्लाह, और अब्दुर्रहमान है।"

क्योंकि अब्दुल्लाह के माना अल्लाह का बन्दा, और अब्दुरहमान के माना रहमान का बन्दा।

और इसके समान है अब्दुलकुद्दूस, अब्दुलखालिक़, खुदा बख्श, अल्लाह दिया, अल्लाह दाद।

बहर हाल जिस नाम में अल्लाह की ओर सम्बन्ध हो विशेष करके अल्लाह के ऐसे नाम का जिक्र हो जिसको और किसी पर नहीं बोलते।

मिशकात के बाबुल असामी (नाम रखने के बयान) में इमाम अबूदाऊद और इमाम नसाई के माध्यम से लिखा है कि—

सुरैह बिन हानी अपने पिता द्वारा बयान करते हैं कि जब वह अपनी क़ौम के साथ अल्लाह के रसूल (स०) के पास आए तो आपने सुना कि उनकी क़ौम उन्हें "अबुल हकम"[1] कह कर बुलाती है [पृ० १३४] तो आपने उन्हें बुलाया और फरमाया कि वास्तव में झगड़ा चुकाने वाला अल्लाह तआला ही है, और आदेश उसी का है, फिर तुझको क्यों अबुल हकम कहते है ?"

अर्थात् यह बात कि हर मामला चुका दे और हर झगड़ा मिटा दे यह अल्लाह ही की शान है जो कि आखिरत में प्रकट होगी, जब पहले पिछले दीन एव दुनिया के सब झगड़े साफ हो जाएँगे, इस बात की शक्ति किसी मख़लूक को नहीं है।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि जो शब्द अल्लाह ही की शान के योग्य है और वह उसमें पाया जाता हो तो वह किसी और के लिए न कहे, उदाहरण के लिए बादशाहों का बादशाह, सारे जगत का मालिक, खुदावंद जो चाहे कर डाले और मावूद बड़ा दाता वेपरवाह, आदि।

मिशकात के बाबुल असामी (नामों के बयान) में लिखा है कि अल्लाह के नबी मुहम्मद (स०) ने फरमाया कि यूँ न बोला करो

1—"अबुल हकम"

अरबी का शब्द है "अबू" का अर्थ है बाप और "हकम" कहते उसको कि जिसकी बात किसी भी झगड़े में मान ली जाय, और हर झगड़े में जिसकी बात मानी जा सके वह केवल अल्लाह है।

करो कि जो अल्लाह चाहे और जो मुहम्मद चाहे, बल्कि यूं बोलो—जो केवल अल्लाह चाहे [पृ० १३५] अर्थात् जो शान कि अल्लाह की है और उसमें किसी प्राणी का कोई दखल नहीं तो उसमें अल्लाह के साथ किसी प्राणी को न मिलाओ, चाहे कितना ही बड़ा हो अथवा कैसा ही माननीय क्यों न हों ।

जैसे यह न कहे कि अल्लाह एवं रसूल चाहेगा तो फलाना काम हो जायगा, क्योंकि सारे संसार का काम काज अल्लाह ही के चाहने से होता है, रसूल के चाहने से कुछ नहीं होता है ।

या कोई व्यक्ति किसी से कहे कि फलाने के दिल में क्या है ? या फलाने की शादी कब होगी ? या फलाने पेड़ में कितने पत्ते हैं ? या आसमान में कितने तारे हैं ?

तो इसके जवाब में यह न कहे कि अल्लाह एव रसूल ही जाने, क्योंकि गैब की बात अल्लाह ही जानता है, रसूल को क्या खबर ?

पर इसमें कोई हरज नहीं यदि दीन की किसी बात में कहे कि अल्लाह एवं रसूल ही जाने, या फलानी बात में अल्लाह एवं रसूल का यह आदेश है क्योंकि दीन की सब बातें अल्लाह ने अपने रसूल को बता दी हैं, और लोगों को अपने रसूल की आज्ञाकारी का आदश दे दिया है ।

अल्लाह के अतिरिक्त किसी की सौगंध खानी शिर्क है :

मिशकात के बाबुल ऐमान वन्नुजूर (यानी सौगन्ध और प्रण के बयान) में लिखा है कि इमाम तिर्मिज़ी ने अब्दुल्ला बि० उमर के

माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया— [पृ० १३६] जिसने अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की क़सम खाई तो उसने शिर्क किया।"

मिशकात के बाबुल ऐमान वन्नुजूर (यानी कसमें खाने और उपहार करने के बयान) में लिखा है कि इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्ला बि० समुरा के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया "झूठे खुदाओं की क़सम न खाया करो और न बाप दादों की।"

मिशकात ही के ऊपर दिए गए बाब में लिखा है कि इमाम बुखारी एवं मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया अल्लाह तआला तुमको बाप दादों की क़सम खाने से रोकता है, जिसको कसम खानी हो तो अल्लाह ही की क़सम खाए वरना चुप रहे।"

मिशकात ही में लिखा है कि इमाम बुखारी एवं मुस्लिम ने अबूहुरेरा के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया— [पृ० १३७] जिसने कसम खाई और अपनी क़सम में लात और उज्ज़ा (नाम की मूर्तियों) का नाम लिया तो उसे लाइलाह इल्लल्लाह (لا إله إلا الله) कहना चाहिए।

अर्थात् अरब के लोग कुफ्र की हालत में बुतों की क़सम खाते थे, तो जिन मुसलमानों के मुंह से उस आदत के अनुसार क़सम निकल जावे तो फिर लाइलाह इल्लल्लाह कह लेवें।

ऊपर दी गई हदीसों से ज्ञात हुआ कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की क़सम न खावे और यदि मुंह से निकल जावे तो तौबा

कीजिए और मुशरिकों में जिसकी क़सम खाने का चलन हो उसकी क़सम खाने से इमान में बाधा पड़ती है।

अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को उपहार देना :

मिशकात के बाबुन्नुज़ूर (उपहार के बयान) में लिखा है कि इमाम अबू दाऊद ने साबित बिन जल्हाक़ के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल के समय एक आदमी ने बवाना नाम के स्थान पर एक ऊँट जब्ह करने की मन्नत मानी, फिर वह अल्लाह के रसूल के पास आया और आपको उस विषय में जानकारी दी, तो आपने फरमाया—[पृ० १३८] क्या वहाँ जाहिलिय्यत के समय में कोई थान था जिसकी लोग पूजा करते रहे हों, तो लोगों ने कहा नहीं, फिर आपने पूछा कि क्या उनका वहाँ पर कोई त्योहार होता था, लोगों ने कहा नहीं। फिर आपने फरमाया अपनी मन्नत पूरी कर लो' क्योंकि ऐसी मन्नत नहीं पूरी करनी चाहिए जिसमें अल्लाह की नाफरमानी (अवज्ञा) हो।

अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की मन्नत मानना गुनाह है इसलिए ऐसी मन्नत को नहीं पूरा करना चाहिए।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि प्रथम तो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की मन्नत न मानिए और जो मानी हो तो पूरा न कीजिए, क्योंकि यह बात स्वयं पाप है फिर उस पर हठ करना और अधिक पाप।

और यह भी ज्ञात हुआ कि जिस जगह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के नाम पर जानवर चढ़ाते हों या पूजा करते हों, या वहाँ इकट्ठा होकर किसी प्रकार शिर्क करते हों, वहाँ भी अल्लाह के

नाम का जानवर न ले जायँ, और किसी तरह भी उनमें सम्मिलित न हो, न अच्छी नीयत (संकल्प) से और न बुरी नीयत से, इसलिए कि उनके अनुरूप करना स्वयं बुरी बात है।

[पृ० १३९] सजदा केवल अल्लाह का हक़ है और रसूल का सम्मान करना चाहिए :

मिशकात के बाबु इशरतिन्निसा (यानी औरतों के साथ जीवन व्यतीत करने के बयान) में लिखा है कि—इमाम अहमद ने माई आयशा के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल अनसार और मुहाजिरीन के बीच बैठे थे कि एक ऊँट आया, और उसने आपको सजदा किया, फिर आपके साथियों ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आपको तो चौपाए और पेड़ सजदा करते हैं, फिर तो हमें अवश्य आपको सजदा करना चाहिए ? यह सुनकर आपने फरमाया—अपने रब (मालिक) की पूजा करो और अपने भाई का सम्मान करो।"

अर्थात् सारे मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं जो महान हो वह बड़ा भाई है, अतः उसका सम्मान बड़े भाई की तरह करना चाहिए[1], और सबका मालिक तो अल्लाह ही है अतः पूजा उसी की करनी चाहिए।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि अवलिया अम्बिया, इमाम, एवं इमामजादा, पीर, [पृ० १४०] एवं शहीद, अर्थात् जितने भी

1—यहाँ पर कुछ लोगों ने हजरत इस्माईल शहीद पर रिमार्क किया है कहते हैं कि आपने नबी करीम को बड़ा भाई कहा है, किन्तु नबियों एवं रसूलों को उनकी कौम का भाई कहना स्वयं कुरआन में पाया जाता है।

अल्लाह के नेक बन्दे हैं वे सब इन्सान (मनुष्य) और आजिज (विनीत) बन्दे तथा हमारे भाई हैं, परन्तु अल्लाह ने उनको महानता दी है। अतः वे बड़े भाई हैं हमको उनके आज्ञापालन का आदेश दिया है, हम उनसे छोटे हैं, अतः उनका सम्मान मनुष्य की भांति करना चाहिए न कि अल्लाह की भांति।

और यह भी ज्ञात हुआ कि कुछ महान लोगों को कुछ पेड़ या जानवर भी मानते हैं जैसा कि कुछ दरगाहों पर सिंह (शेर) हाजिर होते है, और किसी पर हाथी, और किसी पर भेड़िए पर आदमी को इसे प्रमाण नहीं पकड़ना चाहिए, बल्कि आदमी को किसी का सम्मान उसी प्रकार करना चाहिए जिस प्रकार अल्लाह ने बतलाई हो और शरीअत में जायज़ हो. जैसे कबरों पर मुजाविर बनना शरीअत में नहीं है अतः कभी न बने।

और यदि किसी की समाधि पर कोई शेर रात दिन बैठा रहता हो तो उससे प्रमाण न पकड़े, इसलिए कि आदमी को जानवर की रेस नहीं करनी चाहिए।

मिशकात के बाबु इशरतुन्निसा में लिखा है कि—इमाम अबूदाऊद ने क़ंसबिन साद के माध्यम से नक़ल किया है कि उन्होंने कहा कि मैं हीरा नाम के शहर में गया तो देखा कि वहाँ के लोग अपने राजा के लिए सजदा करते थे, फिर मैंने सोचा कि अल्लाह के रसूल अवश्य इसके योग्य हैं कि लोग उनका सजदा करें, फिर मैं अल्लाह के रसूल (स०) [पृ० १४१] के पास आया और कहा कि मैंने हीरा में देखा है कि लोग अपने राजा को सजदा करते हैं, फिर आप तो इसके और अधिक योग्य हैं कि हम आपका सजदा करें ? इसपर आपने फरमाया भला विचार तो कर यदि तू मेरी समाधि (क़ब्र) से गुज़रेगा तो क्या तू उसको सजदा करेगा ? तो मैंने कहा नहीं। आप ने फरमाया हाँ तुम ऐसा मत करना।

अर्थात् मैं भी एक दिन मर कर मिट्टी में मिलने वाला हूँ[1], फिर कैसे मैं सजदा के योग्य हूँ, सजदा तो उसी पाक जात का हक है कि जो कभी न मरे।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि सजदा न किसी जिन्दा को कीजिए न किसी मुर्दा को, न किसी कब्र को कीजिए न किसी थान को, क्योंकि जो जीवित है वह एक दिन मरने वाला है, और जो मर गया वह कभी जीवित, तथा मनुष्यता की कैद में गिरफ्तार था फिर मर के वह खुदा नहीं बन गया बन्दा का बन्दा ही रहा।

मिशकात के बाबुल असामी (नामों के बयान) में लिखा है कि मुस्लिम [पृ० १४२] ने अबू हुरेरा के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया कि तुम में से कोई (अपने नौकर और लौंडी के लिए) यूं न बोले— मेरा बन्दा, मेरी बन्दी, तुम सभी अल्लाह के बन्दे हो और तुम्हारी सभी औरतें अल्लाह की बन्दी हैं और न ही गुलाम (नौकर) अपने मियां को, मेरा मालिक कहे, क्योंकि तुम सबका मालिक अल्लाह है।

अर्थात् मियां अपने गुलाम और लौंडी को अपना बन्दा एवं बन्दी न कहे, तथा गुलाम अपने मियां को अपना मालिक न कहे क्योंकि मालिक अल्लाह है और बाकी सब उसके बन्दे हैं, एक दूसरे का न कोई बन्दा है न मालिक।

1—यहां मिट्टी में मिलने का अर्थ यह है कि आप मिट्टी के बीच दफन किए जाएंगे, क्योंकि यह बात हदीस से साबित है कि नबियों एवं रसूलों के बदन को मिट्टी नहीं खाएगी।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि जो वास्तव में किसी का गुलाम भी हो तो वे भी आपस में ऐसी बात न करें कि यह उसका बन्दा है और वह उसका मालिक ।

फिर झूठ मूठ का बन्दा बनना और अपने आपको अब्दुन्नबी बन्दा अली, बन्दा होजूर, परिस्तारे खास, अमरद परस्त, आशना परस्त, तथा पीर परस्त कहलाना, और किसी को खुदावंद, खुदाएगान दाता कह देना यह सब सिरे से गलत, और अति बेअदबी है । और जरा सी बात में कहना कि तुम हमारी जान व माल के मालिक हो, हम तुम्हारे बस में हैं जो चाहो करो, बिलकुल झूठ और शिर्क की बात है ।

मिशकात के बाबुल मुफाखरा यानी (आपस में गर्व करने के बयान) में लिखा है कि—[पृ० १४३] कि इमाम बुखारी एवं मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन उमर के माध्यम से बयान किया है कि—अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया मुझको मेरे पद से आगे न बढ़ाओ, जैसा कि नसारा ने ईसा बिन मरयम को उनके पद से आगे बढ़ा दिया, मैं निःसंदेह अल्लाह का बन्दा हूँ, अतः मेरे लिए यही कहो कि—अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल है ।''

अर्थात् जो गुण एवं विशेषताएँ अल्लाह ने हमें प्रदान की हैं उन्हे बयान करो, वह सब रसूल कह देने में आ जाती हैं, क्योंकि मनुष्य के हक में रसूल होने से बड़ा कोई पद नहीं है, सभी पद इससे नीचे हैं, पर मनुष्य रसूल होकर भी मनुष्य ही रहता है, और दास ही होने में उसका अभिमान है, उसमें खुदाई की कोई शान नहीं आ जाती है, और न तो खुदा की जात में मिल जाता है, तो ऐसे किसी बन्दे के हक में न कही जावे, इसलिए कि नसारा हजरत ईसा के हक में ऐसी ही बातें लिख कर काफिर हो गए और अल्लाह के दरबार से

धिक्कार दिए गए, इसी कारण अल्लाह के रसूल ने अपनी उम्मत को फरमाया कि तुम नसारा की चाल न चलो और अपने रसूल की प्रशंसा (तारीफ़) में सीमा मत पार करो ताकि नसारा के समान मरदूद न हो जाओ।

किन्तु अफसोस है कि उनकी उम्मत के आदरहीन लोगों ने उनका आदेश न माना, और अन्ततः नसारा जैसी बातें करने लगे क्योंकि नसारा [पृ० १४४] भी हज़रत ईसा को यही कहते थे कि अल्लाह उनके भेष में प्रकट हुआ है, और एक तरह से इन्सान है और एक तरह से खुदा, फिर बिल्कुल यही बात कुछ लोगों ने हज़रत (स०) की शान में कह डाली,

बल्कि कुछ झूठे दग़ाबाजों ने इस बात को अल्लाह के रसूल से सम्बन्धित किया है कि स्वयं आपने फरमाया है कि मैं बिना मीम के अहमद हूँ। انا احمد بلا میم और इस प्रकार का अरबी में एक बड़ा सा लेख बना कर उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की खुराफातें इकट्ठा करके उसका नाम खुतबतुल इफतेखार रखा है, और उसको हज़रत मुर्तजा अली की ओर सम्बन्धित किया है, سبحانك هذا بهتان عظيم अल्लाह तआला सारे झूठों का मुँह काला करे।

और जिस प्रकार नसारा कहते हैं कि इस संसार और उस संसार के सभी का ज्ञान हज़रत ईसा के अधिकार में है, और जो कोई उनको माने, और उनसे विनय करे उसको पूजा करने की कोई आवश्यकता नहीं है तथा पाप उसपर कोई प्रभाव नहीं डालता और [पृ० १४५] हलाल एवं हराम में भेद करना उसके लिए कुछ आवश्यक नहीं है वह खुदा का सांड बन जाता है जो चाहे सो करे, हज़रत ईसा, आखिरत में उसको शफाअत (अनुशंसा) से बचा लेंगे।

तो इसी प्रकार का विश्वास जाहिल मुसलमानों को, नबी करीम (स०) के बारे में है बल्कि उनसे उतर कर इमामों, अवलिया, बल्कि हर मुल्ला और मशाइख के बारे में यही अकीदा रखते हैं। अल्लाह हिदायत करे। सम्मान के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्दों में सावधान रहना चाहिए।

मिशकात के बाबुल मुफाख़रत (यानी आपस में अभिमान करने के बयान) में लिखा है कि अबूदाऊद ने बयान किया है कि— हज़रत मुतर्रिफ बिन अब्दुल्लाह (सहाबी) कहते हैं कि बनी आमिर के एक समूह के साथ अल्लाह के रसूल के पास गए, फिर हमने कहा कि तुम हमारे सरदार हो, तो आपने फरमाया सरदार तो अल्लाह है, फिर हमने कहा, महानता में हम में सबसे महान हो, और बड़े दानशील हो तो आने फरमाया—हाँ इस तरह की बात कहो, या इससे भी कुछ कम कहो, कहीं ऐसा न हो कि शैतान तुमको आदर हीन कर दे।" [पृ० १४६]

अर्थात् किसी महान व्यक्ति की प्रशंसा में जबान संभाल कर बोलो, और मनुष्य की प्रशंसा, जैसी बात हो वही कहो बल्कि उसमें भी संक्षिप्त करो, और इस मैदान में मुँह जोर घोड़े के समान मत दौड़ो ताकि अल्लाह की शान में बेअदबी न हो जाय।

ज्ञात होना चाहिए कि सरदार शब्द के दो अर्थ हैं एक तो यह कि वह स्वयं मालिक एवं अधिकारी हो कि कोई आदेश उस पर न चलता हो, स्वयं जो चाहे करे जैसे जाहिर में बादशाह।

तो इस प्रकार की महिमा अल्लाह तआला ही की है, इस माना

में उसके अतिरिक्त कोई सरदार नहीं है।

उसका दूसरा अर्थ यह है कि, वह प्रजा ही में से हो, पर अन्य प्रजा से वह कुछ अधिक विशेषता रखता हो, इसप्रकार कि असल हाकिम का आदेश प्रथम उसी के पास आवे और उसकी जबानी अन्य लोगों तक पहुँचे, जैसे हर काम का चौधरी तथा गाँव का जमीनदार।

तो इस माना में प्रत्येक नबी अपनी उम्मत का सरदार है, तथा हर इमाम अपने समय के लोगों का, और हर मुजतहिद अपने मानने वालों का और हर महापुरुष अपने मुरीदों का, और हर ज्ञानी अपने चेलों का, इसलिए कि ये बड़े लोग पहले अल्लाह के आदेश पर स्वयं चलते हैं, और पीछे अपने से छोटों को सिखाते हैं।

इसी प्रकार हमारे नबी सम्पूर्ण जगत के सरदार हैं, क्योंकि अल्लाह के पास उनका पद सबसे बड़ा है और अल्लाह के आदेशों पर सबसे अधिक चलने वाले हैं।

और अल्लाह की राह सीखने में सभी उनके मुहताज हैं [पृ० १४७] इस माना में उनको सारे जगत का सरदार कहने में कोई हरज नहीं है बल्कि अवश्य यूं ही जानना चाहिए, किन्तु पहले माना में उनको एक चींटी का भी सरदार न जानिए, क्योंकि वह अपनी ओर से एक चींटी में भी अधिकार नहीं जमा सकते।

चित्रकारी से सम्बन्धित नबी करीम (ﷺ) के आदेश :

मिशकात के बाबुत्तसावीर (यानी चित्रकारी के बयान) में लिखा है कि इमाम बुखारी ने बयान किया है कि—हजरत आइशा

(र०) ने एक क़ालीन खरीदा जिसमें कुछ चित्र बने हुए थे, और जब अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने उसे देखा तो दरवाज़ा पर खड़े हो गए और अन्दर नहीं गए, हज़रत आइशा (र०) कहती हैं कि मैंने आपके चेहरे से अप्रसन्नता को भाँप लिया, फिर मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! मैं अल्लाह और उसके रसूल के सम्मुख तौबा करती हूँ, कौन सा पाप मैंने किया है ? यह सुनकर आपने फरमाया, यह कैसा कालीन है ? मैंने कहा [पृ० १४८] आपके लिए मोल लिया है ताकि आप इसपर बैठें और इसपर टेक लगाएँ। आपने फरमाया निःसंदेह इन चित्रों के बनाने वाले क़यामत के दिन अज़ाब में फँसेंगे, और उनसे कहा जायेगा कि जिसको तुमने बनाया है उसमें जान डालो और आपने फरमाया—जिस घर में चित्र हो उसमें फरिश्ते नहीं आते हैं।''

अर्थात् अधिकतर मुशरिक मूर्तियों को पूजते हैं इसीलिए फरिश्तों को चित्रों से घिन आती है, और रसूलों को भी उनसे घृणा होती है, और उनके बनाने वालों पर अज़ाब होगा इसलिए कि वे मूर्ति पूजा का सामान इकट्ठा करते हैं।

इस हदीस से ज्ञात हुआ कि कुछ जाहिल लोग, जो पैग़म्बरों, इमामों, वलियों, अथवा अपने पीरों के चित्रों का सम्मान करते हैं और बरकत के लिए अपने पास रखते हैं वे निरे पथभ्रष्ट (गुमराह) और शिर्क में डूबे हुए हैं, तथा पैग़म्बर एवं फरिश्ते उनसे अप्रसन्न हैं अतः सारे चित्र को अपवित्र समझकर घर से दूर कीजिए ताकि पैगम्बर भी प्रसन्न हों और फरिश्ते भी उस घर में आवें [पृ० १४९]

और उनके चरणों से घर में बरकत फैल जावे।

मिशकात के बाबुत्तसावीर (चित्रकारी के बयान) में लिखा है कि इमाम बैहक़ी ने ह० अब्दुल्ला बिन अब्बास के माध्यम से बयान किया है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फरमाया कि क़यामत के दिन सबसे बड़ा अज़ाब (दण्ड) उस व्यक्ति को होगा जिसने किसी नबी को मारा, अथवा उसको किसी नबी ने मारा, या उसने अपने माता पिता में से किसी को मार डाला हो, और चित्र बनाने वाले, और ऐसा ज्ञानी जिसके ज्ञान से लाभ न उठाया जाय।"

अर्थात् चित्र बनाने वाला भी उन्हीं बड़े-बड़े पापियों में दाखिल है।

यहाँ चित्र बनाने वालों के पाप पर ध्यान देना चाहिए कि यज़ीद और शम्मर ने तो पैगम्बर को नहीं मारा था बल्कि पैग़म्बर के नवासे और अपने समय के इमाम थे जो कि पैग़म्बर का नायब किन्तु चित्र बनाने वाले को स्वय पैग़म्बर को कत्ल करने वाले जैसा पाप है फिर तो वह यज़ीद और शम्मर से भी अधिक बुरा है।

मिशकात के बाबुत्तसावीर ही में लिखा है कि इमाम बुखारी एवं मुस्लिम ने अबू हुरेरा के माध्यम से बयान किया है कि [पृ० १५०] अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फरमाया उस व्यक्ति से अधिक आदर हीन और कौन होगा जो इस बात की इच्छा करे कि मेरी तरह वह भी पैदा कर ले फिर भला ऐसे लोग एक ज़र्रह ही पैदा करके दिखाएँ या एक दाना या एक जौ ही पैदा कर लें।

अर्थात् चित्र बनाने वाला उसकी आड़ में खुदाई का दावा करता है, इसलिए कि जो चीजें अल्लाह ने बनाई है उनके समान बनाने की इच्छा करता है, अतः वह बड़ा आदर हीन है, और उसका यह

दावा खुला झूठ है क्योंकि एक दाना के बनाने की भी शक्ति नहीं रखता केवल नक़ल करता है।

मिशकात के बाबुल मुफाखरा (यानी आपस में अभिमान करने के बयान) में लिखा है कि—

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फरमाया मैं नहीं चाहता कि तुम लोग मुझको मेरे उस पद से आगे बढ़ा दो कि जिस पद पर अल्लाह ने मुझे नियुक्त किया है मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद, अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ।

अर्थात् जैसे अन्य सरदार अपनी प्रशंसा में हद से बढ़ी हुई बातें सुनकर प्रसन्न होते हैं पैगम्बर उन लोगों में से नहीं थे।

क्योंकि उन सरदारों को हद से अधिक बातें करने वालों के दीन सेकोई काम नहीं होता है, चाहे ठीक रहें चाहे बिगड़ जावे।

पर अल्लाह के रसूल तो अपनी उम्मत के महान प्रशिक्षक थे तथा उन पर बड़े कृपालु तथा दयालु थे, और रात दिन उनको अपनी उम्मत के दीन ही ठीक करने की चिन्ता रहती थी, तो जब आपको यह मालूम हुआ कि मेरी उम्मत के लोग मुझसे बड़ा प्रेम रखते हैं तथा वे आपके बहुत आभारी हैं।

और दुनिया का यही नियम है कि जब किसी को किसी से प्रेम होता है तो वह अपने प्रियतम को प्रसन्न करने के लिए उसकी प्रशंसा में सीमा पार कर जाते हैं।

किन्तु यदि कोई पैगम्बरों की प्रशंसा में सीमा पार करेगा तो अल्लाह ही का आदर हीन बनेगा और इससे उसके दीन सिरे से बरबाद हो जाएगा और पैगम्बर का मूल शत्रु बन जाएगा।

इसीलिए आपने फरमाया कि मुझको हद से आगे प्रशंसा भली नहीं लगती, मेरा नाम मुहम्मद, न अल्लाह, न खालिक़, न राजिक, और सब आदमियों के समान अपने बाप से पैदा हुआ हूँ, तथा बन्दा (दास) होने ही में मेरा गर्व है, पर अन्य लोगों से अधिक विशेषता मेरे अन्दर यह है कि अल्लाह के आदेशों से मैं जानकार हूँ, जबकि अन्य लोग उनसे जानकार नहीं हैं इसलिए उनको अल्लाह का दीन मुझसे ही सीखना चाहिए।

[पृ० १५२] हे हमारे मालिक अपने ऐसे दयाशील एवं कृपाशील रसूल पर हज़ारों प्रणाम एवं कल्याण (यानी दरूद व सलाम) भेज, और उन्होंने हम जैसे जाहिलों को दीन सिखाने में जो महान प्रयत्न की है तू ही उस प्रयत्न की मर्यादा करे।

हम तो एक विनीत दास हैं और बिल्कुल शक्तिहीन तथा जिस प्रकार तूने अपनी कृपा से हमको शिर्क एवं तौहीद के अर्थ अच्छी तरह सिखाए और लाइलाहा इल्लल्लाह (لا إله إلا الله) का भी अर्थ बताया, तथा मुशरिकों से निकाल कर तौहीद को मानने वाला पवित्र मुसलमान बनाया है, उसी प्रकार अपनी कृपा से बिदअत और सुन्नत के अर्थ को अच्छी तरह समझा और मुहम्मददुर्रसूल्लाह का अर्थ भी अच्छी तरह सिखा दे, और बिदअती और मज़हब को बुरे ढंग से मानने वालों में से निकाल कर, रसूल के आदर्शों पर चलने वाला पवित्र, एवं सुन्नत का अनुयायी बना। आमीन या रब्बल आलमीन।

(हे सम्पूर्ण जगत के मालिक हमारी दुआ क़बूल कर)

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين.

يحتوى هذا الكتاب :

× على بيان التوحيد والشرك .

× الشرك في علم الله سبحانه وتعالى وأنواعه .

× الشرك في حقوق الله تعالى وأنواعه .

× الشرك في العبادات وأنواعه .

× الشرك في العادات وقبحه .

تقوية الإيمان

باللغة الهندية

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات في منطقة البطحاء

تحت إشـــراف
وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد

ص.ب: ٢٠٨٢٤ الرياض ١١٤٦٥
هاتف: ٤٠٣٠٢٥١
٤٠٣٠١٤٢
٤٠٣٤٥١٧ ـ ١ ـ ٠٠٩٦٦
٤٠٣١٥٨٧
فاكس: ٤٠٥٩٣٨٧

هاتف وفاكس صالة المحاضرات بالبطحاء
٠٠٩٦٦ ـ ١ ـ ٤٠٨٣٤٠٥

حقوق الطبع محفوظة للمكتب

لا يسمح بطبع أي جزء من هذا الكتاب إلا بعد موافقة خطية مسبقة من المكتب

تقوية الإيمان

باللغة الهندية

تاليف

العلامة الشاه محمد اسماعيل الدهلوى

مترجم
عبد القيوم محمد شفيع

الناشر
ادارة البحوث العلمية ، الجامعة السلفية
بنارس ، الهند

تقوية الإيمان

باللغة الهندية

تأليف

العلامة الشاه محمد اسماعيل الدهلوي

ترجمة

عبد القيوم محمد شفيع

١٤٢٠/٥ هـ

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد . قسم الجاليات . البطحاء

رمك: ٧-٥٧-٧٩٨-٩٦٠

أخي المسلم

لقد كان لمساهمات المحسنين دور كبير في إسلام الآلاف من الأشخاص منذ إنشاء المكتب عام ١٤٠٩هـ .

كما تم توزيع الملايين من الكتب والمطويات واللوحات الدعوية والأشرطة .

فساهم معنا في استمرار هذا الخير العظيم على حساب التبرعات العامة رقم :

٤/٦٣٩٠

فرع شركة الراجحي بشارع الخزان .

وحساب الكتب رقم :

٥/٦٩٧٥

فرع شركة الراجحي بشارع الظهران .